।। अगाध बोध ग्रंथ ।।

मारवाडी + हिन्दी

(१-१ साखी)

महत्वपूर्ण सुचना-रामद्वारा जलगाँव इनके ऐसे निदर्शन मे आया है की,कुछ रामस्नेही सेठ साहब राधाकिसनजी महाराज और जे.टी.चांड्क इन्होंने अर्थ की हुई वाणीजी रामद्वारा जलगाँव से लेके जाते और अपने वाणीजी का गुरु महाराज बताते वैसा पूरा आधार न लेते अपने मतसे,समजसे,अर्थ मे आपस मे बदल कर लेते तो ऐसा न करते वाणीजी ले गए हुए कोई भी संत ने आपस मे अर्थ में बदल नही करना है । कुछ भी बदल करना चाहते हो तो रामद्वारा जलगाँव से संपर्क करना बाद में बदल करना है ।

✻ बाणीजी हमसे जैसे चाहिए वैसी पुरी चेक नही हुअी,उसे बहुत समय लगता है। हम पुरा चेक करके फिरसे रीलोड करेंगे। इसे सालभर लगेगा। आपके समझनेके कामपुरता होवे इसलिए हमने बाणीजी पढनेके लिए लोड कर दी ।

 || राम नाम लो, भाग जगाओ || राम

|| अथ अगाध बोध ग्रंथ लिखंते ||

|| चोपाई ||

सतस्वरूप निज नाव || केवल पद गुरू दयाल ||
सतगुरू प्रणामं परम गते || बेरागं प्रम भागं ||
संतोषं परम धनं || कुल गिनान तजे निरंतर ||
सो जोगी नमो नमस्ते || सत स्वरूप: केवळ पद ||
अखंडाय नमस्ते नमस्कारं क्षगत: ||

सत्स्वरूप,निजनाम,कैवल्यपद याने क्या तो गुरूदयाल ही याने तनधारी सतगुरूही ऐसे सतगुरूको प्रणाम करनेसे परमगती मिलती । जिस जोगीने होनकाल कुलका याने माया माता और ब्रम्ह पिता का ज्ञान सदाके लिए त्याग दिया है और जिस जोगीमे परमभाग्य प्रगट करनेवाला सतस्वरूप वैराग्य प्रगट हुवा है और संतोष यह परमधन प्रगट हुवा है ऐसे जोगी को नमस्कार है । सतस्वरूप कैवलपद ऐसे जोगीको अखंडित याने सदाके लिए नमस्कार है । कभी भी न मिटनेवाला नमस्कार है । ||१||

चोपाई ||

ग्यानी सरब भरम मे भूला || से मुज नाय पिछाणे ||
उलटी करे निंद्या जग माही || निरणो छाण न आणे ||१||

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है की,इसीप्रकार मुझमे सतस्वरुप ओतप्रोत प्रगट हुवा है तथा मुझमे माया और ब्रम्ह का अंश नेकभर भी नही रहा है । ऐसे अस्सल जोगी की याने सतस्वरुप की सत्ता मुझमे आनेपर भी माया के और ब्रम्ह के ज्ञानी माया के भ्रम भूल जाने कारण मुझमे सतस्वरुप ओतप्रोत प्रगटा है इस भाव से नही पहचानते । माया के ज्ञानी सतस्वरुप यह माया और ब्रम्ह का आधार है यह जानते और वही सतस्वरुप मुझमे ओतप्रोत आया है इसका ज्ञान समजसे छानकर निर्णय नही करते । इसकारण मेरी मतलब मुझमे प्रगट हुये वे अस्सल सतस्वरुप की स्तुती तो नही करते उलटी मुझे जीव और माया समजकर मेरे मे प्रगट हुयेवे सतस्वरुप की निंद्या करते |||१||

बेद भेद लग हे बुध सबमे || पार ब्रम्ह लग सोई ||
सत स्वरूप कुं कोई न जाणे || ग्यानी ध्यानी लोई ||२||

इन सभी ज्ञानी,ध्यानीयोकी बुध्दी वेद याने ब्रम्हा,भेद याने शंकर तथा जादा मे जादा होनकाल पारब्रम्ह तक ही है । इसलिये होनकाल पारब्रम्ह के परे का सतस्वरुप क्या है तथा उसे कैसे पहचानना यह ज्ञानी जानते नही |||२||

ब्रम्ह ब्रम्ह लग सब ने गायो || साधाँ सिधाँ से कोई ||
सत स्वरूप आनंद पद कहीये || सो इण आगे होई ||३||

सभी साधू (सनकादिक,नारद,सुकदेव,दत्तात्रय) तथा सिध्द (कपील,गोरक्षनाथ, मच्छिंद्रनाथ)इन सब ने होनकाल पारब्रम्ह तक का गायन किया है इसकारण इनको

होनकाल पारब्रम्ह तक के पदो की ही प्राप्ती हुई । होनकाल पारब्रम्ह के आगे के सतस्वरुप आनंदपद की प्राप्ती नही हुई । इसकारण होनकाल पारब्रम्ह के आगे का सतस्वरुप पद ये साधू,सिध्द जानते नही ।।।३।।

नही नही दोस ग्यान कूं भाई ।। कुद्रत कळा न जाणे ।।
करणी सकळ जक्त की बंधण ।। ता कुं ताण बखाणे ।।४।।

ये ज्ञानी करणी याने त्रिगुणी मायातक का ही ज्ञान जानते है । यह माया सभी जगत के जीवो को कर्म कराके होनकालमे बाँधके रखती है । ये ज्ञानी ऐसे मायाके करणीवोको जो होनकालमे बाँधकर रखती है,उसकी स्वयम् भक्ति करते है और बढा चढाकर जोर देकर जगत मे उस भक्तिका बखान करते है । ये माया और पारब्रम्हके परे की महासुख की कुद्रतकला जानतेही नही इसलिये कुद्रतकलाकी भक्ति करते नही तथा उसका ज्ञान जगतमे बखान करते नही । ।।४।।

ब्रम्हा बिसन महेसर सक्ती ।। ज्याँ अे बंधन दीया ।।
सत बेराग बिना नही तूटे ।। ब्हो बिध गाढा कीया ।।५।।

फिर भी यह ज्ञानी निर्दोष है । यह बंधन ब्रम्हा,विष्णु,महादेव और शक्ती इन देवतावो ने जगतमे बाँधे है । जीव होनकालमे ही रहे,होनकालसे छुटे नही इसलिये ब्रम्हा,विष्णु,महादेव और शक्ती इन चारोने यह सब बंधन जगतमे पैदा किये । त्रिगुणीमायाके सुख के चाहनामे जगत के जीव तथा ज्ञानी,ध्यानी इन बंधनो मे अटक गये । ऐसे खतरनाक ज्ञानी,ध्यानी तथा जगतके जीव घटमे सतवैराग्य प्रगट नही करते तब तक टुटते नही । ज्ञानी,ध्यानी तथा जगत के जीवो ने ब्रम्हा,विष्णु,महादेव और शक्ती की कितनी भी भक्ती की तो भी यह बंधन टुटते नही बल्कि और गाढे होते है । यह बंधन सतवैराग्य प्रगट किया तो ही टुटते ।।।५।।

नही नही दोस जहान कूं भाई ।। अे ग्यानी सबे बिचारा ।।
तीन ताप मे सब ही बंधिया ।। कोई नही छूट न हारा ।।६।।

जगत के जीव तथा ज्ञानी ध्यानी यह सभी तीन ताप मे अटके है । यह मन,तन तथा आ-आके गिरनेवाले ताप मे फँसे है । इन तापो से निकलने के लिये नई-नई माया की करणीयाँ सदा ही धारन करनी पड्ती । इसकारण ब्रम्हा,विष्णु,महादेव और शक्ती ने बनाये हुये माया के करणीयोके बंधनसे जगतके जीव और ज्ञानी,ध्यानी मुक्त नही होते इसकारण यह ज्ञानी,ध्यानी तथा संसार के जीव दोषी है ऐसा नही कहते आता ।।।६।।

क्यूं कर लखे अगम गत भाई ।। कहीयां किस बिध माने ।।
काना सुणी न आंख्याँ देखी ।। ना सत बेद बखाणे ।।७।।

अगम देश मे अनंत सुख है । उस देश मे मन,तन तथा आ-आके गिरनेवाले आधी,व्याधी, उपाधी ऐसे तीन ताप के दु:ख माँगने पर भी नही है । यह बतानेपर भी हंस

मानते नही । ऐसा सुख का देश है यह आज दिनतक कानोसे सुना नही तथा आँखोसे देखा नही और जो ज्ञान सदा सुनते और पढते ऐसा वेद,शास्त्र,पुराण यह भी उस सतदेश का वर्णन भी करते नही । इसकारण मैने बताया तो भी जगत और ज्ञानी,ध्यानी को यह अगम गती समजती नही ।।।७।।

नही नही दोस किसी कूं भाई ।। ओ इच्रज माडाँ होई ।।
सत स्वरूप आनंद पद कहिये ।। आगत लखे न कोई ।।८।।

सतस्वरुप आनंदपद याने महासुखो का आश्चर्य का पद याने जो सुख नकल रुप मे भी जगतमे मिलते नही ऐसा पद प्रगट हुवावा मांडा ही संत रहता याने मुश्किल से एखाद ही संत रहता । इसलिये जगतके ज्ञानी,ध्यानी तथा लोग सतस्वरुप आनंदपदकी गती जानते नही । यह सतस्वरुप आनंदपदका ज्ञान जगह जगह न होनेके कारण सभी जगतके लोग,ज्ञानी,ध्यानी इस आनंदपदके गतीको नही समज सकते इसलिये इनको किसीको भी दोष नही है ।।।८।।

केवळ बीज सत ओ मारग ।। स्हेज सता घट जागे ।।
उलटर हंस चढे गढ ऊपर ।। ध्यान समाधी लागे ।।९।।

उलटा यह केवल बीज याने सत पाने का मार्ग सहज है । सतस्वरुप आनंदपद की गती जाननेवाले सतगुरु के अनुसार विधी करनेपर हंस के घट मे आनंदपद का केवल बीज सहज मे प्रगट हो जाती । उस सत्ता के पराक्रम से हंस संखनाल से उतरकर बकंनाल से उलटता । बकंनाल से उलटकर दसवेद्वार के गढ पर चढ जाता । वहाँ उसे सहज ध्यान समाधी सदा के लिये अखंडित लग जाती ।।।९।।

आ गत सुणे न जाणे जोगी ।। ज्यां गढ पवन चडाया ।।
सुर्गुण निर्गुण कहो क्या जाणे ।। राज जोग की भाया ।।१०।।

जिस योगीने पवन भृगुटीमे चढाया है एवम् भृगुटीके गढपर निवास किया है ऐसा योगी राजयोगीकी याने सतशब्दकी गती जानता नही । राजयोगी सतशब्दकी ध्वनी सुनता वैसे ध्वनी पवनयोगीको सुनाई नही देती इसलिये वह पवनयोगी राजयोगीको जानता नही । इतना ही नही ऐसे राजयोगीको सरगुण याने माया तथा निरगुण याने होनकाल पारब्रम्ह दोनो भी जानते नही तो सर्गुण भक्तीवाले और निर्गुण भक्तीवाले इस राजयोगकी बात क्या जानेगे ? ।।१०।।

ग्यानी अरथ मांय सो जोवे ।। ओ अरथाँ सूं न्यारा ।।
क्यूं कर मिले पिंडत कुं साहेब ।। सत स्वरूप बिचारा ।।११।।

यह ज्ञानी पंडित सतस्वरुपको वेदके करणीयो मे ढूँढते । वेद की करणीयाँ यह माया है । सतस्वरुप अमर है इसलिये मायासे न्यारा है । पंडित ज्ञानी मायाकी करणीयाँ करके सतस्वरुप खोजने की कोशिश करते । सतस्वरुप माया से न्यारा होने के कारण पंडित

ज्ञानीयो को माया के करणीयो से वह प्राप्त होता नही ।।।११।।

अेतो सकळ भ्रम कर जाणे ।। निज रूप के तांई ।।
मुख सुं कहे परम पद सत्त हे ।। पण पाया समझे नाही ।।१२।।

सतस्वरुप याने सतगुरु, सतगुरु याने सतस्वरुप वेद व्याकरण शास्त्र ज्ञानसे बताते कि जीव का उध्दार करने का काम गंगा करती । यह गंगा नदी के रुप मे हिमाचल पर्वत से धरती पे बहती । इसलिये जगत के लोग जिवीत तंदुरुस्त अवस्था मे गंगाधाम जाकर बहते गंगा मे का जल प्राशन करते । यह उध्दार का गुण ध्यान मे रखकर कुछ भक्त लोग यह गंगा जल झारी मे भरके अपने घर लाते और घर का कोई मनुष्य का अंतीम समय आता तब उसके मुख मे वह गंगा जल डालकर उसका उध्दार करते । जिसप्रकार बहते गंगा नदी का जल तथा झारी मे भरके लाया हुवा गंगा जल ये दोनो भी गंगा है । इसकारण जैसे गंगा नदी से उध्दार होता वैसेही गंगा झारी से ही उसीप्रकार का जरासा भी फरक न होते उध्दार होता इसीप्रकार जैसे गंगा नदी है वैसे खंड–ब्रम्हंड का सतस्वरुप है और गंगा झारी है वह पिंड मे प्रगट हुवावा सतस्वरुप है । इसलिये मोक्ष देने मे खंड–ब्रम्हंड मे प्रगट हुवावा सतस्वरुप और पिंड्मे प्रगट हुवावा सतस्वरुप एक सत्ताके है । इसलिये सतस्वरुप यह सतगुरु है और सतगुरु यह सतस्वरुप है । यह ज्ञानी,ध्यानी परमपद सत्त है,मायाका पद झूठा है ऐसा मुखसे कहते परंतु जब सतगुरु के रुप मे सतस्वरुप का निजरुप मिलता तब उस निजरुप को सतस्वरुप समजते नही । ऐसे सतगुरु में ही सतस्वरुप को निजरुप ओतप्रोत प्रगट हुवा है । ऐसा भाँती भाँती से ज्ञानी,ध्यानीयो को वे सतगुरु समजाते फिर भी ज्ञानी, ध्यानी समजते नही उलटा ऐसे सत्ताधारी सतगुरु को भ्रम मे है ऐसी समजकर लेते ।।।१२।।

इन की मती भाग ही अेसो ।। क्या अे करे बिचारा ।।
द्रसण भेष मान नही सक्के ।। ओ केवळ भेव हमारा ।।१३।।

यह ज्ञानी,ध्यानी,दर्शन तथा भेष हमारे केवल के भेद को मान नही सकते । इन बापडे के भाग ही हलके है इसकारण इनकी मती अनंत सुखो के देश मे ले जानेवाले केवल के भेद पे नही पहुँचती ।।।१३।।

अे तो सकळ फास मे बंधिया ।। ग्यानी पिंडत सारा ।।
अेक ब्रम्ह ज्यां तत्त पिछाण्यो ।। तां कुंई वार न पारा ।।१४।।

ज्ञानी,ध्यानी,भेषधारी तथा पंडित यह सारे त्रिगुणी माया याने ब्रम्हा,विष्णु,महादेव,शक्ती इनके फासमे बांधे गये है । इनके फाससे ब्रम्हज्ञानी जिसने पारब्रम्ह तत्त को जाना है वह मुक्त है । ऐसे ब्रम्हज्ञानी को भी मेरे मे प्रगट हुवावा सतस्वरुप आनंदपद का वारपार आता नही । तो ये मायावी ज्ञानी,ध्यानी पंडितोको मेरे मे प्रगट हुयेवे सतस्वरुप का क्या वारपार आयेगा? ।।१४।।

अे तो सकळ सिष्ट का ग्यानी ।। हुण काळ लग जाणे ।।
हुणी सोई होवसी आगे ।। ओ ब्रम्ह ग्यान बखाणे ।।१५।।

यह सृष्टी के ब्रम्हज्ञानी होनकाल पारब्रम्ह तक जानते है । यह ब्रम्हज्ञानी मै ब्रम्ह हूँ और जगत के सभी जीव ब्रम्ह ही है तथा होनकाल पारब्रम्ह यह भी ब्रम्ह है ऐसा जानते है । मै माया नही हूँ इसलिये मै मरता नही और जगत भी माया नही इसलिये मरती नही । मै ब्रम्ह हूँ इसलिये मुझमे घट–बढ होती नही और जगत के जीव भी ब्रम्ह है इसलिये जगत के जीवो मे भी घट–बढ होती नही । माया मे घट–बढ पहले भी हुई,आज भी हो रही है और आगे भी होते रहेगी ऐसा समजते । मै ब्रम्ह हूँ इसलिये इस माया के घट–बढ से याने जो होना है वह होगा इससे मेरा कोई संबंध नही ऐसा ब्रम्हज्ञानीयो को ब्रम्हज्ञान प्रगट हुवा रहता वह ब्रम्हज्ञान जगत को बखाण करके बताते ।।।१५।।

जेसा सुणो सानिया जग मे ।। अेसा सब तत ग्यानी ।।
करणी करे रात दिन काटी ।। से क्रसा सम जाणी ।।१६।।

जगत मे जैसे पगले एखादे चीज के लिये खपते रहते ऐसेही जगत के ज्ञानी एखादे माया के तत्व को धारन करते और उस तत्व के पिछे पुरे आयुष्य भर पगले होकर खपते रहते । यह उस तत्वके आधीन होकर खप जाते परंतु इन्हे आनंदपद नही मिलता । जैसे किसान खेती रात–दिन मेहनत करके करता और पेट पुरता अनाज घर लाता ऐसेही वेदो की क्रिया–कर्म करनेवाले कर्मकांडी रात–दिन करणीयो के पिछे कष्ट करते और थोडासा माया का सुख प्राप्त करते फिर काल के मुख मे पडते । इतना कष्ट करने के बाद भी कर्म–कांडीयो को आनंदपद का महासुख मिलता नही और काल के मुख से मुक्त होते नही ।।।१६।।

कथा ब्यास ग्यानी जे जग मे ।। बानी अे बेद सुणावे ।।
अे चारण सब भाट कहीजे ।। आनंद पद नही पावे ।।१७।।

चारण भाट राजा की महीमा करता । राजा की स्तुती करनेपर राजा चारणभाट को एखादा इनाम देता,राजगादी नही देता । इसीप्रकार वेद तथा बाणी सुनानेवाले कथाकार,व्यास तथा ज्ञानी सतस्वरुप आनंदपदकी महीमा करते । इनके आनंदपदके महीमासे सतस्वरुप इन्हे आनंदपद कभी नही देता । एखाद माया का पद देता ।।।१७।।

क्रसो सुणो सानियो चारण ।। उदम करे सब लोई ।।
भाग पुरस इण सब सें न्यारो ।। राज करे कऊँ तोई ।।१८।।

जगत मे किसान,पगले तथा चारणभाट कष्ट से उद्यम करते परंतु इनको जगत का राज्य नही मिलता । इसीजगत मे एखादा भाग्यवान पुरुष रहता वह थोडा भी कष्ट नही करता फिर भी उसे जगत का राज मिलता । इसीप्रकार ब्रम्हज्ञानी,तत्वज्ञानी,कर्मकांडी,व्यास, पंडित,भेषधारी, ध्यानी यह सभी माया–ब्रम्ह के अनेक उद्यम करते परंतु इनको महासुख

का आनंदपद नही मिलता । ऐसेही इसी जगत मे एखादा भाग्यशाली हंस रहता वह माया–ब्रम्ह के कोई उद्यम नही करता और बिना उद्यम किये इस माया–ब्रम्ह का राजा जो आनंद ब्रम्ह है उसे घट मे सहज प्रगट करा लेता ।।।१८।।

यूं ओ जोग हमारो केवळ ।। सब जोगन को राजा ।।
करणी सकळ खडी ज्यूं बाँदी ।। म्हे सब का सारूँ काजा ।।१९।।

मेरा राजयोग यह माया ब्रम्ह के सभी क्रिया,कर्म,पवनयोग,अष्टांगयोग,हटयोग तथा माया–ब्रम्ह के सब योगो का राजा है । जगत मे जैसे राजा की बांदीयाँ रहती उन बांदीयो को कुछ काम पडा तो वह बांदीयाँ राजा के सामने हात जोडकर राजा को बिनती करते हुये खडी रहती । उनकी बिनंतीयाँ सुनकर राजा उनका काम सारता ऐसेही मायावी योग तथा करणीयाँ सतस्वरुप राजा के सामने बांदी के समान खडी रहती । जैसे राजा बांदी का काम सारता वैसेही सतस्वरुप राजा जोग तथा करणीयो के पराक्रम देखके करणी का सुख करणी करनेवाले जोगी,ज्ञानी,ध्यानी,पंडित,दर्शन,भेषधारी आदीयो को माया के देश मे देता । बांदीयोको राजा जैसे अपनी गादी नही देता वैसेही सतस्वरुप ज्ञानी,ध्यानी, वेषधारी,पंडित आदि को अपना आनंदपद नही देता ।।।१९।।

सुणज्यो सकळ सिष्ट मे ग्यानी ।। केवळ पंथ हमारा ।।
सुर्गुण निर्गुण अे दोय भक्ती ।। माया ब्रम्ह बिचारा ।।२०।।

राजा जैसे बांदीयो का काम सारता वैसे कैवल्य आनंदपद यह ब्रम्ह और माया का काम सारता । सब सृष्टीके ज्ञानीयो सुनो,राजा समान मेरा पंथ है । ऐसा राजा समान आनंदपद,कैवल्यपद चाहिये हो तो मेरे पंथ मे आवो । मेरे पंथ मे आवोगे तो मै माया ब्रम्ह का राजा आनंदपद यह तुम्हारे घट मे प्रगट करा दुँगा । सरगुण और निरगुण इन दोनो की भक्ती हंस को आनंदपद नही पहुँचाती । वह माया ब्रम्ह मे ही रखती है ।।।२०।।

मात पिता ज्युं जगमे कईये ।। युं अे भक्ती जाणो ।।
सत बेराग आणंद पद गुर हे ।। युं आ सता बखाणो ।।२१।।

जगतमे माता–पिता तथा वेदी गुरु रहते ऐसेही सरगुण भक्ती यह इच्छा माता की है और निरगुण भक्ती ब्रम्ह पिता की है । जैसे जगतमे माता–पिता रहते वैसेही वेदी गुरु रहते । इसीप्रकार सतवैराग्य आनंदपद यह गुरु की भक्ती है । आनंदपद गुरु की भक्ती किये बगेर हंसमे सतवैराग्य की सत्ता प्रगट नही होती । सतवैराग्य प्रगट हुये बगेर हंस का जनमना मरना नही छुटता ।।।२१।।

मानो बचन हमारा सत कर ।। नार पूर्ष सब ग्यानी ।।
प्रगट कळा हंस कूं भ्यासे ।। नही रेहे जग मे छानी ।।२२।।

सभी नार,पुरुष तथा सभी ज्ञानी मेरे वचन सत है ऐसा मानकर मेरा पंथ धारण करो । जिसने –जिसने मेरा पंथ धारण किया उन सभी हंसो को उन्ही के घट मे सतस्वरुप की

सत्तकला प्रगट हुई तथा ऐसे संत जगत मे छाने रहे ऐसाही समय आज तुम्हारा आया है । यह मौका मत गमावो ।।।२२।।

पीछे सकळ झुरो गे भाई ।। अणभे सुण सुण सारा ।।
अेसा संत फेर इण जग मे ।। कोई समये प्रगटण हारा ।।२३।।

इस मौके को गमा दिया तो आगे अणभय पद की बाणी सुन-सुनके तुम सभी यह अणभय पद पाने के लिये झुरोगे । मेरे समान अणभय पद का संत जगत मे बार-बार नही प्रगटता फिर कितनी भी इस पद की चाहना की तो भी यह पद नही मिलेगा । ऐसा संत सृष्टी मे कभी कबार प्रगट होता है,बार-बार प्रगट नही होता ।।।२३।।

बार बार आ सता न आवे ।। हंस तारण जग माही ।।
पीछे धरम सकळ सोई ढरडा ।। ता मे कारज नाही ।।२४।।

हंस तारनेकी सत्ता बार-बार जगतमे नही आती । संत मोक्ष मे जानेपे संतोके नामपे पिछेवाले लोग संतोके सरीखी सब उपरी विधीयाँ करके धर्म चलाते है । इस उपरी विधीको ढरडा कहते है ऐसे ढरडेमे मोक्ष जानेकी सत्ता नही रहती वह सत्ता संत के साथ चली गई रहती पिछे नही रहती । ऐसे संत के नाम पे शुरु हुये धर्म को कितने भी चतुराई से धारण किया तो भी मोक्ष
जाने का कारज नही बनता ।।।२४।।

बाद बिवाद करे सब जग मे ।। सबे आप दिस ताणे ।।
केवळ जोग क्हेण मे नाही ।। किस बिध जक्त पिछाणे ।।२५।।

जगत के लोग केवली संतो के मोक्ष जाने के बाद उन केवली संतो के नाम का धर्म स्थापन करते । धर्म स्थापन करने के बाद उस धर्म मे शिष्य इकठ्ठा होते । वह शिष्य मोक्ष गये हुये संत के कैवल्य योग को अपने बुध्दीनुसार समजते । जैसे विधी मत मे समज मे आती वैसे विधी दुजे शिष्य पे लादते । दुजे शिष्य के कैवल्य योग के बारे मे कुछ अलग मत रहते । दोनो के मत मिलते नही । मत न मिलनेपर आपस मे वाद-विवाद करते । दोनो शिष्य कैवल्ययोग को बुध्दी से समजने की कोशिश करते । वह कैवल्य योग बुध्दी के समज के परे रहता इसलिये उनसे जैसा है वैसा पकडे नही जाता । इसलिये वाद-विवाद करते और जो शिष्य ने जो मत पकड लिया उससे मोक्ष जायेगा यह समज बना लेते। ऐसे पिछे के बुध्दी के समज से आज दिनतक कोई भी मोक्ष नही गया ।।।२५।।

जे कोई अरथ आद सूं लेवे ।। राज जोग को भाई ।।
जो जो संत केवळी हूवा ।। वे पंथ सोजो जाई ।।२६।।

आद से अभीतक केवली संत जगत मे अनेक हुये । उनके सबके पंथ जगत के लोग चला रहे है ऐसे आद से अभी तक कैवल्य संतो के पिछे जो पंथ हुये उनमे से किसी भी पंथ मे संत मोक्षमे पधारनेके बाद पिछे रहे वे ज्ञान से राजयोग प्रगट होने की कला है क्या ?यह

खोजो । ||२६||

जे वां सता पंथ मे अब ही || तो जाग जाग जो जागे ||
तो हरजन को कारण नाही || भ्रम ग्यान सुंई भागे ||२७||

अगर यह राजयोग प्रगट होने की कला उन पंथो मे है तो आज भी उन सभी पंथो से अनेक लोग घट मे सतशब्द जागृत करके परममोक्ष जाते होगे । अगर ऐसा होता है तो वर्तमान मे सत्ताधारी हरीजन की प्रगटने की जरुरत नही है और रही बात शिष्यो के भ्रम की तो शिष्यो के भ्रम यह केवली संतो का ज्ञान समजने से नष्ट हो जाते ।||२७||

जो हद पडी संत ऊनही सें || आगे चली न कोई ||
तो तारण हार संत ही जगमे || और उपाय न होई ||२८||

संत मोक्ष मे जानेपर संत के नाम से पंथ चले परंतु आज दिनतक उन पंथो से मोक्ष कोई गया नही मतलब संत मोक्ष मे जानेपर संत के पिछे मोक्ष जाने की रीत खुंट जाती । आगे संत के नाम के पंथ से मोक्ष जाने की रीत नही चलती । इसका अर्थ भवसागर से तिरना है तो हाजिर मे मोक्ष पहुँचानेवाला सत्ताधारी संत ही चाहिये । ऐसे संत के सिवा दुजा कोई उपाय आनंदब्रम्ह प्रगट नही करवाता ।||२||

समझो सकळ नार नर आणी || पंथ आगला त्यागो ||
वेसोई संत प्रगटे जगमे || ताँ के चरणा लागो ||२९||

इसलिये सभी नर–नारीयो आगे हुयेवे सभी केवली संतो को पंथ त्यागन करो और उन केवली संतो के सत्तानुसार हाजिर मे जो सत्ताधारी संत प्रगटा है उसके चरणा लागो ।२९।

आपो खोज समज सो कीजे || म्हे उणमे हू भाया ||
आगे हंस तार जन लेग्या || अब म्हे तारण आया ||३०||

आपके पास अनेक हुये वे केवली संतो का ज्ञान है । उस ज्ञान के आधारपर यह खोजो की आगे जो जो संत हंस तारने आये थे वही तारने की सत्ता मेरे पास है या नही । उन संतो के ज्ञान से यह आपके समजमे आयेगा की मै भी उन संतो के सरीखा मोक्ष मे पहुँचानेवाला सत्ताधारी हुँ । जैसे आगे हंस तारने के लिये आये थे वैसा का वैसा ही मै आज तारने के लिये जगत मे आया हूँ ।||३०||

दरसण भेष जक्त नर नारी || सब मुज पासे आवो ||
राव र रंक सकळ कुंई तारूँ || आ सत सरण समावो ||३१||

इसलिये सभी दर्शन,वेषधारी,जगत के नर–नारी,ज्ञानी,ध्यानी,राजा,रंक सभी मेरे पास आवो । मेरे पास जो सत्त है उसका शरणा लो ।||३१||

चूको मती सत कर मानो || जे आणंद पद चावो ||
डाकर पडो जक्त कूं छाडर || तो घट परचो पावो ||३२||

मेरे वचन सत कर मानो सत मानने मे चुको मत । सच मे आनंदपद चाहते हो तो जगत

का याने माया-ब्रम्ह के सुखोका आगे पिछे का बिचार ना करते हुये जैसे डोह मे छलांग लगाते वक्त घर संसारका बिचार नही करते वैसे छलांग लगावो और तुरंत तुम्हारे घट मे सतस्वरुप आनंदपद प्रगटने का परचा पावो ।।।३२।।

जो जो संत मांड में आया ।। हंस तारण कूं सोई ।।
सें देहे थकाँ निंद्याँ जग कीवी ।। चरणा पडया न कोई ।।३३।।

जो-जो संत जगत मे हंस तारने के लिये प्रगट हुये उनकी जगतके लोगो ने देह थका साधारण मनुष्य समजके निंदा ही की है । उनको सतस्वरुप समजके चरणा कोई नही पडा । ।।३३।।

पाछे सकळ करे जग महिमा ।। ढरडे सकळ सरावे ।।
ज्यां मे काज नही कुछ काई ।। सो सब के मन भावे ।।३४।।

संत निजधाम जाने के बाद उस संत के पराक्रम की सभी जगत महीमा करते और एक महिमा करता इसलिये दुजा भी करता ऐसे महीमा करने की प्रथा बन जाती । ऐसी महीमा सबके मन मे भाँती परंतु इस महीमा से एक भी हंस का मोक्ष मे जाने का कारज नही बनता ।।।३४।।

क्या म्हे कहुं जक्त की भाई ।। ईनका येही बिचारा ।।
साच बचन साची चल त्यागे ।। कूडी लगे पियारा ।।३५।।

जगतके लोगोका क्या वर्णन करे?जगतके लोगोकी यही बुध्दी और मती है । तारनेवाले संत रहेगे तब तक निंदा करेगे और वह संत जानेके बाद महीमा करेगे । जगतके लोगोको आनंद पदका ज्ञान तथा आनंदपद चलने की विधी प्यारी नही लगती परंतु काल के मुख मे पड्नेका ज्ञान जैसे वेद,शास्त्र,पुराण,भेद आदी विधीयाँ प्यारी लगती । इसकारण कालके मुखसे निकलनेका ज्ञान त्याग देते और कालके मुखमे रखनेवाला ज्ञान जा-जाकर धारन करते ।३५।

समझ सको सो तो हंस समझो ।। मत जग संग बेहे जावो ।।
सत स्वरूप केवळ पद आनंद ।। तां सुँ ओ मन लावो ।।३६।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते,हंस हो,समज सकते हो तो समजो जगत के ज्ञानी, ध्यानी,दर्शनी,भेषधारी,कर्मकांडी,मतज्ञानी,व्यास,पंडीत इनके ज्ञानके संग मत बह जावो। इनका ज्ञान माया-ब्रम्हतक है । इस ज्ञान मे काल का भारी महादु:ख है । काल के दु:ख से निकलना है तो महाआनंद देनेवाले सतस्वरुप,केवल आनंदपद मे मन लगावो ।।।३६।।

के सुखराम मोख जब पूँछे ।। जग मे सु हंस कोई ।।
अेसा संत आण यहाँ प्रगटे ।। कळा सरूपी जोई ।।३७।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज ज्ञानी,ध्यानी,जगतको कहते है कि,आजदिन तक जगत

मे से अनंत हंस मोक्ष मे गये । वह कुद्रतकला प्रगटे हुये संत के आधार से ही गये । दुजे कोई माया-ब्रम्हके कलासे नही गये । तथा आज भी सतस्वरुपी संतके ही आधार से जा रहे दुजे कोई माया-ब्रम्हके कलाके आधारसे नही जा रहे और आगे भी कैवल्य कला प्रगट हुयेवे संत के ही आधारसे जायेगे दुजे कोई माया-ब्रम्हके कलाके आधारसे नही जायेंगे यह समजो ।३७।

कळा कळा मे फेर क्हावे ।। जे समजे नर नारी ।।
होण काळ की कळा ब्होत हे ।। से सब तजो बिचारी ।।३८।।

सतस्वरुप के कला मे तथा होनकाल के कला मे बहोत फरक है । होनकाल की अनेक कलाये है । यह सारी होनकाल कलाये जीवो को काल के मुख मे रखती । इन होनकाल के कला से सतस्वरुप की कला न्यारी रहती । वह जीवो को काल से तारती इसलिये स्त्री-पुरुषो समज सके तो समजो मारनेवाली होनकाल की जो-जो कलाये है उन सबका त्यागन करो और तारनेवाले सतस्वरुप के कला को धारण करो ।।।३८।।

रिध सिध्ध प्रचा सूं बारे ।। होण काळ सूं होई ।।
ग्यान ध्यान क्रणी सब सारी ।। क्हे मुख सुं होई ।।३९।।

रिध्दी,सिध्दी,पर्चे,चमत्कार यह होनकाल की कलाये है । मायाका ज्ञान,माया का ध्यान,माया की करणीयाँ तथा मुखसे बोलनेपर सिध्द होनेवाली विधीयाँ यह सभी होनकाल की कलाये है । इससे सतस्वरुप की कला न्यारी है ।।।३९।।

तत्त चीन निर्भे थिर होई ।। ब्रम्ह कळा सोई जाणो ।।
सत स्वरूप की कळा नियारी ।। वा जन सोज पिछाणो ।।४०।।

पारब्रम्हके तत्तको जानकर निर्भय होना,स्थिर होना यह पारब्रम्ह कला है । उससे सतस्वरुप की कला न्यारी है । सतस्वरुप की कला पारब्रम्ह कला से न्यारी कैसे है? यह सतस्वरुप तथा पारब्रम्ह होनकाल का ज्ञान खोजकर पहचानो ।।।४०।।

वा बिध बिना कोई नही पावे ।। आणंद पद कुं भाई ।।
पार ब्रम्ह सें सब ही ऊपज्या ।। उलट मिल्या ता माही ।।४१।।

सतस्वरुप के कला बिना पारब्रम्ह तथा माया के अनंत कला से आनंदपद कोई नही पाता । सतस्वरुप के कला सिवा जगत मे रिध्दी,सिध्दी,परचे,चमत्कार,कर्मकांड आदि जितनी भी कलाये है वह सभी कलाये पारब्रम्ह और इच्छा से उपजी है । इसकारण इन कला के आधार से जीव उलटा पारब्रम्ह मे ही मिलता आनंदपद कभी नही जाता ।।।४१।।

आगे कदे न पूंते हंसो ।। कोट कळा अे पावे ।।
पुर्ण ब्रम्ह लग हंस पहूता ।। फिर फिर पाछा आवे ।।४२।।

हंसने पारब्रम्ह की करोडो कलाये याने सभी कलाये प्रगट की तो भी हंस पूर्णब्रम्ह के आगे कभी नही पहुँचता । वह करोडो कलाये प्रगट किया हुवा हंस पारब्रम्ह तक पहुँचता और

बार–बार जगत मे जनम धारन करके जगत मे वापीस वापीस आता ।।।४२।।

तांते कळा सकळ अे झूटी ।। मोख न पहुँचे कोई ।।
आवागवण मिटे नही जन की ।। जो ब्रम्ह जेसो होई ।।४३।।

इसलिये पारब्रम्ह की सभी कलाये झूठी है । इससे हंसका मोक्ष पहुँचनेका कारज होता नही । हंसका आवागमन मिटता नही । हंस पारब्रम्हकी कला प्रगट करनेके पहले जैसे कालके मुख मे था वैसाही बना रहता । उसके ब्रम्ह मे याने जीव मे सतस्वरुप प्रगट होता नही । उसका जीव याने ब्रम्ह पारब्रम्ह की कलाये प्रगट करने के पहले जैसा सतस्वरुप की कला बिना था वैसेही पारब्रम्हकी कलाये प्रगट होनेके बाद भी रहता । उस जीवब्रम्हके ५ आत्मा,मन,त्रिगुणीमाया तथा काल निकलते नही इसकारण वह जीव मोक्ष मे पहुँचता नही ।।।४३।।

क्हे सुखराम समज रे प्राणी ।। सत्त कळा ज्यां जागे ।।
अखंड घट मे हुवे ऊजीयाळो ।। नख चख मे धुन्न लागे ।।४४।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज हंसो को सतस्वरुप कला प्रगट होनेके लक्षण बता रहे है । जिस हंस के घट मे सत्तकला जागृत होती है उसके घट मे नख से चखतक अखंड्ति धुन लगती तथा अखंड्ति प्रकाश होता ।।।४४।।

कुद्रत कळा नाव इसही को ।। कोई जन जाणे नाही ।।
क्रणी बिना कीयाँ बिन साझन ।। ऊलट आद घर जाही ।।४५।।

घटमे अखंड्ति धुन तथा प्रकाश होने के कलाको कुद्रतकला,सत्तकला कहते है । यह

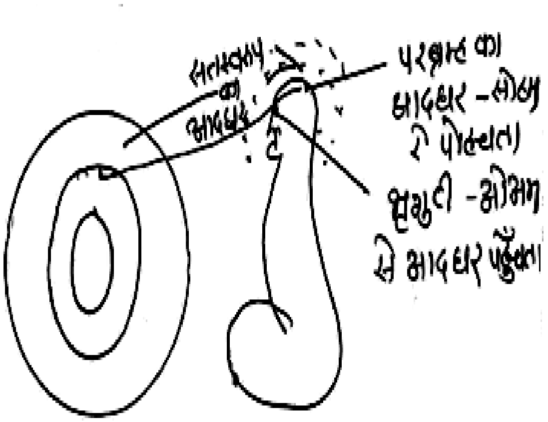

कला होनकालका कोई साधू,दर्शनी,ज्ञानी,पंडीत, ब्रम्हज्ञानी, तत्तज्ञानी जानता नही । यह कला होनकालकी कोई क्रिया–करणी तथा साधन न करते हुये घटमे प्रगट होती । यह कला हंस को बकंनालके रास्तेसे उलटाकर सतस्वरुप आदघर ले जाती । आदघर तीन है । तीन पद है । जीव पहले जहाँ था उस आदघरका नाम पारब्रम्ह है । जीव बार बार जनमता उस आदघरका नाम माया याने भृगुटी है । जीव,माया तथा पारब्रम्हका आदघर यह सतस्वरुप है ।।।४५।।

नख चख माहे अखंड धुन्न लागे ।। निमष न खंडे कोई ।।
मुख सुं कहया रीत नही आवे ।। वा कुद्रत सुण होई ।।४६।।

जिस कुद्रतकला से सतशब्द की शिष्य के घट मे नख से चखतक अखंड्ति धुन लगती वह धुन निमिष मात्र भी खंडीत होती नही । इस कुद्रतकला की रीत अनुभव से ही समजे जाती । मुख से या माया के कोई भी चरित्र से जगत को बताये नही जाती ।।।४६।।

पांच रंग को ना रंग वामे ।। नां पांचु रस भाई ।।
पाँच प्रेम सुंई पेम नियारो ।। म्हे कहूँ कोण बिध लाई ।।४७।।

(विठ्ठलराव के संवाद मे कुंड्ली नं ३४,३५)

जगत मे पाँच रंग :--- -------काला,हरा,लाल,सफेद और पिला ।

पाँच रस और पाँच प्रेम :--- --खारा,खट्टा,तिखा,फिका और मिठा ।

यह कुद्रतकला जगत के सभी पाँचो रंग,पाँचो रस तथा पाँचो प्रेम से न्यारी है । इस कारण जगत मे समजेगा ऐसी मै कौनसी विधी लाकर बताउँ ? ।।४७।।

अेसी बस्त नही जग माही ।। म्हे नकली मींड बताऊं ।।
सब नास्त आ सत नही या बिन ।। किस बिध जोडे लाऊं ।।४८।।

जगत मे ऐसी कोई नकली वस्तू भी नही है कि वह जोडे से खडी करके जगत को कुद्रतकला समजा सकुँगा । कुद्रतकला के सिवा सभी वस्तू नाश होनेवाली है । कुद्रतकला अमर वस्तू है ऐसे अमर वस्तू के साथ मरनेवाली कोई भी वस्तू जोडे नही जा सकती इसकारण जगत को कुद्रतकला किसी भी मायावी विधी से समजाते नही आती ।।।४८।।

भक्त जोग साझन सब तपस्या ।। सर्गुण निरगुण दोई ।।
सबही असत सत्त अे नाही ।। क्हाँ लग गिण कहुँ तोई ।।४९।।

सरगुण याने माया और निरगुण याने पारब्रम्ह ऐसे माया और पारब्रम्ह की सभी भक्तीयाँ और सभी योग,सभी साधनाये तथा मन और पाँच आत्मा की तपस्याये यह सभी असत है,यह सत नही है । इनसे मोक्ष प्राप्त नही होता । कुद्रतकला छोड्कर जगत मे गिने नही जाती ऐसी अगणित मायावी भक्तीयाँ है । इन अगणित भक्तीयो मे से कोई भी भक्ती से आनंदपद नही जाते आता । कालका दु:ख नही काटते आता इसलिये यह कुद्रतकला छोड्के यह अगणित भक्तियाँ हंस को मोक्ष जाने के लिये झूठी है ।।।४९।।

समज समज सतगुरु संग कीजे ।। ज्यां संग कुद्रत जागे ।।
ओर गुरू तज ग्यान उपायाँ ।। ज्याँ संग धुन नही लागे ।।५०।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है,यह सभी माया की तथा पारब्रम्ह की भक्तीयाँ असत है यह तारनेवाली नही है इसे समजो और समजकर यह मायाकी भक्तीयाँ बतानेवाले वेदी गुरु और वेदी ज्ञानी,ध्यानी को त्यागकर और जिसके संग से तारनेवाली कुद्रतकला जागृत होती वह सतगुरु धारन करके जीव का कार्य कर लो ।।।५०।।

केहे सुखराम हंस करणी कर ।। आणंद पद नही पावे ।।
ज्यूं सेंसार राज कर ऊधम ।। कंठ बेद किम गावे ।।५१।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज हंसो को बता रहे कि,माया-ब्रम्ह की करणी करके आनंदपद कोई भी जाता नही । जैसे किसीने संसार मे राजरीत सिखने का उद्‌यम किया उसे राजा सरीखी राजरीत आयेगी । उसे ऋषीयो के सरीखा वेद कंठाग्र नही हुवा । वेद

करने की रीत की नही इसलिये वेद हुये नही ।।।५१।।

हिरदे ग्यान कोण बिध बेसे ।। दया करे किम कोई ।।
ज्युं ऊधम यूँ सब ही करणी ।। याँ वा सत न होई ।।५२।।

और हृदयमे बेदका ज्ञान कैसे बैठेगा?और कोई भी दया कैसे करेगा?जैसा उद्यम करोगे,वैसा फल मिलता है ।(जैसे कुँआ खोदा और कहता,की मेरी हवेली तैय्यार नही हुयी । यदी हवेली बनाते रहता,तो उसी रूपयेमे हवेली बन गयी होती और कुँआ खोदा,इसलिए कुँआ तैय्यार हो गया) । ऐसी ही सभी करणी है । जैसा करोगे,वैसा फल मिलेगा । ऐसी,इसी प्रकार दूसरी करणी,सत नही हो सकती है । ।। ५२ ।।

ऊधम माय पाँचु सुख सारा ।। नाना बिध का पावे ।।
क्रामात युँ सब करणी में ।। रिध सिध दोडी आवे ।।५३।।

संसार मे उद्यम करने से उद्यम करनेवाला नाना बिध के पाँच सुख पायेगा । इसीप्रकार माया की करणीयाँ करनेवाले मे करामात तथा रिध्दी-सिध्दीयाँ दौड-दौड के जागृत होगी और वह करामाती करामात के तथा रिध्दी-सिध्दी के नाना विधी के सुख पायेगा परंतु वह सत विज्ञान के नेकभर भी सुख कभी नही पायेगा ।।।५३।।

समजवान बिन कोई न समजे ।। म्हे कहाँ लग कहुं बिचारी ।।
प्रचा सकळ राज ज्यूँ सारा ।। आ ग्यान दिष्ट सें न्यारी ।।५४।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है,मै जगत को कहाँतक समजाके बताउँ । आनंदब्रम्ह की जगत के लोगो मे समज ही नही । जगत मे के सभी परचे चमत्कार माया-ब्रम्ह से प्रगटते है । जैसे जगत मे प्रजा को राजा से प्रजा ने उद्यम करने के बाद सुख मिलते है ऐसेही जीव हंस को करणीयाँ करने के बाद माया-ब्रम्ह से परचे चमत्कार के सुख मिलते है । आनंदब्रम्ह यह माया-ब्रम्ह के परचे चमत्कार के समज दृष्टीसे नही समजा जाता । पर्चे चमत्कार मे जो समज आती वह समज सतस्वरुप समजने के उपयोग मे नही आती। सतस्वरुप समजने के लिये परचे चमत्कार के समजसे न्यारी समज लगती। वह समज कोई समजवान मे ही रहती। वही समजवान आनंदब्रम्ह को समज सकता ।५४।

ओ सत भेद हमारो सुणज्यो ।। आणंद लोक कुं जावे ।।
सत स्वरूप की कळा प्रगटे ।। सो सत्त सब्द कहावे ।।५५।।

मेरे सत्तभेद से हंस होनकाल से निकलकर आनंदलोक जाता उसके घटमे सतस्वरुप की कुद्रतकला जागृत होती। उसके घट मे सतशब्द की अखंडीत ध्वनी जागृत होती। उसके घट मे काल के मुख मे जानेवाले माया-ब्रम्ह के परचे चमत्कार कभी प्रगट नही होते।५५।

नख चख सोज अगम कूँ ऊडे ।। इण हंसा कुं ले जावे ।।
फाडर पीठ चढे नित ऊँचो ।। पांछो कबुहन आवे ।।५६।।

घट मे प्रगट हुवा वह सतशब्द हंस के घट के नख से चखतक अपनी सत्ता प्रगट करता

और हंस को अगमदेश याने जिस देश की ब्रम्हा,विष्णू,महादेव तथा माया-ब्रम्ह को गम नही ऐसे अगमदेश उडा ले जाता । यह सतशब्द हंस को हंस के घट की पिठ फाड्कर उँचा सतस्वरुप के देशके लिये नित ले चढता और सतस्वरुप के देश मे हंस को पहुँचा देता । हंस सतस्वरुप मे पहुँचने के बाद निचे माया मे कभी नही आता ।।।५६।।

जात जात ऊँचो नित जावे ।। मिणियाँ सब ही छेके ।।
तन बेराट माहे बिध सारी ।। भिन भिन्न कर सब देखे ।।५७।।

यह सतशब्द नित्य प्रगट हुये स्थान से उँचा ही जाते रहता । वह पिठके मणीयो मे ३३ करोड देवतावो का वास है इसप्रकार पिठ के २१ मणीयो का छेदन करता । खंड-ब्रम्हंड की माया-ब्रम्ह की सभी विधीयाँ घट मे ही भिन्न-भिन्न करके देख लेता ।।।५७।।

सब ही ध्यान कूंच्या मुद्रा ।। सब स्हेजां सज जावे ।।
जोग भक्त निर्गुण सो सर्गुण ।। सब बिध चेन लखावे ।।५८।।

जगतके लोग भारी-भारी कष्ट लेकर ध्यान,कुंच्या,मुद्रा अनेक प्रकारकी सरगुण भक्तीयाँ तथा निरगुण भक्तीयाँ साधते है । वे सभी भक्तीयोके फलोके चरीत्र सतशब्दके सत्तासे हंस के घटमे ही सहजमे सज जाती है उसके लिये जगतके लोगो सरीखे भारी भारी कष्ट नही लेने पड्ते ।।।५८।।

निज नाँव जाग्याँ सब क्रणी ।। स्हेजाँ हुवे सब कोई ।।
जेता ध्यान संत पच कर हे ।। जे हाजर यूं सोई ।।५९।।

माया-ब्रम्ह के संत पच-पचकर माया-ब्रम्ह का ध्यान करते । उस ध्यान से संत को करणी के फल लगते वह सभी फल घट मे निजनाम प्रगट होने पर बिना करणी से हजर होते । ।५९।

खिडकी सबे सब्द ही खोले ।। मन साझन कुछ नाहीं ।।
क्या कहुं उद बुद बिध भारी ।। जो जाणे ता माही ।।६०।।

हंसको आनंदब्रम्ह पहुँचते समय रास्ते मे जो जो खिड्कीयाँ लगती याने अड्गे,रोडे लगते वह सभी सतशब्दही खोलता । उस अड्गोको पार करनेके लिये हंसको मन तथा तनका हट नही करना पड्ता । यह मन तथा तन का भारी हट भृगुटी के ध्यान करनेवालो का करना पड्ता फिर भी भृगुटी के ध्यानीयो का काल नही छुटता । ऐसी यह अद्‌भुत रित है । यह रित बहुत भारी है । यह रीत जिसमे हुई वही वह कैसे अद्‌भुत है यह जानेगा । माया के ज्ञानी,ध्यानीयो को यह रीत नही समजेगी ।।।६०।।

ओर जोग ऊतर चड जावे ।। जे जन सारे होई ।।
राज जोग प्रगटे ओं घट मे ।। मन के बस नही कोई ।।६१।।

माया के सभी योग संत अपने मन के बलसे प्राप्त करता । ऐसे संत का मन योग से उब गया तो संत का हंस निचे उतर जाता मतलब हंस के योग साधने के पहले जैसे स्थिती

थी वैसे बन जाती फिर योग की चाहना होती फिर संत चढ जाता । फिर अमुज गया की निचे आ गिरता । ऐसा चढना–उतरना माया के योगीयो का उनके मन के वश मे रहता । ऐसा राजयोग के संतमे नही होता । संतको अमरदेश को चढते समय आनंद आता अमुज नही होती । फिर भी संत जैसे राजयोग धारन करने के पहले स्थिती थी वह करना चाहेगा तो होती नही । यह राजयोग हंसने अपने मनके बल चढाया नही रहता । यह राजयोग सतगुरु के सतशब्द के बल से हंस के घट मे प्रगट हुवा रहता इसकारण हंस सतशब्द के वश मे रहता । यह सतशब्द नित्य अमर लोक के ओर जाते रहता । वह होनकाल के ओर वापस नही फिरता । कारण चढाया हुवा हंस मन के बल चढाया नही रहता,सतगुरु के बल से चढाया रहता इसलिये इस राजयोग मे हंस को निचे उतराना फिर चढाना यह मन के बस नही रहता ।।।६१।।

आपे मते चडे तन माही ।। क्रम धर्म नही माने ।।
जनका अंग कछुं नही देखे ।। नित अगम दिस ताणे ।।६२।।

यह सतशब्द अपने सत्ता के बलसे हंस के घटमे हंसको लेकर चढता । वह सतशब्द हंसके कर्म,धर्म,स्वभाव कुछ नही देखता । हंस निचधर्मी है या उंचधर्मी है,हंस निच स्वभाव का है या उच स्वभाव हे यह कुछ नही देखता । सतशब्द हंस के मन तथा तन के स्वभावो को मानता नही । सतशब्द सिर्फ हंस को देखता हंस आदि से मेरा है,आजभी मेरा है और आगे भी मेरा ही रहेगा । वह मन और पाँच आत्मावो के बस होकर काल के चक्कर मे अटक गया । मन के तथा पाँच आत्मावो के चलते हंससे हलके भारी कर्म,धर्म बने है । इसलिये हंस निर्दोष है तथा हंस आदिसे मेरा है इसलिये सतशब्द हंस के धर्म,कर्म,स्वभाव को ना देखते हुये नित्य अमरलोक के ओर ताणता ।।।६२।।

जोग भोग को कारण नाही ।। ना रेहेणी को भाई ।।
जे जन तज्यो सब्द कूँ चावे ।। तोई पद बिरचे नाई ।।६३।।

इसकारण सतशब्द हंस योगी है या भोगी है मतलब ज्ञानी सरीखा उंचकर्मी है या नरकीय जीवो सरीखा निचकर्मी है । यह हंस की रहनी नही देखता । एकबार हंस मे सतशब्द प्रगट होने के बाद सतशब्द हंस को छोड्ता नही । इसके उपरांत हंसने सतपद का जोर लगाके भी त्यागना चाहा तो सतपद हंससे छुटता नही ।।६३।।

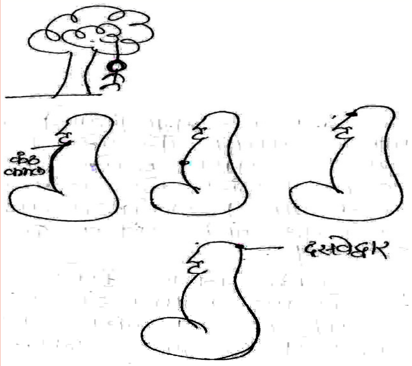

ज्यूं नर आप हात गळ फासी ।। ले झूले कहुँ कोई ।।
पीछे कबु खोलणे लागो ।। तो वा नरम न होई ।।६४।।

जैसे कोई मनुष्य अपने गले मे फांसी लगाकर जमीनपर पैर पहुँचेगे नही ऐसे उंचे जगह का साधन बनाके झुलता । झुलने के बाद उस फांसी को खोलना चाहता । वह फांसी लाख कोशिश की तो भी थोडी भी नरम नही होती वह फांसी जीव

को देह से निकाल ही देती । वैसेही सतशब्द हंसने धारन करनेपर हंस को पिंडसे याने खंड–ब्रम्हंड से निकाल लेता । वह हंस लाख कोशिश करके दसवेद्वारसे कंठकमल आना चाहे तो भी वापीस नही आ सकता । वह हंस कंठ कमलसे हृदय कमल गया तो हृदय कमल मे ही रहेगा और आगे नाभी कमलके लिये प्रस्थान करेगा परंतु हंस हृदय कमलसे कंठ कमल मे वापस कभी नही आता । ।।६४।।

ऐसो सत सब्द ओ कहिये ।। अंग को कारण नाही ।।
ओतो हंस लेर वां जासी ।। पूरण पद के माही ।।६५।।

वह हंस को स्वभाव देखता नही तथा मानता नही । वह हंसके कोई भी स्वभाव,कर्म,धर्म मे अटकता नही तथा हंसको अमरलोक ले जाते समय हंसके कोई भी स्वभाव,कर्म,धर्म सतशब्द के आडे आते नही । ऐसा यह सतशब्द अद्‌भुत है । वह हंस को होनकाल से निकालकर पुरणपद मे ले जाता ।।।६५।।

अटके नही बिचे किस हुसें ।। ना कोई आडो आवे ।।
माया ब्रम्ह सकळ ही धूजे ।। सब कोई द्रसण चावे ।।६६।।

ऐसा सतशब्द हंस को पुरण पद ले जाते समय ब्रम्हा,विष्णु,महादेव,शक्ती इस आकारी

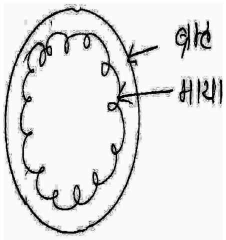

त्रिगुणी माया और इच्छा तथा ब्रम्ह इन सबसे अटके जाता नही और ये उस सतशब्द को अटकाते भी नही । ये कोई भी उस सतशब्दके आडे आते नही । उस सतशब्दसे माया–ब्रम्ह धुंजते ऐसे डरनेवाले माया–ब्रम्ह और माया ब्रम्हसे उपजे हुये कर्म,धर्म,स्वभाव,ब्रम्हा,विष्णू,महादेव,शक्ती यह कैसे आडे आयेगे?उलट साकारी संत के शरीर मे प्रगट हुये वह सतस्वरुप के दर्शन वह करना चाहते ।।।६६।।

मिणियाँ छेक मेर कुं बींदे ।। अळा पिंगळा जागे ।।
दोनु दिसा गिगन कूं घेऱ्यो ।। ध्यान तुरकुटी लागे ।।६७।।

यह सतशब्द हंसके घटको खंड–ब्रम्हंड बनाता। पीठके स्वर्गके २१ मणीयोका छेदन करता। इडा,पिंगला याने गंगा,यमुना जागृत करता । यह दोनो गंगा,यमुना गगन को घेरती और हंस की सुरत त्रिगुटी मे पहुँचकर त्रिगुटी मे लगती ।।।६७।।

सुखमण पोळ गिगन की खोलर ।। सिर ऊपर होय आवे ।।
त्रुगुटी मेहेल खोल धस माही ।। नेण पलट उलटावे ।।६८।।

सुखमना याने सरस्वती गिगनका दरवाजा खोलके सीर उपरसे आती । सीर उपरसे सुषमना त्रिगुटी महल मे धंसकर गंगा,यमुना से मिलती उस वक्त हंस की आँखे पलट के दसवेद्वार मे उलटती ।।।६८।।

सुख सो रीत क्हेण की सरधा ।। मुख की हाजत नाही ।।
जो हंस सुणो जाणसी आ बिध ।। उलट आद घर जाही ।।६९।।

सतशब्द के साथ हंस त्रिगुटी मे पहुँचता । सतशब्द से त्रिगुटी मे जो सुखो की रित है वह मेरे मुख से मै जगत को बता नही सकता । वह सुख मुख से बोलकर बखान करने का मेरे मुख मे बल नही है । जो सतशब्द के इन सुखो की विधी जानेगा वही हंस सभी महासुखो का जो आदघर है वहाँ पहुँचेगा ।।।६९।।

क्हाँ लग कहूँ जक्त ईऊँ दिसे ।। ज्यूं बाळक जुग होई ।।
म्हे ज्यूँ चडया सिखर पर ऊँचा ।। ज्यूँ जग बास न कोई ।।७०।।

जैसे कोई मनुष्य बहोत उँचे शिखर पर चढता । उस शिखरसे निचे खडे हुये उसके बराबरी के मनुष्य को देखता तब निचे खडे हुये मनुष्य शिखरपर चढनेवाले मनुष्य को बालक के समान दिखते । इसीप्रकार मै सतस्वरुप शिखर पर पहुँच गया । मेरा होनकाल जगत मे बास नही रहा । इसकारण मेरे सतस्वरुप शिखर मे पहुँचने के सामने होनकाल जगत के माया–ब्रम्ह के ज्ञानी,ध्यानी बालक के समान छोटे दिखते ।।।७०।।

नेणा माहे नीर बेहे चाल्यो ।। तरगड म्हारी यॉं फाटे ।।
डरप्यो मन चख नही बंछे ।। सुख अनंत ईण घाटे ।।७१।।

(मेरे बहुत ऊंचा चढ जानेसे),आँखोसे पानी बह रहा है और तरगड(चाळे)मेरा ऐसा फट रहा है और मन डर रहा है और वह देखने की आँखे इच्छा नही करती । उस घाट पर सुख अनंत है । ।।७१।।

ओर तमासा माया रूपी ।। जोत उजाळा होई ।।
जिन कूँ करे कहो कुण आरे ।। नाँ नाँ बिध का सोई ।।७२।।

त्रिगुटी मे ज्योती के सुख दिखते । उजाले के सुख दिखते ऐसे नाना विधी के मायावी तमासे दिखते । यह सभी मायावी तमासे सतशब्द के सुखो के सामने भारी फिके लगते तथा उब आये हुये सुखो के समान लगते इसलिये मेरा हंस सतशब्द के सुखो के अलावा अन्य सुखोको कबूल नही करता ।।।७२।।

सब्द सुख भारी गढ ऊपर ।। अेक नकल कहुँ तोई ।।
ईद्रि तेज भग संग कियाँ ।। ओ सुख निस दिन होई ।।७३।।

सतशब्द से त्रिगुटी मे रात–दिन भारी सुख मिलते । जगत मे इंद्रिय भग के साथ तेज होनेपर जो सुख मिलता उससे भी भारी सुख रात–दिन हंस को त्रिगुटी मे मिलता । उस सुख के सामने इंद्रिय भग के साथ तेज होने से मिलनेवाला सुख यह एक नकल के समान है । वहाँ का अस्सल सुख कुछ और ही है ।।।७३।।

रात दिन सूताँ चल बेठाँ ।। नेक झोल नही खावे ।।
अेक रस तेज सदा सुख भारी ।। म्हेमा क्हैत न आवे ।।७४।।

वे सुख रात–दिन रहते । वे सुख बैठनेसे,चलनेसे या सोनेसे जरासे भी कम नही होते उन सुखोमे सदा भारी तेज रहता । वह सुख एक रस रहते याने एकसरीखे रहते । उन सुखोमे

झोल याने कम नही होता । उन सुखोकी महीमा बताई नही जाती याने मुख के शब्दो से वर्णन नही किये जाता ।।।७४।।

त्रूकुटी छाड चले जब आगो ।। सोई जन के बस नही ।।
आपे मते उडे हंस निस दिन ।। प्रबस बंधीयो जाही ।।७५।।

त्रिगुटी छोड्कर हंस जब अगम के ओर चलता तब उस संत का चलना संत के निजमन के वश नही रहता । वह बिना निजमन के बल से सतशब्द के परबस बांधे जाकर अपने आप सतशब्द केवल से रात-दिन आनंदपद के ओर उड्ते रहता ।।।७५।।

म्हा माया अर जोत प्रगती ।। तहाँ लग चेन अपारा ।।
क्हाँ लग कहूँ गिणत नही आवे ।। याँ सूं सब्द नियारा ।।७६।।

त्रिगुटी छोड्नेपर हंस माया के लोक जाता । आगे माया का लोक छोड्के प्रकृतीके लोक जाता । हर लोक मे गिने नही जाते ऐसे अगणित हर देश के अपने-अपने अपार सुख के चरीत्र रहते । वह सारे सुख सतशब्द के सुख के सामने फिके लगते । ऐसे सतशब्द के सुख इन सभी सुखो से न्यारे है ।।।७६।।

दिन दिन चडे अगम दिस जावे ।। पाछा नेक न जोवे ।।
हंस कूं पकड कियो मुख आगे ।। आतम पाँचू रोवे ।।७७।।

सतशब्द हंसको ऐसे अगम सुखके ओर रोज के रोज पहुँचाते रहता है । वह सतशब्द हंस को अगम मे पहुँचाते वक्त जरासा भी पिछे नही देखता । हंससे पाँचो आत्मा निकालकर सिर्फ हंस को मुख मे पकड रखकर अगमदेश के ओर ले चलता है । हंस के पाँचो आत्मा को सुख चाहिये इसलिये त्रिगुणी माया के कर्म करता । यह कर्म जीव को पाँचो आत्माद्वारा लगते । इन कर्मो मे काल रहता । यह काल जीव को कर्म के अनुसार भारी दु:ख भुगवाता । इस दु:ख मे जीव त्रायमान-त्रायमान बना रहता । पाँचो आत्मा यह माया है । ब्रम्ह अमर है,अगमदेश अमर है । अमरलोक मे अमर वस्तू ही समा सकती । अमरलोक मे माया नही समाती । इसलिये सतशब्द हंस को पाँचो आत्मा से निकालकर अगम देश ले जाता । हंस को ब्रम्ह से पाँचो आत्मा को सुख मिलते । यह सुख पाँचो आत्मा के बंद हो जाते इसलिये वह पाँचो आत्माये हंस के बिछ्ड जानेपर रोती ।।।७७।।

सत्त सब्द की कथा सुणो आ ।। सुणज्यो ग्यानी ध्यानी सारा ।।
दसवों द्वार फोड कर निकसे ।। नही कोई अटकण हारा ।।७८।।

सभी ज्ञानी,ध्यानी सतशब्दका पराक्रम सुणो । यह सतशब्द हंसको साथमे रखकर हंसके घटके दसवेद्वार फोड देता । सतशब्द दसवेद्वार फोड्ता तब उसे माया,ब्रम्ह तथा होनकाल का कोई बल नही अटकता । उसे कोई बल अटकाना नही चाहता और न वह किसीसे अटकता । ।।७८।।

ओर जोग सब फिर फिर आवे ।। दसवे द्वार लग जाई ।।

से हंस सकळ आप बळ चड हे || ताते अटके भाई ||७९||

राजयोग के बल के सिवा अन्य सभी योगसे हंस दसवेद्वार तक जाता । दसवेद्वार खोलके आगे सतस्वरुप मे नही जाता । सतस्वरुप जाने के लिये दसवेद्वार के परे का सतस्वरुप का बल चाहिये रहता । वह बल अन्य योगो मे नही रहता । उन योगो मे मन,५आत्मा,त्रिगुणी माया तथा होनकाल ब्रम्ह का बल रहता । मन और पाँच आत्मा और त्रिगुणी माया का बल आकाश तक याने साकारतक काम करता । होनकाल का बल पारब्रम्ह तक याने निरगुणतक काम करता । यह सारे बल हंस मे आदि से ही है । सतस्वरुप यह खंड–ब्रम्हंड और पिंडके परे है । इस सतस्वरुप का बल सतगुरु मे प्रगट रहता । खंड–ब्रम्हंड और पिंड के परे आनंद ब्रम्ह मे चलना है तो खंड–ब्रम्हंड,पिंड के परे पहुँचे हुये सतगुरु का राजयोग ही प्रगट करना पड्ता । यह राजयोग प्रगट करने की विधी अन्य पवनयोग,सांख्ययोग,अष्टांगयोग,सोहम जाप अजप्पा योग इसमे नही रहती इसकारण यह योग दसवेद्वार पे अटक जाते । यह योग दसवेद्वार पे अटकते इसलिये इन योगो को धारन किया हुवा हंस भी दसवेद्वार पे अटक जाता आगे आनंदब्रम्ह मे नही जाता । आनंदब्रम्ह मे जाने के लिये दसवेद्वार पहुँचता वहाँ दसवेद्वार खोलने के लिये फिर–फिरकर कोशिश करता । दसवेद्वार खुलता नही तब निचे जगत मे वापीस आकर बार–बार जनम धारन करता ।।।७९।।

आगे कहो कोणं बळ जावे || वो तो देस नियारो ||
माया ब्रम्ह अेक नही जाणे || ज्युं जुग ग्यान पियारो ||८०||

सतस्वरुप का देश खंड के ३लोक १४ भवन और ब्रम्हंड के ३ ब्रम्ह के १३ लोक इनसे न्यारा है । जगत को माया और ब्रम्ह का ज्ञान प्यारा है । माया और ब्रम्ह का ध्यान प्यारा है । माया और ब्रम्ह के योग प्यारे है । सतस्वरुप के देश को ब्रम्ह और माया दोनो भी नही जानते फिर इनके योग साधनेपर हंस ब्रम्ह और माया से न्यारा है ऐसे सतस्वरुप मे कैसे पहुँचेगे? ।।८०।।

दे उपदेस संत जुग आणी || जग कुळ सुं जिव काडे ||
यूं निज नांव हंस कूं लेग्यो || सो हद बेहद छाडे ||८१||

जगतमे सदासे कुल और वेदी वैरागी ऐसे दो पद चलते आये है । वेदी वैरागी कुलमेसे जिवको ग्यानका उपदेश देकर कुलसे बाहर निकालता । ऐसेही सतगुरु याने निजनाव हंसको निजनाव का वैराग्य ज्ञान देकर हद बेहद से निकालता और अगम मे पहुँचाता ।।।८१।।

नही नही बस हंस को तामे || प्रबस पडियो भाई ||
सतगुरु मेहेर सता घट जागी || जिण बस कीयो माई ||८२||

हंसपर सतगुरु की मेहर होती। इस मेहर से सतगुरु की सत्ता हंस के घट मे जागृत होती।

 ।। राम नाम लो, भाग जगाओ ।।

वह सत्ता हंस को उसके मन और पाँच आत्मा के बससे निकालती । साथ मे ब्रम्ह और माया ऐसे कुल के बससे निकालती इसकारण हंस का खुद का और कुल का बस निकल जाता और हंस सतस्वरुप के परबस हो जाता ।।।८२।।

पथर बांध कूपमे पड हे ।। भोळप मे बिष खावे ।।
पासी लेर रूंख सूं झुरियो ।। ज्यूँ ओ जोग कहावे ।।८३।।

जैसे कोई व्यक्ती देह पर भारी पत्थर बाँधकर पानीसे पुरे भरे हुये कुवे मे कुदता । भारी पत्थर के कारण उसे पानीके बाहर निकलते नही आता इसलिये उसके फेफडेमे पुरा पानी ही पानी हो जाता वह पानी उस प्राणको साँस नही लेने देता और उसके जीवको देहसे निकाल देता । ऐसेही कोई व्यक्ती भोलेपनमे विष खा लेता वह विष उस जीवकी साँस लेना बंद कर देता और उसके हंसको देहसे निकाल देता । इसीप्रकार कोई व्यक्ती गले मे फांसी लेकर पेड को झुलता वह फांसी उसको नरम नही करते आती । गले को फांसी लगाने कारण फांसी जीव को साँस नही लेने देती और जीव को तन के बाहर कर देती । ठिक इसीप्रकार राजयोग है । राजयोग जीव का मन,पाँच आत्मा,त्रिगुणीमाया और पारब्रम्ह निकाल देता और स्वयम् हंस मे ओतप्रोत हो जाता और जीव को सदा के लिये होनकाल से निकाल देता ।।।८३।।

म्हेर भई सतगुरु की ता दिन ।। सता उदे घट होई ।।
ज्यां दिन तिथ लिखी केवळ की ।। तामे कसर न कोई ।।८४।।

ऐसे राजयोगी सतगुरु की मेहेर हंसपर जिस दिन होती उसी दिन हंसके घट मे सतगुरु की सत्ता उदय हो जाती । सतगुरु की सत्ता जागृत हुई वह दिन कैवल्य प्रगट हो गया और होनकाल सदा के लिये छुट गया ऐसा वह दिन याने तिथी समजना । कैवल्य सतगुरु सत्ता प्रगट होने मे कोई भी कसर नही रही ऐसा समजना ।।।८४।।

जात जात आनंद घर जासी ।। आगे पीछे सोई ।।
मिनखा देहे बिन और देहे रे ।। ओ हंस धरे न कोई ।।८५।।

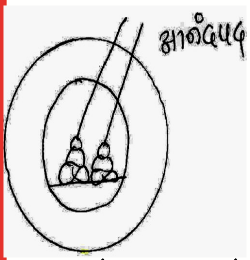

ऐसे हंस आगे पिछे आनंदघर जायेगे । एक तिथी पे सतगुरु की सत्ता प्रगट हुयेवे सभी हंस एकही साथ आनंदघर जायेगे ऐसा नही । आनंद घर सबके सब जायेगे परंतु कोई पहले जायेगे और कोई पिछे से जायेगे परंतु सत्ता प्रगट हुवावा हंस आनंद घर नही जाता तबतक वह होनकाल मे जो सब से भारी देह है ऐसा मनुष्य देह ही धारन करता । वह अन्य कोई देह धारन नही करता ।।।८५।।

ना धणी याप करे नही पाले ।। तीन लोक मे कोई ।।
पार ब्रम्ह लग पूज्यो चावे ।। ओ असो पद होई ।।८६।।

सत्ता प्रगट हुई है ऐसा संत पर तीन लोक १४ भवन तथा ३ ब्रम्ह के १३ लोको मे कोई

भी मालिकी नही बताता । उलटा पारब्रम्ह पकडकर पारब्रम्हतक के सभी पराक्रमी मायावी देवता, देवीयाँ ऐसे सत्ताधारी हंस को पुजना चाहते ऐसा यह अद्‌भुत पद है ।।।८६।।

केवळ बीज सब्द ओ कहिये ।। सता जन घट जागे ।।
ओर सब्द सब माया रूपी ।। ध्यान समाधी लागे ।।८७।।

घटमे सत्ता जागृत होती वही शब्द सतस्वरुप केवलका सच्चा बीज है । दुजे शब्द जिनसे घटमे सतशब्द जागृत नही होता वे सब शब्द मायारुपी है । उन शब्दोसे लाखो वर्षतक माया की ध्यान लगेगा एवम् अनेक वर्षतक मायाकी समाधी लगेगी परंतु हंस का काल नही छुटेगा । ऐसे सतशब्द छोडकर सभी शब्द यह मायारुपी है यह ब्रम्हरुपी भी नही ऐसा समजो ।।।८७।।

ब्रम्ह रूप सो सब्द कहावे ।। सो सोंहँ घट माही ।।
होण काळ सुं उत्पत्त याँकी ।। सत्त सब्द ओ नाही ।।८८।।

जीवब्रम्ह रुप शब्द कहते है वह सोहम शब्द है । वह सोहम शब्द हर घटमे साँस मे है । साँस सोहम शब्द,ओअम शब्द और अजप्पा चेतन ऐसे तीन पैलू का बना है । इसप्रकार हर मनुष्य के घट मे सोहम शब्द है । वह शब्द होनकाल से जन्मा है वह सोहम शब्द सतशब्द नही है । ।।८८।।

पार ब्रम्ह केवळ कहे कोई ।। होण काळ के तांई ।।
तां सुँ सब्द आद ओ ऊपज्यो ।। जिंग सब्द घट मांई ।।८९।।

होनकाल को पारब्रम्ह केवल ऐसे कुछ संत कहते है । ऐसे अजप्पा पारब्रम्ह से प्रथम जिंग शब्द उत्पन्न हुवा है । वह भी सतशब्द नही है । वह शब्द होनकाल पारब्रम्ह मे ही है यानेही घट मे ही है ।।।८९।।

तां की सता देहे आ कहिये ।। सो बेराट कहावे ।।
जाँ मे सब्द अनाहद ऊपनो ।। सो ब्रम्हा मन भावे ।।९०।।

इस जिंग शब्द की सत्ता घटतक ही है मतलब होनकाल के खंड–ब्रम्हंड के बेराटतक ही है । बैराट के परे की नही है । इस जिंग शब्द से अनहद शब्द उत्पन्न हुवा यही अनहद शब्द ब्रम्हा के मन को प्यारा लगता है । यह अनहद शब्द जिंग से जनमता इसलिये यह शब्द माया है वह सतशब्द नही है ।।।९०।।

तामे नाद ऊपनो आई ।। सोहँ नाभ कवळ मे आयो ।।
रग रग रूँम आतमा पाँचुं ।। चेतन होय सुख पायो ।।९१।।

उस अनाहद शब्द से नाद उत्पन्न हुवा और नाद से सोहम उत्पन्न हुवा । सोहम नाभकवल मे आया । सोहम से देह की रुम–रुम तथा पाँचो आत्मा चेतन हुई । हंस ने उसका देह और पाँचो आत्मा चेतन होने पश्चात देह से पाँचो विकारो के सुख लिये । सोहम् शब्द से माया के विकार के सुख प्रगट हुये मतलब माया प्रगट हुई इसलिये अनाहद और सोहम्

शब्द यह भी सतशब्द नही है ।।।९१।।

सोहँ सब्द सुं उत्पत्त सारी ।। जो मुख बोल सुणाया ।।
सत्त स्वरूप की सत्ता न्यारी ।। सो केहे किणिहन पाया ।।९२।।

मुखसे बोलनेवाले सभी ५२ अक्षर यह ओअम शब्द से उत्पन्न हुये और यह ओअम शब्द सोहम शब्दसे उत्पन्न हुवा । घटमे प्रगट हुयेवे जिंग,अनहद,नाद,सोहम,ओअम यह मुँह से बोलकर बताये जाते मतलब जिंग यह मुखसे उच्चारण किये जाता,अनहद यह मुखसे उच्चारे जाता । जैसे जिंग,अनहद,नाद,सोहम,ओअम मुखसे उच्चारे जाता वैसे सतशब्द मुखसे उच्चारे नही जाता । ऐसा मुखसे उच्चारे न जानेवाला अखंडित शब्द यह सतशब्द है । वह सतशब्द सतस्वरुप है । उसकी सत्ता इन जिंग,अनहद,नाद,सोहम,ओअम के सत्ता से न्यारी है । वह सतस्वरुप की सत्ता किसी ने भी नही पायी ।।।९२।।

नाद अनाद जिंग सो सोहँ ।। सब ब्रम्ह माया होई ।।
ज्हाँ लग कथे बके सो ग्यानी ।। ज्याँ पद लख्यो न कोई ।।९३।।

अनाद चेतन तथा नाद,अनहद,जिंग,सोहम,ओअम ये सब शब्द ब्रम्ह माया है। जिसने सतपद लखा नही वे ज्ञानी नाद,अनाद,अनहद,जिंग,सोहम इन पदोका ज्ञान कथते,बकते ।।९३।।

क्या औतार पीर रिष साधु ।। सब ने ब्रम्ह बतायो ।।
पार ब्रम्ह निर्गुण लग पूंथा ।। सत्त को भेद न आयो ।।९४।।

जगत के अवतार,पीर,ऋषी तथा साधूवो ये सभी पारब्रम्ह निरगुण की भक्ति करके पारब्रम्ह पद तक पहुँचे और पारब्रम्ह का भेद जाने परंतु इन किसी मे भी सतपद पहुँचकर सतपद का भेद नही आया ।।।९४।।

के सुखराम दोस नही यामे ।। ना वामे सुण भाई ।।
आतो बिधी मिल्या हुवे कारज ।। ऊँच नीच के माई ।।९५।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज सभी अवतार,पीर,ऋषी तथा साधु जो होके गये तथा जो अभी है इन किसी मे भी दोष नही है ऐसा कहते है । यह विधी उनको मिली नही इसलिये उनका महासुख मे जाने का कारज नही हुवा । यह विधी मिलनेपर उंच रहो या निच रहो सभी का कार्य होता है ।।।९५।।

अेक बात कहूं सब माही ।। जे कोई समझे भाई ।।
इण नाका सुं चुक गया बुधी ।। आ फिर मिले न काई ।।९६।।

इसलिये एकबार ध्यान देकर समजो । अगर आज इस नाके से चुक गये तो पुन: वह विधी कभी भी नही मिलेगी ।।।९६।।

ज्यां से हंस ऊपनो आदु ।। सो तो पिता कहावे ।।
माया आद हंस की जोरूं ।। मुरख भेद न पावे ।।९७।।

हंस जिससे आदि मे उत्पन्न हुवा वह होनकाल पारब्रम्ह हंस का पिता है और इच्छा यह माता है । उस होनकाल पारब्रम्ह और इच्छासे रिध्दी–सिध्दी यह माया जनमती । यह रिध्दी–सिध्दी माया आदिसे ही हंस की पत्नी है । ऐसी रिध्दी–सिध्दी जीवकी पत्नी है वह सतस्वरुप सतगुरु नही है । यह रिध्दी–सिध्दी पत्नी जैसे देह की पत्नी पाँच इंद्रियो के सुख देती वैसे जीव को वह रिध्दी–सिध्दी कुल मे ही रखेगी और माया के परचे चमत्कार के सुख देगी । वह सतगुरु के समान सतविज्ञान का सुख नही देगी मतलब काल के मुख मे ही रखेगी । काल के मुख से नही निकालेगी । यह भेद मुरख जीव नही समजता ।।।९७।।

यां दोना सुं अगम अगोचर ।। सत स्वरूप सुण होई ।।
रिध न सिध्ध नही संग वांके ।। ग्यान रूप रंग जाणो ।।९८।।

ऐसे माया माता और ब्रम्ह पिता इन दोनोसे सतस्वरुप अगम है,अगोचर है । उस सतस्वरुप मे रिध्दी–सिध्दी यह माया नही है । उस सतस्वरुप मे विज्ञान ज्ञान है । इसीप्रकार सतस्वरुपी संतमे रिध्दी–सिध्दी नही रहती । सतस्वरुपी संत मे विज्ञान ज्ञान रहता । उस संत का रुप, रंग रिध्दी–सिध्दी का नही रहता । उस संतका रुप,रंग विज्ञान ज्ञानका रहता यह जानो ।।९८।

ग्यान ही कला ग्यान बल वांके ।। ग्यान रूप रंग जाणो ।।
ग्यान ही खाण पीण सुख सारा ।। ग्यान देहे बखाणो ।।९९।।

जैसे जगत मे गृहस्थी और बैरागी रहते है । गृहस्थ पाँच सुख लेता परंतु बैरागी यह पाँच सुख नही लेता । वह ज्ञान का सुख लेता,उसका खाना–पिना सब ज्ञान का रहता । वैसेही सतस्वरुप वैराग्य विज्ञानी रिध्दी–सिध्दी के परचे चमत्कार के सुख नही लेता । वह वैराग्य विज्ञान के सुख लेता । उसके पास विज्ञान की सत्तकला रहती । उसका रुप,रंग विज्ञान ज्ञान का रहता । वैराग्य विज्ञान यही उसका बल रहता । उसका खाना–पिना विज्ञान वैराग्य का रहता । उसका देह विज्ञान ज्ञान का रहता । उसके सभी सुख विज्ञान वैराग्य के रहते । वह सुख माया–ब्रम्ह के ज्ञानी,ध्यानी को नही समजते । वह सुख जिसमे सतस्वरुप प्रगट होता उसीको समजता ।।।९९।।

आणंद रूप पद वो अेसो ।। नकल कही म्हे आणी ।।
माया ब्रम्ह सकळ ज्युं धंधा ।। ज्यूँ जग च्यारूं खाणी ।।१००।।

आनंदपदी संत कैसे रहता उसकी नकल वेदी वैरागी यह है । उसकी असल मुख के शब्दों से बताते नही आती । अब माया ब्रम्ह असल में कैसे है?यह समझेंगे । जगतमें जरायुज,अंडज, उद्वीज व अंकुर ये ४३२००००साल की ८४००००० योनी की चार खाण है ।।।१००।।

उपजे खपे नही थिर कोई ।। सुख दुख सब ही पावे ।।

पार ब्रम्ह लग हे दु:ख लारे ।। कम जाफा होय आवे ।।१०१।।

इन चारो खाण में उपजना,मरना चल रहा है । उपजने खपने से मुक्त ऐसा स्थीर याने अमर कोई नही है । उन चारो खाणो में जीव सुख-दु:ख दोनो पा रहे है । कुछ जीव पारब्रम्ह जो स्थिर पद है । वहाँ तक भी पहुँचते । वहाँ कुछ समय रहते फिर निचे माया में आकर तीन लोक के चार खाण में उपजते । इसप्रकार पारब्रम्ह के स्थिर पद में पहुँचने के बाद भी दु:ख पिछे के पिछे ही लगे रहते । इसप्रकार जीव कम जादा सुख-दु:ख भोगते रहता ।।।१०१।।

जन सुखराम साच मुख भाक्यो ।। बाधा रखिन काई ।।
केवळ मत समझ परे पेली ।। सोनर समझे आई ।।१०२।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज ज्ञानी,ध्यानीयों को कहते है,मैंने जो जो सत्य है वह बोला हुँ,उस में कोई कसर नही रखी । मेरे इन वचनों को माया ब्रम्ह के परे जिसका मत है ऐसा केवली मतवाला मनुष्य ही समझेगा ।।।१०२।।

ओर सकळ जग मान न सक्के ।। केवळ मत्त बिन कोई ।।
आगे लारे समझ हुवे केती ।। नेक न भ्यासे सोई ।।१०३।।

जिन्हे केवल मत नही है ऐसे जगत के ज्ञानी,ध्यानी,नर-नारी मेरा ज्ञान समझ नही सकेगें । केवल के समझ के सिवा माया ब्रम्ह की कितनी भी आगे-पिछे की समझ रही तो भी मेरा ज्ञान जरासा भी समझ में नही आयेगा ।।।१०३।।

अेक अर्थ म्हे खोल बताऊं ।। प्रगट सुणज्यो सारा ।।
पार ब्रम्ह आणंद पद ता को ।। केहुं बिध भेद बिचारा ।।१०४।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज आगे कहते,पारब्रम्ह तथा आनंदपद का भेद तथा विधी समझनेके लिये एक और जगत का प्रगट दाखला खोलकर बताता हुँ । वह सभी ज्ञानी,ध्यानी,स्त्री,पुरुष ध्यान देके सुणो ।।।१०४।।

ज्युं जग किसब कळा बिध सारी ।। यूं रिध सिध्ध सब होई ।।
सत्त बेराग बिग्यान कहावे ।। ज्यूं आणंद पद जोई ।।१०५।।

जैसे जगतके गृहस्थी लोगोंके पास अनेक प्रकारके हुन्नर और कला रहती है । वैसे ही माया ब्रम्हके संतके पास रिद्धी-सिद्धीकी अनेक प्रकारकी पर्चे-चमत्कारकी कलाये रहती । जगतमें जैसे वेदी वैरागी साधु रहता है । उसके पास वेदका भाँती-भाँती ज्ञान रहता । इसीप्रकार सत वैराग्य विज्ञान आनंदपदके संतके पास विज्ञान ज्ञान भाँती-भाँती प्रकार का रहता ।।।१०५।।

पुर्ण ब्रम्ह कहो तुम केवळ ।। तामे रिध सिध सारी ।।
ज्यूं कोयी स्हेर माँय सब सस्तर ।। नाँ नाँ बिध का भारी ।।१०६।।

जिस पुर्ण ब्रम्ह को तुम केवल कहते हो । उस में माया नही है ऐसा कहते हो परंतू उसमें

ही तो सारी रिद्धी-सिद्धी भरी है । उसीसे तो सारी रिद्धी-सिद्धी जगत में प्रगट होती है । जैसे कोई शहर में नाना बिध के शस्त्र रहते,वह शस्त्र बाहर नही दिखते परंतू लढाई छेड्नेपर वह शस्त्र बाहर निकलते । जैसे वह शस्त्र जगत में ही रहते और लढाई छेड्नेपर ही निकलते, इसीप्रकार रिद्धी-सिद्धी पुर्ण ब्रम्ह में ही रहती । वह पूर्ण ब्रम्ह के ज्ञानीयों को यह समझ रहती । वह ज्ञानी जररुत पड्ने पे उसका पर्चे चमत्कार के रुप में उपयोग करता । परंतू विज्ञान यह शहर में जैसे शस्त्र रहते वैसा जगत में नही रहता । जैसे राईट बंधु में विमान का विज्ञान ज्ञान प्रगटा ।।।१०६।।

सब ही के सब जक्त मे होई ।। अेक बिध्ध आ नाही ।।
जो बिग्यान केहुँ म्हे तुम कूं ।। तां की समझ न मांही ।।१०७।।

वह विज्ञान जगतके एखाद मनुष्यमें प्रगट होता । सब में ऐसे विज्ञानकी समझ नही रहती । इसीप्रकार माया और ब्रम्हके सभी ज्ञानीयोंके पास रिद्धी-सिद्धी रहती,परंतु सतस्वरुप के विज्ञान की समझ नही रहती । वह विज्ञान की समझ जिस में सतकला प्रगट हुयी है उसी में रहती ।।।१०७।।

युं औतार ब्रम्ह नही जाणे ।। सत स्वरूप के तांई ।।
इनके कळा रिध सिध होई ।। ज्यूं लस्कर जग मांई ।।१०८।।

वैसे ही ये अवतार और ब्रम्ह ये भी उस सतस्वरुप को नही जानते । अवतारों की कला रिद्धी -सिद्धी की है । जिस प्रकार से संसार में राजाके पास लष्कर होती है । उसीप्रकार अवतारों के पास रिद्धी-सिद्धी होती है ।।।१०८।।

ज्युं बिग्यान रूप जन जग मे ।। तिनके सता कहावे ।।
और किसब जुग को कुछ नाही ।। ना ऊस पद मे मावे ।।१०९।।

जैसे जगत में कोई विज्ञानी(शास्त्रज्ञ)बनता । उस विज्ञानी की चाल तुम्हें बताता हुँ । उस विज्ञानी में संसार के उद्यमों के कोई भी हुन्नर नही रहते ना उसे कोई उद्यम आते ना उसे कोई उद्यम भाँते । उसे सिर्फ विज्ञान ज्ञान समझता,वही उसे भाँता । इसीप्रकार सतपद के संत में सतविज्ञान की ही सत्ता रहती । ऐसे सतपद के संत के सत्ता में रिद्धी-सिद्धी को पर्चे-चमत्कार करने के लिये कला नही प्रगटती ।।।१०९।।

युं सुखराम कहे सब सुणज्यो ।। सत भक्त बिध न्यारी ।।
तामे काळ रूप सो करणी ।। ग्यान द्रष्ट ऊर भारी ।।११०।।

इसीप्रकार आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज सभी जगत को ज्ञानी,ध्यानीयों को कहते है सतभक्त की विधी इन सभी रिद्धी-सिद्धीयों के विधीयों से न्यारी है । ऐसे सतभक्त में रिद्धी-सिद्धी के पर्चे-चमत्कार की काल रुप की करणीयाँ नही रहती । सतभक्त के उर में सतस्वरुप विज्ञान ज्ञान की भारी दृष्टी भरी रहती ।।।११०।।

पाप न पुन्न न माने अेकी ।। न कीया डंड लागे ।।

ऊलटा कर्म धर्म सो चावे ।। भाग हमारो ई जागे ।।१११।।

सतभक्तमें भारी सत्तविज्ञान दृष्टी रहती । उस विज्ञान समझके कारण वह पुण्य याने देवता के सुखोंके उच कर्म मानता नही तथा पाप याने नरक के दु:खोंके निच कर्म मानता नही । इन सभी कर्मोको वह कालके मुखकी माया मानता । इस उपरांत ऐसे सतज्ञानीने निच कर्म किये तो भी उसे लगते नही । इसलिये उसे नरक का दंड नही लगता । यह निच कर्म और धर्म जगत के उंच कर्मीय तथा उंच धर्मीय लोग करते नही । उन्होंने भी यह निच कर्म और निच धर्म करना ऐसे निच कर्म और निच धर्म चाहते परंतू वह करते नही,इसलिये ऐसे निच कर्म और निच धर्म सतपुरुषों ने करना ऐसे उलटा चाहते । सतपुरुषों ने निचकर्म और निचधर्म किये तो वह निचकर्म तथा निचधर्म उंच बन जाते । उंच बन जाने से सभी उंचे लोग उन धर्मो को और कर्मो को प्रेम से करते । संतो के यह धर्म और कर्म करने से निचकर्म का उंच कर्म बन जाता व उंच कर्म के गिणती में आता तथा निच धर्म का उंच धर्म बन जाता व उंच धर्मके गिणतीमें आता ऐसा भाग्य बदल जाता । कर्म-धर्म हलके भाग्यके बडे भाग्यवान बन जाते । इसलिये निच कर्म और उंच कर्म संतों से बनने पर अपने आपको भाग्यवान समझते ।।।१११।।

जो कोई चीज अर्थ सो लागे ।। तो सबही सुख पावे ।।
पांचुँ भोग आत्मा कुस होवे ।। दावो कोईन चावे ।।११२।।

जैसे जगतमें बडे पराक्रमी मनुष्यके काममें किसी की कोई चीज आई तो उसके सभी संबंधी लोग खुष होते वैसेही संत निचकर्म या निचधर्म करके पाँचो भोग लेता है और उसकी पाँचो आत्मा खुष होती है,तो माया और ब्रम्ह खुष होते है । जैसे बडे पराक्रमी मनुष्यके काममें आये हुये चीज को देनेवाला वापीस मॉगनेका दावा नही करता वैसे ही माया और ब्रम्ह ऐसे महापुरुषोंसे हुये वह निचकर्म और निचधर्म के प्रित्यर्थ नरक भोगवाने का दावा नही करता । ।।११२।।

घणी क्हाँ लग कहुं तुम तांई ।। जे देल कुंई ढयावे ।।
तो पण पाप न लागे जन कूं ।। वो हंस पदवी पावे ।।११३।।

मै सतस्वरुपी संत के पराक्रम की महिमा कहाँ तक करु?ऐसे संत के हाथ से कोई जीव भी मर गया,यहाँ तक की कोई मनुष्य भी मर गया तो भी उस संत को पाप नही लगता तथा उस मरनेवाले जीव को पदवी मिलती है । वह ८४००००० योनी के या अगती के दु:ख से मुक्त हो जाता है । उसे आगे चल के मनुष्य देह मिलनेपर सतशब्द की सत्ता मिलने का योग बनता और वह अमरलोक जाता ।।।११३।।

ताँ को सुणो भेद सब ग्यानी ।। जग दिष्टांग बताऊं ।।
राज जोग ओ राजा जे से ।। फिर जन को गुण लाऊँ ।।११४।।

सतस्वरुपी भक्तको पाप-पुण्य क्यों नही लगते?इसपर आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज

सभी जगत के ज्ञानीयोको कहते है की,मैं एक जगत का दृष्टांत देता हुँ । जैसे जगत में राजा रहता है वैसाही होनकालमे राजयोगी संत रहता है । इस दोनोमे गुण सरीखे रहते है । ।११४।

याँ दोना कुं डंड ना लागे ।। किसी रीत को कोई ।।
साहेब सोख भोग संभोगे ।। बेर न बांधे हे लोई ।।११५।।

राजा ने किसी स्त्री के साथ निच कर्म किये तो भी राजा को किसी भी प्रकार का दंड नही लगता । कारण राजा के उपर दंड देनेवाला राजा से बडा कोई नही रहता तथा राजा यही राज का सबसे बडा बलवान व्यक्ती रहता । उसके पास धन,लाव लष्कर,फौजफाटा सभी बल रहते । इसलिये उससे कोई बेर भी नही बांधता । इसीप्रकार केवली संत ने पर स्त्री के साथ हलके निचकर्म किये तो भी उसे माया ब्रम्ह दंड नही देते । सतस्वरुप संत में सत परमात्मा रहता । दुजे शब्दों में सतपरमात्मा याने ही केवली संत रहता । होणकाल में सतपरमात्मा से कोई भी बडा नही रहता । तथा यह भोग संत के प्राण ने नही लिया,संत में का सब का साहेब है उसने लिया । इसलिये माया और ब्रम्ह राजयोगी को दंड नही लगाते । सतस्वरुपी सतपरमात्मा से होणकाल में कोई बडा नही है । इसलिये उसने गलत भी किया तो भी माया और ब्रम्ह ऐसे राजयोगी से बेर नही बांधते ।।।११५।।

जो कोई चीज मंगावे राजा ।। खुसी हुवे घर सारो ।।
धिन धिन भाग सकळ युं केहे ।। अब कछु होणे हारो ।।११६।।

राजाने किसीसे कोई चिज मंगाई तो जिस के यहाँ से राजा ने चिज मंगाई वह तथा उसके घरवाले सभी खुष होते है और जगत के सभी लोग उसका भाग्य धन्य है ऐसा कहते और राजा उसका निश्चित भारी भला करेगा ऐसा जगत के लोग मन में समझते ।।।१६।।

हात घाल कर ले कुछ कांई ।। तो पण बुरोन माने ।।
बेटी बेन नार लग खेचे ।। जब लग रहे सब छाने ।।११७।।

राजा ने किसी से न मांगते सिधा घर में से हाथ डालकर कोई चीज लिया तो भी कोई कुछ भी नही कहता । यहाँ तक बहन,बेटी,नारी भी खींचकर ले गया तो भी वह बात उजागर नही होने देते । उस बात को छुपा रखते है । इसीप्रकार राजयोगीके गुण है । उससे निचकर्म से निचकर्म हुये तो भी माया और ब्रम्ह अपना भाग्य ही समझते ।।।११७।।

ज्यूं बेराग लियाँ कुळ दावा ।। सब जग का रद होई ।।
उलटा सकळ पूजणे लागे ।। दंड ना मागे कोई ।।११८।।

जैसे संसार में से कोई व्यक्ती वेद बैरागी बनता । उसके बैरागी बनने के पहले कुल के उसपर के लेने-देने के जो दावे थे,वह बैरागी बनते ही रद्द हो जाते वैसे जी जगत के,समाज के,गाँव के,राज के सभी दावे रद्द हो जाते । उलटे कुल के,समाज के,गाँव के,राज के सभी लोग उसे पुजना चाहते । उसके हाथसे दंड लगे ऐसा कुछ गलत हुवा तो

भी कुल,समाज,गाँव तथा राज उससे दंड नही मांगते । इसीप्रकार हंस माया और ब्रम्ह के कुल से न्यारा होकर सत बैरागी बनता । ऐसे सतबैरागी हंस से माया और ब्रम्ह यह कर्म के लेने-देने के दावे रद्द कर देते और दोनो भी सतबैरागी को पुजते । ऐसे सतबैरागी से होणकाल का दंड्नीय कर्म भी बना तो भी सतबैरागी को दंड नही देते ।।।११८।।

ब्हो बिध चीज खुवावे लायर ।। पांच भोग लग भाई ।।
ना बदले कुछ जीम्यो चावे ।। जन के घरे वे आई ।।११९।।

ऐसे वैरागी को नाना प्रकार के पकवान खिलाते है तथा उस वैरागी को पाँचो भोगोतक सभी सुख पहुँचाते है । इस सभी सुखों के देने के बदले में उस वैरागी के घरपर सुख पहुँचानेवाले उसके घरपर जाकर भोजनतक नही करते,इतनी उस वैरागी की मर्यादा पालते । ।।११९।।

युँ अे पाप पुन्न नही लागे ।। राज जोग कूं भाई ।।
ज्यूँ बेराग लिया सुण तूटे ।। दोय दंड इण काई ।।१२०।।

जैसे वैरागी के कुल के कुटूंब के तथा राजा के लेने-देने के दोनो दंड तुट जाते वैसे ही राजयोगी भी वैरागी के माया ब्रम्ह के पाप-पुण्य के दोनो दंड तुट जाते ।।।१२०।।

कुळ गिन्यात उलट कर पूजे ।। दावो करे न कोई ।।
भावे तिकण मते वे चाले ।। सब जग हजर होई ।।१२१।।

वैरागी कुल और जात के तथा जगत के लोगों को अच्छे नही लगते ऐसे मत से भी चला तो भी उस वैरागी पर तुने गलत किया ऐसा दावा कुल,जात तथा जगत के लोग नही करते उलटा उसके सनमुख होकर उसे पुजने को हाजीर होते ।।।१२१।।

राज दंड हासंल नही मांगे ।। ब्हो बिध पूजे आई ।।
बेटी धुराधुर सो देवे ।। राजा जना कूं भाई ।।१२२।।

इसीप्रकार राजाभी उस वैरागीसे दंड तथा कर नही माँगता । इसके पश्चात उसकी नाना विधीसे पुजा करता । कभी कभी कोई राजा ऐसे बैरागीको अपनी पुत्री तथा राजतक भी दे देता ।।।१२२।।

युं अे पाप पुन्न हुवे हाजर ।। दावो करे न कोई ।।
माया ब्रम्ह सकळ सो बंदे ।। को दंड ले कहुँ तोई ।।१२३।।

इसीप्रकार राजयोगी से पाप-पुण्य याने उंच-निच कर्म उसके हाथसे होने के लिये हाजर रहते तथा पाप-पुण्य के कर्मो का फल राजयोगी ने भोगाना चाहिये ऐसा पाप-पुण्य राजयोगी पर दावा भी नही करते । उस संत की माया और ब्रम्ह दोनो वंदना करते । पाप-पुण्य भोगनेवाले जगत में माया और ब्रम्ह ही है । इनके अलावा कोई भी नही है। राजयोगी को जब माया ब्रम्ह ही वंदना करते तो राजयोगी से पाप-पुण्य वो कैसे भोगवायेंगे ?।।१२३।।

अे तो सदा कहे धिन्न दोनू || दरसण जन को चावे ||
हाजर लियाँ खडा नित आगे || जो जन के मन भावे ||१२४||

यह माया ब्रम्ह दोनो भी राजयोगी को धन्य कहते तथा ऐसे राजयोगी को दर्शन की चाहना रखते । यह माया-ब्रम्ह राजयोगी के मन में सुहाता ऐसी चीजे लेकर नित्य हाजर खडे रहते । ||१२४||

नित आधीन ब्रम्ह सो माया || जन नही चावे काई ||
रिध सिध आण धरे क्हुँ च्रणा || पिन जन माने नाई ||१२५||

यह ब्रम्ह और माया ऐसे संतोसे नित्य आधीन रहते परंतू संत माया-ब्रम्हकी कोई चीज नही चाहता । यह माया-ब्रम्ह जन के चरणोंमें रिद्धी-सिद्धी तक लाकर रखते फिर भी संत माया-ब्रम्ह की बात नही मानते ।||१२५||

तां को सुणो भेद म्हे भाकूं || दिष्टांग देर सुणाऊँ ||
जिऊँ बिग्यान ऊपजे किस कुं || वो प्रसंग सुण लाऊँ ||१२६||

सब जगत माया-ब्रम्हसे रिद्धी-सिद्धी चाहते,रिद्धी-सिद्धी पाने के लिये करणीयाँ करते वही रिद्धी-सिद्धी माया-ब्रम्ह संतो के चरणोंमें लाकर डालते । फिर भी संत उनकी बात नही मानते,इसका क्या कारण है ? इसपर मै एक दृष्टांत सुणाता हुँ । जैसे जगत में किसी व्यक्ती को विज्ञान प्रगट हो गया है ऐसे व्यक्ती का प्रसंग लाता हुँ यह सुणो ।||१२६||

मा अर बाप सनमुख जायर || अरज करे आ जाई ||
प्रणो आप धन मो लेवो || तो नही माने काई ||१२७||

ऐसे विज्ञानी व्यक्ती को मॉ-बाप सामने से जाकर उससे अर्ज करते है की,मेरा धन ले,मेरा माल ले और विवाह कर ले । विज्ञानमें लिन हुवा हुआ व्यक्ती माँ-बाप की बात नही मानता। उसको इन बातों में आनंद नही आता। उसे विज्ञान में ही आनंद आता ।||१२७||

पुन प्रसाद सेज मे नित प्रति || प्रेम प्रीत सूं लावे ||
तां को नही कुछ भर कारण || पाँच भोग लग पावे ||१२८||

और पुन:सहज में प्रेम-प्रीत के साथ नित्यप्रती भोजन लाते । विज्ञानी सभी पाँच भोग तक भोग लेता परंतू विज्ञान के आगे इन चीजों को गुंजभर भी नही मानता ।||१२८||

ईऊं गत राज जोग की भाई || रिध सिध कळा न माने ||
हंसा हेत सेज तन मन लग || सिष सेवा सत्त जाणे ||१२९||

इसीप्रकार राजयोगीकी गती है । वह विज्ञान वैराग्यके सामने रिद्धी-सिद्धीकी कला गुंजकर भी नही मानता । ऐसे विज्ञान वैरागीसे जगत सहजमें प्रिती करता । उसके पास रिद्धी- सिद्धी है या नही यह देखके प्रिती नही करता । ऐसे विज्ञान वैरागीको

तन,मन,धन तक जगत के लोक अर्पण करते । उसके शिष्य उसकी सेवा करना अपना सत्त धर्म जाणते । ।।१२९।।

जिऊं संसार माहे जन हूवा ।। दावो मुदो न कोई ।।
ना कुछ रीज देण कूं माया ।। ना कुळ की पुछ होई ।।१३०।।

जैसे संसार में बैरागी होता उसपे कुल और जगत और राज का दावा,मुद्दा नही रहता वैसे ही उसके पास संसार के और कुल के लोगो को देने के लिये माया भी नही रहती तथा उसमें कुल के प्रती लगाव भी नही रहता ।।।१३०।।

कुळ सुं जोर न जग सुं दावा ।। राज धुराधर भाई ।।
इऊँ सत स्वरूप ब्रम्ह सेंई न्यारा ।। रिध सिध जोर ना माई ।।१३१।।

उसमे कुल तथा जगत का जोर नही रहता । इसलिये कुल तथा जग के जोर का कोई दावा भी नही करता । उसमे राजाका भी जोर नही करता । इसलिये राजाके जोर का भी कोई दावा करता नही । इसप्रकार सतस्वरुपी विज्ञानी रहता । वह माया-ब्रम्हके कुलसे न्यारा रहता । माया-ब्रम्हके पसारे से न्यारा रहता । होणकाल ब्रम्हसे न्यारा रहता । इसलिए उसमें रिद्धी -सिद्धीयों का पर्चे-चमत्कार करने का जोर नही रहता ।।।१३१।।

मार कूट अर त्रास बतावे ।। धन पदवी दे माया ।।
आ तो रित ब्रम्ह के घर मे ।। जिऊँ जग कुळ मे भाया ।।१३२।।

जैसे कुल में और जगत में मार-कुटकर तथा त्रास देकर धन या पदवी मिलती । इसीप्रकार का व्यवहार माया-ब्रम्ह के घर में है । माया-ब्रम्ह भी जगत के जीवों को मार कुटकर तथा त्रास देकर मतलब भारी-भारी कष्टसे क्रिया-करणी करने पर रिद्धी-सिद्धी का पद तथा धन देते है । वह करणी का बल खतम हुवा की वह जन जैसे पहले बिना रिद्धी-सिद्धी का था वैसा बन जाता है । ऐसा सदा सुख देनेवाला पद नही है । असत पद है ।।।१३२।।

सत स्वरूप सत्त जिऊँ होई ।। ग्यान दिष्ट सुण लीजे ।।
बिना ग्यान कोई जोर न जन मे ।। इयाँ ऊर निर्णो कीजे ।।१३३।।

सतस्वरुप यह माया-ब्रम्ह के समान असत नही है । वह सत है । उस में विज्ञान का पराक्रम है । उस में विज्ञान का जोर है,उसमें रिद्धी-सिद्धी इस माया का जोर नही है । वह विज्ञान सत है,एक बार संत में प्रगट हुवा की सदा सुख देनेवाला है । यह ज्ञान दृष्टीसे देखकर वह माया ब्रम्हसे कैसे न्यारा है ? यह ह्रदय में निर्णय करो ।।।१३३।।

के सुखराम सुणो सब ग्यानी ।। समज भेद ओ लीजे ।।
केवळ ब्रम्ह परे पद पूरण ।। ताँ को सिंव्रण किजे ।।१३४।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज सभी ज्ञानीयोंको समझाते है की माया-ब्रम्हमें भारी कष्टसे सुख मिलते वह भी सदाके लिये नही रहते और सतस्वरुपमें सदा बिना कष्टसे

सुख मिलते यह फरक समझो । इसलिये केवल पारब्रम्ह परेका पुर्ण आनंदपद है,उसका स्मरण करो । ।।१३४।।

पार ब्रम्ह लग हे दु:ख लारे ।। निर्भे मोख न होई ।।
जे तम मान सको नही भाई ।। तो भेद बताऊं तोई ।।१३५।।

पारब्रम्ह केवल में मोक्ष है परंतु निर्भय मोक्ष नही है । उस जन को समय से गर्भ में आने का दु:ख भोगना ही पड्ता । इसपे तुम्हारा विश्वास नही बैठता तो मैं पारब्रम्ह कैवल्य पाने के बाद गर्भ में आना पड्ता । यह जगत का प्रसंग बता के समझाता हुँ ।।।१३५।।

जग को देर दाखलो तोंने ।। सत ओ न्याव सुणाऊँ ।।
जिऊं नर धंदो करे जग माहीं ।। अेक कहे तज जाऊँ ।।१३६।।

जगत का दाखला देकर पारब्रम्ह का सत न्याय क्या है ? यह बताता हुँ । जैसे जगत में दो व्यक्ती धंदा कर रहे थे । उसमे से एक व्यक्तीने धंदा त्याग दिया ।।।१३६।।

वेसो ब्रम्ह जीव वो कहिये ।। फंद करे सो भाई ।।
वो तज काम नचीतो हूवो ।। धोको कछु न माई ।।१३७।।

धंदा करनेवाले व्यक्तीके धंदेके सभी फंद जैसे माल लाना,बेचना,उधारी वसुल करना, सरकारका कर भरना यह शुरु है । धंदा करनेवालेको घाटेका धोका बना है । इन सब बातोंसे धंदा करनेवाला व्यक्ती चिंतीत है परंतु जिसने धंदा त्याग दिया,उसके माल लाना,बेचना, उधारी वसुल करना यह सभी फंद कट गये है । उसे नफा-तोटे का थोडा भी धोका नही रहा है । उसे धंधे की कोई प्रकार की चिंता नही रही । वह निश्चित हो गया है ।।।१३७।।

अेके दु:ख काज फंद त्याग्या ।। कहे मुज धंदो न होई ।।
केवळ ब्रम्ह सुणो इण पड ।। न्हेचे दु:ख न कोई ।।१३८।।

जैसे एक को धंधा करते आता था । फिर भी त्याग दिया वैसे ही एकने धंधे के काम में अनेक दु:ख के फंद है यह दु:ख के फंद मुझसे होते नही इसलिये धंधा बंद कर दिया । केवल ब्रम्ह इन दोनो के धंधे त्यागने से समान है । धंदा त्यागने के बाद दोनों जैसे जिश्चित हो गये वैसेही केवली ब्रम्ह संत माया के करणीयों के कष्ट से निश्चित होते है ।।।१३८।।

सब फंद काट नचीता हूवा ।। कसर रही नही आई ।।
अेक जात कुळ छूटे नाही ।। ग्यान न ऊगो माई ।।१३९।।

दोनो धंधे के दु:ख का फंद काट के निश्चिंत हुए । निश्चिंत होने में कोई कसर नही रही परंतू दोनों का भी जात व कुल नही छुटा । वह वेद के ज्ञानी नही हुये वह वैरागी नही बने। इसीप्रकार केवल ब्रम्ह बनके मायाके फंद छुटते परंतू माया-ब्रम्ह का जात व कुल नही छुटता और सतस्वरुप विज्ञान प्रगट नही होता ।।।१३९।।

जब किणी समे न्यात मे च्रचा || काम पडयो बिध आणी ||
जब वां घेर न्यात कु पकड्यो || धन दियो ब्हो आणी ||१४०||

जब किसी समय पे कुल,जात में धन,माल का काम पडा तो धंदा बंद कर देनेवाले दोनो भी उद्‌मयी कुल से अलग न होने कारण कुल परिवार तथा न्यात को अपने पास का धन निकाल देते है । यही धंदा छोड के बैरागी बनता तो कुल से न्यारा रहता । उसे कुल परिवार तथा जात से कोई लेने-देनेका संबंधही नही रहता था तथा उसके पास देने को धन भी नही रहता था । इसकारण कुल में आकर कुल का काम नही करता था |||१४०||

इंऊं ब्रम्ह होय जीव हुवे भाई || सुणो सकळ जग ग्यानी ||
जो बेराग ग्यान पद होतो || तो नही पडतो आनी ||१४१||

इसीप्रकार होणकाल पारब्रम्ह केवल पदमे गए हुए ब्रम्ह संतका होता । इस ब्रम्ह संतके पास सतविज्ञान नही होता । इस ब्रम्ह संतके पास पारब्रम्हकी रिद्‌धी-सिद्‌धी होती । जब धरतीपर रिद्‌धी-सिद्‌धीके बल पे राक्षस जगत को दु:ख देते तब यह ब्रम्ह संत पारब्रम्ह छोड के जगतमें आकर जीव बनते और अपनी रिद्‌धी-सिद्‌धी जगत में इस्तेमाल करते । जगत मे आकर ब्रम्हका जीव बनने के कारण जगत मे गर्भ तथा आवागमन का दु:ख भोगते । यही संत ने वैराग्य विज्ञान पद प्रगट किया होता तो वह जगतमे जीव बनके नही आता था । उसके पास सतज्ञान रहता था । सतज्ञान दृष्टीसे उसे माया ब्रम्हके सभी खेल असत दिखते थे । बिना सार के दिखते थे । यह राक्षसोमें अनीतीका जोर लाने का कार्य माया ब्रम्ह ने ही किया यह ज्ञानके न्यायसे दिखता था । माया-ब्रम्ह ही कुछ जीवो को राक्षसी रिद्‌धी-सिद्‌धी देते और लढनेके लिए बलवान बनाते तो कुछ जीवो को दैवीक रिद्‌धी-सिद्‌धी देते और राक्षसो को मारने को उकसाते । यह उनका नित्य खेल है । यह सतस्वरुपी विज्ञानीको सतज्ञानके दिव्यदृष्टीसे समझते रहता । इसलिए वह इनके फंदोमें पड्ते नही । उलटा इनके फंदोसे निकलने को जोर लगाते । यह दिव्यदृष्टी होणकाल केवल मे पहुँचे हुए ब्रम्ह को आती नही । ||१४१||

ना गिन्यात लेत सो माही || जे याँ को मन चावे ||
इऊं सत स्वरूप की कळा प्रगटया || आवागवण न आवे ||१४२||

जैसे कुल से और जात से निकले हुए वैरागी का मन कुल में कष्ट पड्ने पर वापीस कुल में जाने का हुवा तो भी कुल के तथा जात के लोग उसे कुल में लेते नही है । जैसे वैरागी को कुल में लेते नही । इसलिए उसपे संसार के लेने-देने के फंद पड्ते नही । ऐसेही सतस्वरुपी वैरागी को माया-ब्रम्ह लेता नही । इसलिए उसे आवागमन का फंद लगता नही |||१४२||

निर्भे मोख ग्यान पद पायाँ || ब्रम्ह हुवाँ सुण नाही ||

ओ तो अंग अेक सुखरूपी ।। रहे कुळ पंगत मांही ।।१४३।।

इसप्रकार महासुख का निर्भय मोक्ष पद केवल पारब्रम्ह का ब्रम्ह बनने से प्रगट नही होता । निर्भय मोक्ष पद सतस्वरुप का विज्ञान प्रगटने पर ही होता । यह केवल ब्रम्ह होना यह एक ब्रम्ह बनने का सुखरुपी भाव रहता । जैसा धंधा छुटने से या छोड देने से धंधे के फंद तुटे इसका सुख मिलता वैसा माया के करणीयों के कष्ट छुट गये,इसका सुख उसे मिलता । जैसे छुट जाना या छोड्नेवाले का कुल कुटूंब नही छुटा । इसीप्रकार केवल पारब्रम्ही का माया ब्रम्ह का कुल नही छुटता । वह माया ब्रम्ह के कुल में नही रहता ।।।१४३।।

आवा गवण मिटे नही यांकी ।। ओ फिर किसब कमायो ।।
ऊण तो सतस्वरूप नही पायो ।। वो कुळ तज नही आयो ।।१४४।।

जैसे धंधेवालेने धंधा छोडा परंतु कुल नही छोडा,कुलमें ही वास रखा । वैरागी नही बना,उसमें वैराग्य नही आया । इसकारण प्रसंग आनेपर धंधा छोडा हुवा व्यक्ती फिरसे धंदा डालके धंधेमें लग ही जाता । उसीप्रकार कैवल्य पारब्रम्हीका होता । वह कैवल्य पारब्रम्ही सतवैरागी नही बना । उसमे सतवैराग्य प्रगट नही हुवा । इसकारण वह पारब्रम्ही प्रसंग आनेपर फिर से माया के कर्म–कांड में लग ही जाता । इसकारण उस पारब्रम्ही संत का आवागमन नही मिटता । होणकाल से मुक्त होने का कारज नही होता ।।।१४४।।

ब्रम्ह होण की दोय ऊपायाँ ।। सुण पिंडत व्हुँ ग्यानी ।।
जो दोनू हंसे बस भाई ।। प्रगट नही जग छानी ।।१४५।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज पंडितो को कहते है की केवली पारब्रम्ही होने के दो उपाय है । दोनों उपाय हंसो के हाथ में है । वे दोनो भी उपाय प्रगट है । छिपे नही है ।।।१४५।।

ज्यूँ धन क्षिण स्हेज मे हुयगो ।। दमडी अेक न होई ।।
दूजे सर्ब त्याग धन दीयो ।। कवडी रही न कोई ।।१४६।।

जैसे जगत में दो मनुष्य है । एक मनुष्य का धन उसके न समझते सहज में खतम हो गया और एक पैसा भी नजदिक नही रहा तथा दुजे ने सब धन त्याग दिया तथा एक कवडी खुद के नजदिक नही रखी ऐसे दोनों व्यक्ती धन हीन हो गये ।।।१४६।।

दोनु सुखि धंध फंद तूटा ।। मन निर्मळ हुवो भाई ।।
युं महा प्रळे लग सर्ब सिष्ट ।। आ मिले ब्रम्ह मे जाई ।।१४७।।

एक व्यक्ती धन नही है,इसलिये धंधा नही कर पाता तो दुजा व्यक्ती धन का त्यागन किया इसलिये धंधा नही करता । इसकारण दोनोंके धंधेके फंद तुट गये । धंधा ही नही है इसलिये धंधो के फंद से मन मुक्त हो गया और निर्मल हो गया । इसप्रकार एक ने माया का फंद छोड के ब्रम्हज्ञान पाके ब्रम्हपद पाया तो एक महाप्रलय तक मायाके क्रिया

कर्म करते रहा । महाप्रलयमें आकाश,वायु,अग्नी,जल,पृथ्वी सब मिट गये इसलिये माया के कर्मकांड मीट गये महाप्रलय होनेकारण सृष्टी नही रही,इसलिये सृष्टी में आगे कर्मकांड करने का देह नही मिला और प्राण महाप्रलयके विधी अनुसार पारब्रम्ह में जाकर पारब्रम्ही बन गया । इसप्रकार यह दोनों भी मायाके कर्म कांडोसे मुक्त होकर निर्मल बन गये और पारब्रम्हमे पारब्रम्ही बनके रहने लगे । इसप्रकार पारब्रम्ह का ब्रम्ह बनने की विधी प्रगट कर लो या महाप्रलय तक रुके रहो । अपने आपसे सहजमें ब्रम्ह हो जाते,कोई ब्रम्हज्ञान साधनेकी जरुरत नही पड्ती ।।।१४७।।

निर्धन दोंय रीत सुं होवे ।। सो हंसा बस जाणो ।।
ओ दिष्टंग ग्यान किम सीखे ।। इऊँ आ कळा पिछाणो ।।१४८।।

जैसे निर्धन होने के दोनो भी रित हंस के वश में है । एक गाफिल रहकर धंधा बिना सोच समझ से करो,अपने आपसे धन खुट जायेगा और निर्धन बन जाओगे या धन को त्याग दो । इसीप्रकार महाप्रलयतक सतपरमात्माने जो देह दिया वह सतज्ञान में लगावो मत,माया के कर्मकांड में डालते रहो,उससे सुख दु:ख आते रहेगे । एक दिन महाप्रलय आयेगा जगत मिट जायेगा । जगतकी कर्मकांड की सभी विधीयाँ अपने-आपसे खतम हुये रहेंगी और हंस जगत छोड्कर पारब्रम्ह में जायेंगा व वहाँ ब्रम्ह बन के रहेगा । इसप्रकार ब्रम्ह बनने की एक रीत है तो दुजी कर्मकांड करो मत ब्रम्हज्ञान उरमें धारो और ब्रम्ह बन जावो । यह दोनों रीत हंसके हाथ में ही है । जैसे जगत के मनुष्य दो प्रकार से निर्धन हुये । निर्मल हुये परंतू वैराग्य ज्ञान नही सिखे । इसकारण वैराग्य ज्ञान का सुख इन दोनो को भी धंधा छोड्के या छुटके निर्मल होने उपरांत भी नही मिला । इसीप्रकार पारब्रम्ह के ब्रम्ह दो प्रकार से बने परंतू इन दोनो में सतज्ञान प्रगट नही हुवा । इसलिये इन दोनो को भी सत्तकला का सुख नही समझा । ।१४८।

मेरी मेहेर बिना कोई हंसो ।। आणंद लोक न जावे ।।
ज्यूं कोई ग्यान न सीखे गुर बिन ।। कोट क्रम कर आवे ।।१४९।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि,मेरे सिवा यह सत्तकला कोई भी हंसमें प्रगट होती नही । इसलिये अन्य कोई उपायोसे हंस आनंदलोकमें जाता नही । जैसे जगतमें करोडो उद्‌यम करनेवाले जीव है परंतु वेदका ज्ञान सिखना है तो वैरागी गुरुके ही पास जाना पड्ता । वह ज्ञान माता-पिता या राजासे नही मिलता । इसीप्रकार सत्तज्ञान माया-ब्रम्हके पास जाकर करोडो प्रकारके भाँती भाँतीके क्रिया कर्म किये तो भी प्रगट नही होता सतज्ञान प्रगट करवाना है तो मेरे पासही आना पडेगा । माया-ब्रम्हके पास जाकर सतज्ञान प्रगट नही होता ।।।१४९।।

यूं सत लोक पठाऊ म्हेई ।। ओर ऊपाय न काई ।।
जिऊं गुर बेद नाही ।। से कर किमत जग माई ।।१५०।।

जैसे अनेक हिकमत करके वेद नही सिखे जाता । वेद सिखना है तो वेद के जानकार गुरु के पास ही जाना पडता । वैसे ही अनेक कर्मकांड और ज्ञान-ध्यानसे सतविज्ञान प्रगट नही होता । सतविज्ञान प्रगट नही हुवा तो सतलोक नही जाते आता । इसलिये सतलोक जाना है तो सतविज्ञान प्रगट करना पडेगा । और वह सतविज्ञान का उपाय मेरे पास है । उस सतविज्ञान से मैं हंसो को सतलोक भेजता हुँ । इस सतविज्ञान के सिवा सतलोक जाने की जगत मे और कोई उपाय नही है ।।।१५०।।

ब्रम्हा बिस्न महेसर सत्ती ।। फिर औतार कहावे ।।
इन की मेहेर धन्न न निर्धन लग ।। ग्यान दिष्ट नही पावे ।।१५१।।

जगत में ब्रम्हा,विष्णू,महेश,शक्ती तथा अवतार है । उनकी मेहेर धनवान करने तक रहती तथा कुमेहेर धनहीन करने तक रहती । इनके मेहेरसे सत्तपद पाकर सतज्ञान की दृष्टी नही आती । घट में सतज्ञान की समझ मेरे ही मेहेर से आती ।।।१५१।।

अेतो सरब हमेसा भाई ।। कुळ ऊजीयागर होई ।।
हम कुळ छाड हुवा सत रूपी ।। रिध सिध रखुँ न कोई ।।१५२।।

यह ब्रम्हा,विष्णू,महेश,शक्ती तथा अवतार जीवों को माया-ब्रम्ह के रिद्धी-सिद्धी के पर्चे चमत्कार देकर माया-ब्रम्ह के कुल में ही रखनेवाले है । यह माया-ब्रम्ह के कुल में रखने का काम प्रगट रुपसे करते है । मैं माया-ब्रम्ह के कुल को त्यागकर सतस्वरुपी वैरागी बना हूँ । मुझे माया-ब्रम्हके कुलमें जीवोंको कालके अनंत कष्ट पडते यह ज्ञान से समझता । इसलिये मैं ज्ञानसे समझता । इसलिये मैं ज्ञानसे न्याय करके जिसकारण जीव कालके चपेट में आकर दु:ख भोगते ऐसे पर्चे-चमत्कार करनेवाले रिद्धी-सिद्धीको साथमें रखता ही नही ।।।१५२।।

गुर सो पदवी हमारी कहिये ।। वे कुळ राजा होई ।।
बिना भेद कोई मोहे न जाणे ।। ग्यानी पिंडत लोई ।।१५३।।

जैसे जगतमें राजा और वेदका गुरु रहता । राजाको सब प्रजा जानती परंतु वेदके गुरुको कुछ ही लोग जानते इसीप्रकार ब्रम्हा,विष्णू,महेश,शक्ती तथा औतार यह होणकाल के राजे है । जैसे प्रजाको राजासे राजा तक के सुख मिलते,ऐसे ही ब्रम्हा,विष्णू,महेश,शक्ती तथा औतारोसे होणकाल तक के माया के सुख मिलते । राजासे वेदके ज्ञान का सुख नही मिलता । वह वेदके गुरुसे ही मिलता । इसीप्रकार सतज्ञानका सुख सतगुरुसे ही मिलता । वह पदवी मेरी है वह सतगुरु की पदवी ब्रम्हा,विष्णू,महेश,शक्ती तथा अवतारो की नही है । यह ज्ञानी पंडीत तथा जगत को समझ नही है । इसलिये यह जगत ज्ञानी,पंडीत मुझे सतगुरु करके जानते नही । वह ब्रम्हा,विष्णू,महेश,शक्ती तथा अवतारो का तथा उनके साधुओंको ज्ञान बतानेवालोंको सतगुरु मानकर बैठते । जब ब्रम्हा,विष्णू,महेश,शक्ती और अवतार यह खुद सतगुरु नही है,यह होणकालके राजे है । जैसे जगतमें राज्योका

राजरीतीका ज्ञान बतानेवाले राजा राजरीती का उद्‌यम सिखाते । ये वेद ज्ञान सिखानेवाले गुरु नही होते । इसीप्रकार जब जगतमें राज की राजरीत बतानेवाले राजे गुरु नही बन सकते,तो ब्रम्हा,विष्णू,महेश,शक्ती और अवतार तथा इनका ज्ञान बतानेवाले साधू गुरु कैसे हो सकते?यह समझ ज्ञानी,पंडीत तथा जगतमें रहती नही । इसीकारण ब्रम्हा, विष्णू,महेश,शक्ती और अवतार तथा उनके साधूको गुरु मानकर उसी में लगे रहते । सतस्वरुप पद यह होणकाल पदका आदिसे गुरु है वह सतस्वरुप गुरु प्रगट रुपसे मुझमें आया है । इसलिये मैं होणकाल सृष्टीका याने सर्व जगत गुरु बना हूँ । इसकारण गुरु पदवी मेरी है । ब्रम्हा,विष्णू,महेश,शक्ती तथा अवतार और उनके साधू जो गुरु बनके बैठे है उनकी यह गुरु पदवी नही है परंतू जगतके लोगोंको ज्ञानी पंडीतोको ब्रम्हा,विष्णू,महेश, शक्ती और अवतार यह होणकाल के राजे है और मैं सतस्वरुप का सतगुरु हूँ यह भेद नही है । इसकारण यह मुझे मानते नही ।।।१५३।।

म्हे गुरदेव सिष्ट सब ही का ।। जाण मा जाणो कोई ।।
मो सूं मिल्याँ अगम घर मेलूं ।। आणंद पद मे सोई ।।१५४।।

मै याने सतस्वरुप । सतस्वरुप यह आदि से सब सृष्टी का गुरु है । अब मुझे ज्ञानी,पंडीत तथा जगत ने जाना क्या? या नही जाना क्या? इससे फरक मेरे में नही पडेंगा । मुझे नही जानने में फरक ज्ञानी,पंडीत और जगत के लोगों में पडेंगा । वह मुझे नही जानेंगे तो मैं उन्हें आनंदपद नही ले जा पाउँगा । अगर ज्ञानी,पंडीत,जगत मुझे जानेंगे और मुझसे मिलेंगे तो मैं उनमें अगम घर जाने का बिज डालूँगा और आनंदपद ले जाउँगा ।।।१५४।।

मेरो अंग आद सें ओई ।। जिऊँ जग ग्यान कहावे ।।
सत लोक कूं हंस पठाऊँ ।। जिऊँ दु:ख ग्यान ना मावे ।।१५५।।

मैं याने सतस्वरुप,सतस्वरुप याने सतगुरु/सतगुरु का आदि से ही स्वभाव सतलोक मे भेजने का है । जैसे जगतमें गुरु रहते,उन्हे जीवोंके संसारके दु:ख बर्दाश नही होते । इसलिए वह जीवोंको संसारसे निकालकर वैराग्य ज्ञानी बनाते । इसीप्रकार सतगुरु को जगत के जीव काल का भारी दु:ख भोगते हुए दिखते । वह दु:ख देखकर सतगुरु को दया आती । इसलिए वे जीवों को होणकाल घर के दु:ख से निकालकर महासुख के सत्तलोक में भेजते रहते ।।।१५५।।

मेरो किसब कळा सोई आई ।। रीझ मोज धन माया ।।
सत लोक मे हंस पठाऊं ।। ओ बिडद ले म्हे आया ।।१५६।।

जीवों को होणकाल के महादु:खो से निकालकर सतस्वरुप के महासुखों में भेजना यह कला मैंने ही जगत में प्रगट की है । मुझको मिलनेपर सतलोक के महासुखों के देश में जीव जाएँगा और वहाँ भारी सुख लेगा । यह रीज,मोज तथा धन मैं मुझे मिलनेवाले को बक्षीस में देता हुँ । ऐसे सुख के सतलोक में पठा ने का मैनेही ओहदा लाया हुँ । बिड्द

लाया हुँ । यह ओहदा ब्रम्हा,विष्णू,महेश,शक्ती तथा औतारो का नही है । यह ज्ञानी, पंडीत और जगत के लोग समझ न होने के कारण मुझे जानते नही है । (ओहदा-हंस भाव से नही है,सतस्वरुप भाव से है । ब्रम्हा,विष्णू,महेश-ये त्रिगुणी माया हंस भाव से नही है । ब्रम्हा में रजोगुण की सत्ता है रहती । विष्णू में सतोगुण की सत्ता रहती । शंकर में तमोगुण की सत्ता रहती । यह बताना ।)॥१५६॥

ब्रम्ह ब्रम्ह तम सब ही गावो ॥ ब्रम्ह हुवाँ क्या होई ॥
किस दिन हा ब्रम्ह तम सारा ॥ सो दिन कहिये मोई ॥१५७॥

ब्रम्ह बनना चाहिए,ब्रम्ह बनना चाहिए ऐसा तुम सभी लोग कह रहे हो । मुझे यह बतावो की ब्रम्ह होने से क्या होगा? साकारी सृष्टी में आने के पहले सभी ब्रम्ह ही थे या नही थे? वह दिन ध्यानमें लाओ । जहाँ तुम ब्रम्ह थे वहाँ सुख नही था । इसलिए ब्रम्हपद छोड्कर जीवपद का देह धारण किया और मायामें आए हो यह सही है या नही है फिर ब्रम्ह बनोगे वहाँ सुख नही मिलेगा । वहाँ जानेके बाद सुखकी चाहणा होगी,फिर वापीस मायामें आवोगे । इसमें आजके मायाके पाँच आत्माके सुखसे ज्यादा सुख नही मिलेंगे । आज जैसे हो वैसे ही सुख-दु:ख में पडे रहोगे । इससे अधीक महासुखवाले नही बनोगे । इसकी समझ लावो । इसलिए फिरसे ब्रम्ह बनने के लिए ना खपते हुए उसके आगे के सुख बतानेवाले सतगुरु धारण करो । ॥१५७॥

ओ तो आद अनाद अगम लग ॥ ब्रम्ह रूप सुण होई ॥
ना कुछ घटे बधे कुछ नाही ॥ काम रूप फळ दोई ॥१५८॥

ऐसे तो हर कोई आदि से अंत तक ब्रम्ह ही है । आदि से आदि भी ब्रम्ह था और अंत से अंत तक भी ब्रम्ह ही रहेगा । उसका ब्रम्हरुप कभी भी घटता नही या कभी भी बढता नही । यह ब्रम्ह सुख के लिए कर्म करता । उसमें सुख के और दु:ख के दो प्रकार के कर्म होते । उन कर्मो के घट और बढ के कारण माया में सुखों के फलों में घट-बढ होती परंतु इसके मुल ब्रम्हरुप में कुछ भी फरक नही पड्ता ।॥१५८॥

जिऊं नर किसब छाड कर देवे ॥ तोही नर का नर होई ॥
युं ब्रम्ह माया त्याग दूर होय ॥ तोई कम बधो न कोई ॥१५९॥

जगत के मनुष्यों में से एक मनुष्य धंधा कर रहा है और एक मनुष्य ने धंधा त्याग दिया है । धंधा त्याग देनेवाले और धंधा करनेवाले मनुष्य के मनुष्यपन में क्या फरक हुआ । ऐसे ही आदि में पारब्रम्ह में सभी ब्रम्ह थे वह माया में आए,माया में रमे,रमते-रमते उसमें से एक ने माया त्यागी और दुजे ने माया में रमना बना रखा । ऐसे दोनों ब्रम्ह के ब्रम्हपण में माया त्यागने से या धारण करने से क्या फरक पडा? दोनों को ब्रम्हमाया के सिवा अलग जादा कुछ नही मिला । ब्रम्हमाया से अलग व जादा आनंदपद पाने के सिवा मिलता नही ।॥१५९॥

यूँ ओ सदा ब्रम्ह ही जाणो ।। ता मे कसर न काई ।।
ज्यूं ओ करे सोई बिध होवे ।। हे हद बेहद के माई ।।१६०।।

जीव सदा से ब्रम्ह है और सदा ब्रम्ह रहेगा इसमें कोई कसर मत जानो । ब्रम्ह करणीयों की जो विधी करेगा वैसा वह हद बेहद में बनेगा परंतु रहेगा ब्रम्ह का ब्रम्ह ही ।।।१६०।।

क्रणी सकळ छाड कर देवे ।। तोई कुछ दूजो नाही ।।
जिऊं नर ग्यानी कुळ नार मे प्रगटे ।। सत बिन जळे न आही ।।१६१।।

सभी मायावी करणी त्याग दी तो भी वह ब्रम्ह के सिवा दुजा कुछ नही बनेगा । वह ब्रम्ह सतज्ञान प्रगट होने पे ही दुजा बनेगा । जैसे जगत में नारीयाँ बहूत है । ज्ञानवंत है,कुलवंत है, व्यभीचारीणी है यह सभी नारीयाँ ही है । इनके नारीपन में कोई फरक नही है । यह नारीयाँ पतीके साथ रहती परंतु पतीका शरीर छुटनेपर पतीके साथ नही जाती । जगत में ही रहती । इनमें से कोई एखाद रहती जिस में सत प्रगट हुआ रहता,वह जगत में नही रहती । वह जगत से न्यारी होकर पती के साथ सतवाड के लोक में जाती । इसीप्रकार जगत के सभी मनुष्य ब्रम्ह ही है । वह होणकाल में ही रहते । उनमें से एखादे ब्रम्ह को सतस्वरुप का सत प्रगट होता और वह होणकाल छोड्कर सतस्वरुप के साथ सतपद में जाता ।।।१६१।।

ग्यानवंत कुळ सुध असल हूवे ।। फिर प्रणी जग माही ।।
बिना सत सुण जळयो न जावे ।। यूं ब्रम्ह को बळ नाही ।।१६२।।

स्त्री ज्ञानवंत है,असली उँचे कुलकी है,विवाह करके लाई हुई है,ऐसे असली शुद्ध लक्षणोकी है । ऐसे स्त्री का पती गुजर गया अब पत्नी को पती के साथ जलकर शरीर त्यागना है तथा पती के साथ जाना है । ऐसी चाहणा होने पर भी वह स्त्री पती के साथ उसमें सत प्रगट न होनेके कारण जल नही सकेगी और जल नही सकेगी तो शरीर नही छुटेगा । शरीर नही छुटेगा तो वह पती के साथ सतवाड्के लोक नही जा सकेगी । इसीप्रकार ब्रम्ह स्वयं के ब्रम्ह बल पे होणकाल छोड नही सकता । उस स्त्री में जैसे सत प्रगट हुवा वैसा आनंदपद का सत ब्रम्ह में प्रगट होना चाहिए । आनंदपद का सतप्रगट होने पर वह ब्रम्ह होणकाल छोड्कर होणकाल से अलग
महासुखवाले आनंदपद में जाएँगा ।।।१६२।।

सत की मेहेर भई तिण ऊपर ।। सोई सुण जळणे जावे ।।
राणी खास छोकरी बीच ।। कारण कोई न क्षावे ।।१६३।।

किसी भी स्त्री में सतप्रगट हुआ तो वह पती के साथ जल जाती और यह जगत छोड देती । सतप्रगट होनेके लिए ज्ञानवंत,कुलवंत,राणी,रखेल या वैश्या इन लक्षणोंका कारण नही रहता । जिसपे सत की मेहेर होती वह सती बन जाती । इसीप्रकार ब्रम्ह मायावी है या ब्रम्हज्ञानी है, उच कर्मी है या नीच कर्मी है,उच धर्मी है या नीच धर्मी हे यह लक्षण

अमरलोक जाने के आडे नही आता । जिस ब्रम्हपर सत की मेहेर होती वह ब्रम्ह होणकाल त्यागकर आनंदपदमें जाता । ||१६३||

वो सत स्वरूप मेहेर ज्याँ कर हे || से हंसा व्हाँ जावे ||
वांहा की खबर झूट भाई || पाछो कोई हन आवे ||१६४||

जिस हंसपर सतस्वरुप मेहेर करता वही हंस सतस्वरुप में जाता । सतस्वरुप से होणकाल में कर्म भोगने के लिए वापीस आता यह खबर याने बात कोई बताते है,वह बात उनकी झुठी है । एक बार आनंदपद में पहुँचने के बाद वह होणकाल में वापस कभी नही आता ।||१६४||

के सुखराम सुणो सब ग्यानी || ध्यानी पिंडत सारा ||
राज जोग बिन कोई न पहुँचे || आणंद लोक बिचारा ||१६५||

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज सभी ज्ञानी,ध्यानी तथा पंड्तिोंको बता रहे की आनंदलोक में माया के ज्ञान,ध्यान,पंडीताई तथा ब्रम्ह बलपर नही जाते आता । वहाँ राजयोग के बल से ही पहुँचते आता । अन्य कोई उपाय से पहुँचते नही आता ।||१६५||

मेहेर बिना यूं नाही पहूंचे || सत लोक कूं जाई ||
अेक पद मे ओ गुण आदु || धिंग न तारे आई ||१६६||

(सतस्वरुप)सतगुरु के मेहेर सिवा सतलोक में नही जाते आता । इसमें आदि से एक गुण है, वह धींगोंको याने मन से होणकाल मायाब्रम्हसे मगरुर बने है ऐसो धिंगों को कभी नही तारता । ||१६६||

गरिब निवाज बिडद हे वां को || धिंग निवाज न होई ||
यूं अे बडा पुर्ष नही पावे || सत रूप कऊं तोई ||१६७||

सतस्वरुप यह सिर्फ गरिबों को याने जिस में होणकाल पारब्रम्ह व माया की कोई मगरुरी नही है ऐसे गरिबो को तारता । होणकाल ब्रम्ह तथा माया के मगरुर धिंगों को कभी नही तारता । होणकाल पारब्रम्ह तथा माया की कोई मगरुरी नही ऐसे गरिबों को तारने का ही आदि से उसका बिड्द है । इसकारण बडे पुरुष जैसे ऋषी,मुनी,ज्ञानी,ध्यानी,पंडीत जो होणकाल पारब्रम्ह व माया के ज्ञान-ध्यान के मगरुरी मे है वे सतस्वरुप को कभी पाते नही ।||१६७||

ब्रम्हा बिसन महेसर सक्ती || केवळ ब्रम्ह कहावे ||
अे तो धिंग धिंग सुंई धिंगा || क्युं कर वो पद पावे ||१६८||

ब्रम्हा,विष्णू,महेश,शक्ती तथा माया और ब्रम्ह यह धिंग से ही धिंग है । वे स्वयंम को केवल ब्रम्ह याने सतस्वरुप ब्रम्ह समझते इसकारण सतस्वरुप इन धिंगों पे मेहेर करता नही । इसकारण यह सभी धिंग सतस्वरुप का पद पाते नही ।||१६८||

ज्यां को सुणो देस दिखलाऊं || जो कोई बिद्या चावे ||

बाळक थका म्हेर सरसती की ।। पढे पाठ कंठ आवे ।।१६९।।

ये धिंग सतस्वरुप पद क्यों पाते नही और गरिब सतस्वरुप पद क्यों पाते? इसपे मैं जगत का एक दृष्टांत बताता हूँ । विद्या का सिखना सरस्वती के मेहेर से होता,सरस्वती की मेहेर बालक उम्रतक ही होती । बालक वेद का पाठ पढता । सरस्वतीकी मेहेर से पाठ पढते ही वेद का पाठ उस बालक के कंठस्थ हो जाता ।।।१६९।।

जोबन जोर छक्के जो होवे ।। धन राज मद माई ।।
तो नही म्हेर सरस्वती कर हे ।। बेद न सिख्या जाई ।।१७०।।

जवानी के मद का जोर,धन का जोर,राज का जोर जीण व्यक्तीयों में है,उनपे सरस्वती की मेहेर नही होती । वह वेद का पाठ पढते परंतु वह पाठ इनके कंठस्थ नही होता । ।।१७०।।

बाळक ब्होत गुराँ सूं धूजे ।। इंद्रयाँ जोर न कोई ।।
जब वा म्हेर सरस्वती कर हे ।। यूं सतगुरु बिध जोई ।।१७१।।

बालक गुरु से बहोत धुजता है तथा उसमें इंद्रीयों का जोर नही रहता । इसकारण सरस्वती उस बालक पर मेहेर करती । ऐसी ही विधी सतगुरु की है । सतगुरु से याने सतस्वरुप से जो हंस धुजेगा तथा उसमे माया व ब्रम्हके ज्ञान,ध्यानका जोर नही रहेगा । उस हंस पे ही सतगुरु की मेहेर होगी ।।।१७१।।

और किसब चावे सो कर ले ।। धन जोबन हुवा राजा ।।
अेक बेद ब्याक्रण नही सूझे ।। वो केवळ नाही काजा ।।१७२।।

धन,जवानी तथा राज का जोर आने पे उस हंसको धन का,जवानीका तथा राज का कोई भी हुन्नर चाहणा करनेपे प्राप्त करते आता परंतू उसकी वेद,व्याकरण सिखनेकी चाहणा रही तो भी उससे वेद,व्याकरण सिखे नही जाता । ऐसे हंसपे सरस्वती मेहेर नही करती । उसी-प्रकार हंसमें त्रिगुणी मायाका जोर आनेसे हंसकी केवल प्राप्त करनेकी चाहणा रही तो भी कैवल्य प्राप्त नही हो सकता । ऐसे मायाके जोर आए हुए हंसपे सतगुरुकी मेहेर नही होती ।।।१७२।।

जो कोई जोर सकळ ही त्यागे ।। तो देहे गुण नही जावे ।।
बाळक जवान कोण बिध होवे ।। इऊं केवळ गुण कवावे ।।१७३।।

कोई जवान व्यक्ती धन का जोर,राज का जोर त्यागकर गुरु के पास वेद कंठाग्र करने आता है फिर भी सरस्वती उसपे मेहेर नही करती । जवान व्यक्ती धनका जोर,राजका जोर त्याग देता परंतु देह का जवानी का गुण त्याग नही सकता,बालक के समान बिना वासना का नही बन सकता । इसकारण सरस्वती मेहेर नही कर सकती । इसीप्रकार माया के कैलास,बैकुंठ पद त्याग सकता परंतु बडेपन का आया हुवा शोभा का असर नही त्याग सकता और सतगुरु को निजमन नही दे सकता । इसकारण उसे सतपद प्राप्त नही

हो सकता |||१७३||

बाळक ब्होत गुराँ सूं धूजे || ऊंच नीच के माही ||
केवळ माहे दोस नही कोई || पूरण पण पणो न जावे ||१७४||

बालक गुरु से हर बात से अज्ञानी हुँ,यही समझता । वह मैं गुरु से ज्ञानी हुँ यह कभी नही समझता परंतू धिंग यह मैं सतगुरुसे अज्ञानी हुँ ऐसा कभी नही समझते । उलटा हम ज्ञानी है, त्रिगुणों के मालिक है,हम पूर्ण है,ऐसा समझते । इसकारण इन धिंगोपर सतस्वरुप मेहेर नही करता । सतस्वरुप मेहेर न करने का दोष सतस्वरुप केवल में नही रहता । सतस्वरुप केवल लेना चाहणेवाले हंस में रहता |||१७४||

सत स्वरूप को हे अंग ओई || गरिब नवाज कहावे ||
के सुखराम ब्रम्ह अर माया || इंऊं सत स्वरूप न पावे ||१७५||

इसप्रकार ब्रम्ह और माया धिंग बनके बैठे है । सतस्वरुप यह गरिब निवाज है । धिंग निवाज नही है । इसकारण माया और ब्रम्ह सतस्वरुप को नही पाते |||१७५||

ज्युं संसार बंध्यो आपे मे || गुर बस कोई न आई ||
फळ फूल पात झड पडियो || हे सब तर्वर माही ||१७६||

संसारके सभी लोग माता–पिताके कुलसे बंधे है। गुरुसे बंधे नही है। जैसे वृक्षको फल, फुल,पात आये और वह झड गये,इसीप्रकार सभी ब्रम्ह होणकालसे आये,वह महाप्रलय मे होणकाल में गए । होणकाल के परे सतगुरु पद में नही गए |||१७६||

जळ मे जाय मिल्यो जळ जाई || वे जब क्या इधका होई ||
रूंख राय घट घट ब्रम्ह भरियो || ज्हाँ ही जळ और न कोई ||१७७||

जल से निकलकर पेड वनस्पतीयाँ बनी । पेड मरने के बाद वनस्पतीयाँ फिर से जल में घुलकर जल बन गई । वनस्पती जल से निकली,फिर जल में जाकर मिल गई इसमें अधीक क्या हुआ ? इसीप्रकार ब्रम्ह होणकाल से निकला यह तीन लोक के माया पद में आया । यहाँ ब्रम्ह का जीव कहलाया । माया पद महाप्रलय में मीट गया फिर जीव का ब्रम्ह बन गया इसमें ब्रम्ह से नया क्या बना? ||१७७||

जिऊं घर तार खडडा कर दीया || क्हा ध्रण गुण जावे ||
पाछी पडया दाध क्हा होई || इंऊं ब्रम्ह जीव कुवावे ||१७८||

धरती में तार खड्डा करके घर बनाया,इससे घरमें का धरती का गुण नही गया । घर गिर जानेपर फिर घर धरती में ही मिल गया । इसीप्रकार ब्रम्ह माया में आकर जीव बन जाने से जीव का ब्रम्ह गुण नही जाता । महाप्रलय में माया मीट जानेपर जीव फिर ब्रम्ह बन जाता । ||१७८||

नाँ नाँ बिध किया आभूषन || सोई कंचन हे सारा ||
पाछो भाँग घाट सो मेटे || जब क्या इधक बिचारा ||१७९||

सोने से नाना बिधके आभुषण बनाए । वह सभी सोना ही है । ऐसे आभुषणो को भाँजकर मीटा देनेपर फिर से सोना ही बनता है । सोने से अधिक क्या बनेगा? इसीप्रकार ब्रम्ह से माया पद में अलग-अलग शरीर बनीं । माया पद महाप्रलय में मिट जाने से सभी शरीर भी मिट जाते और सभी ब्रम्ह माया से निकलकर ब्रम्हपद में ब्रम्ह बनकर समा जाते । ।।१७९।।

जात छाड बेस्या हुय बेठी ।। क्या गयो घट भाई ।।
पाँचुं भोग नार वा सागे ।। सो पत ब्रता माई ।।१८०।।

कुलवंत जात छोड्के वैश्या हो गई । उसमें क्या घटा?जैसे कुलवंत पतीव्रता नारी पाँचो सुख लेती वैसेके वैसे वैश्या भी ले रही है । ब्रम्हपणा छोड्कर जीव बन गया,उसमें ब्रम्हका क्या घटा? पारब्रम्हमें जैसे ब्रम्ह था वैसे ही जीवपणमें ब्रम्ह ही है । ब्रम्हसे न्यारा कुछ नही है । ।।१८०।।

राजा रंक हुवो जे कब ही ।। क्या गयो घट सोई ।।
नर को नर ई बण्यो वो सागे ।। पदवी घट बध होई ।।१८१।।

राजा किसी कारण रंक बन गया तो उसका क्या घट गया । राजा भी मनुष्य था और रंक भी मनुष्य है । दोनो के मनुष्यपण में कोई फरक नही हुआ। उसकी पदवी में घट-बढ हुई । मनुष्य राजा था तब बडी राज पदवी थी । वह मनुष्य रंक बना तो उसे रंक पदवी मिली । बाकी मनुष्यपण में कोई फरक नही हुआ । इसीप्रकार ब्रम्ह जीव बना और कर्मकांड में पडा । इससे ब्रम्ह और जीव के ब्रम्हपणामें कोई फरक नही पडा,सिर्फ पदवीमें फरक पडा । एक ब्रम्ह को ब्रम्हज्ञानी की पदवी मिली तो दुजे को कर्मकांडे की मायावी पदवी मिली। पदवी में फरक पड्ने से दोनो के ब्रम्हपणा में जरासा भी फरक पडा नही ।।।१८१।।

जो नर नार प्रण घर लायो ।। पुर्ष पणो नही जावे ।।
जो नर जन्म ब्याँव नही कीयो ।। तोई नर पुर्ष कहावे ।।१८२।।

पुरुष ने विवाह कर स्त्री को घर लाया,उसका पुरुषपणा नही गया मतलब वह स्त्री नही बना पुरुष ही बनके रहा तथा किसी पुरुषने जन्मभर विवाह नही किया तो भी वह पुरुष ही बनके रहा । इसीप्रकार कोई ब्रम्हमाया के साथ रमा और कोई ब्रम्हमाया से अलग रहा तो ब्रम्ह के ब्रम्हपणा में फरक नही होता ।।।१८२।।

जात पाँत सूं दूरो करदे ।। धसे ओर कुळ माही ।।
क्हो जी घटयो क्या उण नर को ।। यूं ब्रम्ह जीव क्हाही ।।१८३।।

किसी व्यक्ती को जात पात से दुर कर दिया । समय से फिर वही व्यक्ती जात-पात में घुस गया । जात-पात से दुर किया तो भी वह मनुष्य ही था और जात-पात में लिया तब भी वह मनुष्य ही है । उसके मनुष्यपण में कुछ फरक नही हुआ । ऐसे ही कोई ब्रम्ह ब्रम्हज्ञान के जात से अलग हुआ और मायावी ज्ञानी के जात का बना । आगे समय से

मायावी ज्ञान त्याग दिया और ब्रम्हज्ञानी बनकर ब्रम्हज्ञानी के जात का बन गया । ब्रम्हज्ञान की जात त्याग दी और मायावी ज्ञान की जात धारण कर ली इससे उस ब्रम्ह का ब्रम्हपणा नही बदला । उसके पद में व ज्ञान में फरक पडा परंतु उसके ब्रम्ह के रुप में कोई फरक नही पडा ।।।१८३।।

हे तो आद ब्रम्ह अर माया ।। तीजो पद सुख माही ।।
ताँ कूं कहे आणंद पद सारा ।। ज्याँ सत चीन्यो नाही ।।१८४।।

आद से ब्रम्ह और माया दो पद है । इस ब्रम्ह और मायासे तीजा साकारी मायाका पाँच सुख लेने का पद जन्मा । इस तीजे मायाके पद को सभी ज्ञानी,ध्यानी आनंदपद कहते है । यह पद असत है । यह पद माया और ब्रम्ह से जन्मा हुवा पद है । यह आनंद का सतपद नही है । सतपद माया-ब्रम्ह से तथा उससे पैदा हुए वे साकारी माया के पद से न्यारा है,उसे ज्ञानी-ध्यानी ने प्राप्त कर पहचाना नही । इसलिए माया के सुख के पद को सत मानकर आनंदपद पकड के बैठे है ।।।१८४।।

युँ दिष्टाँग देर समझाऊँ ।। ग्यानी बुध घट लावो ।।
सत स्वरूप ज्हाँ म्हे सतगुरु हुँ ।। तम ओ भेद न पावो ।।१८५।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज मैं सतगुरु कैसे हूँ ,इसका भेद दृष्टांत देकर ज्ञानीयों को बता रहे तथा वह भेद घट में बुद्धी लाकर समझो ऐसा कह रहे है ।।।१८५।।

ज्यूँ संसार बंध्यो पख माही ।। कुळ गिन्यान पिछाणो ।।
राम राम की केबत मुख मे ।। मिलियाँ प्रीत न ठाणो ।।१८६।।

जैसे जगत के लोग पक्ष में बंधे रहते तथा जात-पात वालो को ही पहचानते और आपस में ही प्रित करते । कुल और जात-पात के बाहर का मिला तो आपस में राम राम कहने के रीत अनुसार राम राम कहते परंतु आपस में मिलने पर भी प्रित नही करते ।।।१८६।।

युं वे सकळ सिष्ट का ग्यानी ।। मेरो भेद न पावे ।।
ब्रम्हा बिसन महेसर सक्ती ।। पूरण ब्रम्ह लग न जावे ।।१८७।।

इसीप्रकार सृष्टीके सभी ज्ञानी,ध्यानी माया-ब्रम्हके कुलके ब्रम्हा,विष्णू,महेश,शक्ती, पारब्रम्ह तक ही पहचानते और उनसे प्रित करते । इसकारण पूर्ण ब्रम्ह तक के ही पद जाते । मैं सतस्वरुप का सतगुरु हुँ यह भेद नही समझते । इसलिए मुझसे प्रित नही करते । इसकारण पूर्ण ब्रम्ह के आगे के आनंदपद नही जाते ।।।१८७।।

इनकी सकळ कहे जग सोभा ।। ग्यानी पिंडत सारा ।।
ताँको सुणो अरथ ओ कहिये ।। जिऊं कुळ ध्रम बुहारा ।।१८८।।

जैसे कुल,धर्म में के सभी लोग बडे समझदार ज्ञानी लोगो की शोभा करते उसीप्रकार का व्यवहार जगत के ज्ञानी,ध्यानी और जगत के लोगो का ब्रम्हा,विष्णू,महेश,शक्ती तथा पारब्रम्ह तक की शोभा करने में रहता ।।।१८८।।

ब्रम्हा बिस्न महेसर सक्ती ।। अे मा बाप ज जाणो ।।
पुर्ण ब्रम्ह जिसो कुळ राजा ।। यूं सत भेद पिछाणो ।।१८९।।

जैसे कुल में देह के माँ–बाप रहते वैसे ब्रम्हा,विष्णू,महेश,शक्ती,जीव के माँ–बाप जानो । पुर्ण ब्रम्ह यह जैसे जगत में राजा रहता वैसे जीवों का राजा समझो । जगत में देह के वेदी गुरु रहते ऐसा मैं जीव को सतगुरु हूँ ,यह सत भेद पहचाणो ।।।१८९।।

सत स्वरूप ज्युं गुर जग माही ।। ओ प्रसंग सुण लीजे ।।
केता जीव गुराँ मे समझे ।। सो मुझ निर्णो दीजे ।।१९०।।

जगत में देहके वेदी गुरु है वैसे ही जीवके कैवल्य विज्ञानी गुरु है । जगतमें माँ बापको कितने लोग जानते,राजाको कितने लोग जानते तथा गुरुको कितने लोग जानते वह प्रसंग ध्यानमें लाकर गुरुको कितने लोग जानते इसका निर्णय करो । इसपरसे ब्रम्हा,विष्णू ,महेश,शक्ती इन माता पिताको कितने लोग जानते,पारब्रम्ह राजाको कितने लोग जानते तथा सतस्वरुपी सतगुरु को कितने लोग जानते यह ज्ञानीयो ज्ञान के न्याय से निर्णय करके समझो ।।।१९०।।

मा अर बाप मे सब ही समझे ।। लडका लडकी भाई ।।
बादी बहू पसू सूकर लग ।। सब सन्मुख हुवे आंई ।।१९१।।

माँ–बाप को छोटे से बडे लड्का–लड्की सभी समझते । जगत का विवादी मनुष्य भी अपने माँ–बाप को समझता । पशु,पंछी,सुवर ये सभी अपने माँ–बाप को समझते । इनमें से एक भी ऐसा नही है कि जो माँ–बाप को समझता नही और उनके सन्मुख रहता नही । यह सभी माँ–बाप को समझते और उनके सन्मुख रहते ।।।१९१।।

कुळ राजा कूं अे नही जाणै ।। पसू श्वान नर नारी ।।
यूं पूरण ब्रम्ह पिछाणे कोई येक ।। जामे हे बुध भारी ।।१९२।।

जैसे जगतमें कुलके माँ–बाप है वैसाही जगतमें जगतका राजा है । उस राजाको पशु,कुत्ता आदि प्राणी तथा कम बुद्धीवाले कुछ बडे घने जंगलमें सदा रहनेवाले नर–नारीभी नही जानते परंतू ऐसे राजाको भारी बुद्धीवाले नर–नारी जानते । इसीप्रकार पारब्रम्हको जगत तथा मायाके ज्ञानी ध्यानी नही जानते। उसे भारी समझवाला एखादा ब्रम्हज्ञानीही जानता। ।।१९२।।

मेहेमा कियाँ सकळ ही समझे ।। अे गुण राजा माही ।।
छोडे बडे सकळ सुख पायो ।। पसवाँ कूं गम नाही ।।१९३।।

राजा जगत में सबसे बडा रहता,वही प्रजा को सुख देता,प्रजा का रक्षण करता यह जगत के छोटे–बडे,कम–जादा समझनेवालो को समझा के बताया तो राजा को भी सभी छोटे–बडे,कम–जादा समझवाले जानने लग जाते,वह ऐसा राजा हमारे उपर है उसका सुख पाते परंतू ऐसे राजा का कितना भी वर्णन पशु–पंछी के सामने किया तो भी राजा को पशु–

पंछी कोई हाल नही समझ सकते ।।।१९३।।

गुर की करे आण कोई सोभा ।। कोहो कुण समझे भाई ।।
ओर गुर की मत्त ऊठावे ।। तो सब बरजे आई ।।१९४।।

कुल में,राज में गुरु की महिमा की तो भी कुल के लोग,राज के लोग गुरु को समझते नही । उलटा गुरु का मत उठाकर कुल के और जगत के लोगो के सामने रखा तो कुल और जगत के लोग मना करते ।।।१९४।।

मात पिता राजा की मेहेमा ।। चाल सकळ मन भावे ।।
गुर की टेहल तिसी कोई पकडे ।। तो सब ही दु:ख पावे ।।१९५।।

माता–पिता तथा राजा की स्तुती और सेवा सभी लोगों के मन में भाँती है । इस जगत में से किसीने गुरु की सेवा धारण की तो कुल के और जगत के सभी लोग दु:खी होते है ।।।१९५।।

माया ब्रम्ह सुणो सिष्ट का ।। माता पिता सकळ कुळ होई ।।
पुर्ण ब्रम्ह लग सब मेहेमा ।। जिऊं कुळ राजा जोई ।।१९६।।

कुल में जैसे माता–पिता है वैसे सृष्टी में माया–ब्रम्ह याने ब्रम्हा,विष्णू,महेश,शक्ती जीव के माता–पिता है । जगत में जैसे राजा है वैसे सृष्टी में पारब्रम्ह यह जीव का राजा है । माता–पिता और राजा तक की सेवा करना यह कुल और राजतक की ही सेवा है । वह वेदी गुरु की सेवा नही । वेदी गुरु की महिमा नही । इसीप्रकार ब्रम्हा,विष्णू,महेश,शक्ती तथा पारब्रम्ह तक की भक्ती यह माया–ब्रम्हके कुल और होणकालके राज तक की ही भक्ती है । वह सतस्वरुप सतगुरु की भक्ती नही है ।।।१९६।।

ग्यानी साध संत अे जुग मे ।। जिऊं सेणा कुळ माही ।।
इनकी पदवी नही गुर देव की ।। भोळा समझे नाही ।।१९७।।

कुल को समझनेवाले समझवान कुल में लोग रहते है परंतू वह वेदी गुरु नही रहते । इसीप्रकार जगत के ज्ञानी–ध्यानी,साधू,माया–ब्रम्ह को समझनेवाले साधू संत है । यह सतस्वरुपके साधू संत नही है । सृष्टी का सतगुरु सिर्फ सतस्वरुप है । इसकारण माया–ब्रम्ह जाननेवाले साधू,ज्ञानी जिन को जगत गुरु समझते यह सतस्वरुपी गुरु नही है यह भोले जगत के लोग समझते नही ।।।१९७।।

गुर तो पदवी हमारी आदु ।। सुण ग्यानी कहुँ तोई ।।
भोळा जीव भेष सूं डरपे ।। इऊँ नही माने मोई ।।१९८।।

ज्ञानीयो गुरु पदवी आदि से ही मेरी है परंतू जगत के भोले लोग भेषधारी याने ही गुरु है ऐसा समझते। भेषधारी याने ही परमात्मा है ऐसा समजते। उनमे काल से निकाल देनेवाला सतस्वरुप परमात्मा है ऐसा समझके डरते। जब की उनमे परमात्मा नही रहता उलटा होणकाल रहता। मेरे पास सतस्वरुप परमात्मा है परंतू मुझे गुरु करके कोई मानता नही ।

।।१९८।।

सुणो खून सकळ सिर भारी ।। ब्राम्हण जाणर ज्या मुज त्यागे ।।
ओ सुण खून कहुं नही छूटे ।। जे मोसूं ई नर लागे ।।१९९।।

कुछ लोग मुझे ब्राम्हण जानते । पंचांग,वेद तक का जाननेवाला ही जानते । मै पंचांग,वेद पढनेवाला ब्राम्हण नही हूँ । मै सृष्टी का परमात्मा,सतज्ञान जाननेवाला असली ब्राम्हण हूँ । मै सतब्रम्ह जाननेवाला असली ब्राम्हण हूँ । मेरी असली समझ न लाकर मेरे सतज्ञानसे नही लग रहे,मेरे सतज्ञानको तज रहे है और मुझसे मुख मोड रहे है ऐसे मनुष्योंके सिरपर सतस्वरुप का भारी गुन्हा रहेगा । वह गुन्हा सृष्टीमें ब्रम्हा,विष्णू,महेश,शक्ती,माया,ब्रम्ह इन किसीसे भी नही छुटेगा ।।।१९९।।

बे मुख फिरे भटकता आंधा ।। माया का गुण गावे ।।
सत्त स्वरूप आणंद पद कहिये ।। ओ कोई भेद न पावे ।।२००।।

ये अंधे ग्यानी,ध्यानी मुझसे बेमुख होते और माया का गुण गाते होणकाल में फिरते और होणकाल के सुख-दु:ख में ही पडे रहते। सतस्वरुप आनंदपद जहाँ सुख ही सुख है उसका यह अंधे भेद नही पाते ।।।२००।।

|| आगे की ५६ साखी लादी नही ||

|| इसके आगेके छप्पन्न श्लोक मिले नही,तो छप्पन्न श्लोक छोड्कर,आगेके श्लोक से भाषांतर शुरु किया है ||

क्हे सुखराम सुणो सब ग्यानी , म्हे वो भेद बताऊं ।
तीन पद आगे पद चोथो , सो प्रगट क्हे जाऊं ।।५७।।

आदी सतगुरु सुखरामजी महाराज सभी ग्यानी,ध्यानी को कहते है की,तीन पद के आगे चौथा आनंद का पद कैसे है यह भेद प्रगट कर बताता हुँ ।।।५७।।

ग्यानी सरब तिन पद जाणे, चोथे लग बुध नाही ।
जे कोई कहे प्रम पद चोथो , तोही तिना के मांही ।।५८।।

ग्यानी,ध्यानी सिर्फ तीन पद जानते । इनकी चौथे पद तक बुद्धी नही है । कोई ग्यानी परमपद चौथा है,ऐसा मुखसे कहते परंतु उनका परमपद याने चौथा पद तीन पद के अन्दर ही है ।।।५८।।

तां को सुणो भेद म्हे भाकुं, प्रगट कहुं बजाई ।
म्हा ग्यान सुई ग्यानी ध्यानी से सब समझो आई ।।५९।।

उसका भेद मैं प्रगट बजाके सुणाता हूँ । वह महाग्यानीयोंसे भी महाग्यानीयो तथा ध्यानीयोंसे महाध्यानीयो सभी समझो ।।।५।।

करणी कियाँ प्रम पद मिलसी, जे अेसी क्है आई ।
जे सब सुण सुख लग गावे, तिन पद के मांई ।।६०।।

कोई माया की करणी करने से परमपद याने चौथा पद मिलता ऐसा आकर कहते है और

उसकी पहुँच मायाके सुखोंतक है यह बताते । माया का सुख तीन पद के अंदर ही रहता । वह सुख चौथा पद याने विग्यान सुख का पद नही है ।।।६०।।

जाँको सुणो अर्थ वो प्रगट , जग मे तोहे बताऊं ।
नाना बिध उधम कर सुख हुवे, सो तिजो पद गाऊं ।।६१।।

यह ग्यानी,ध्यानी चौथा पद कहते वह चौथा पद नही है । वह तीजा ही पद है । यह ग्यान से प्रगट करके तुम्हे मैं बताता हुँ । जैसे जगत में मनुष्य नाना विधी के उद्‌यम करके जगतके सुख पाता वह उदयम करके गुरुके ग्यान का सुख नही पाता । इसीप्रकार करणीयाँ करके तीन पद को ही पाते,चौथे सतविग्यान ग्यान पद को नही पाते ।।।६१।।

जिऊं जग सर्ब उधम कर सुख ले, राज धुरा धुर भाई ।
आणंद मिले सकल कर्मा कर, इंऊँ क्रणी जग मांई ।।६२।।

जैसे जगत में उदयम करके राज तक का सुख लेते है । उन उदयमोंसे आनंद मिलता ठिक इसीप्रकार होणकाल में करणीयाँ करके ग्यानी,ध्यानी को त्रिगुणी माया का आनंद मिलता, करणीयोंके फलों से आनंद मिलता,इसलिये उसे आनंदपद कहके चौथा पद समजते । वह आनंदपद कहके चौथा पद समजते । वह चौथा पद नही है वह तिसरा ही पद है ।।।६२।।

तिजो पद क्रम कर लेवे , बोहो क्रणी कर भाई ।
जिऊं संसार ब्होत कर हिकमत, ग्रेहे सुख लुटे जाई ।।६३।।

जैसे संसारके लोग अनेक हिकमत करके गृहस्थी का सुख लुटते है । ऐसेही जीव अनेक करणीयाँ करम करके माया का सुख लेते है । यह सुख लेने का पद माया-ब्रम्ह से बना हुवा साकारी माया का ही तिसरा पद है ।।।६३।।

चौथो पद क्रम से न्यारो, सुन लो सब नर भाई ।
जिऊँ बिज्ञान उपजे नर कुं ,कोण उदम से आई ।।६४।।

चौथा पद यह कर्मकांड्से न्यारा है यह सभी स्त्री-पुरुष सुनो । जैसे संसारमें किसीको विग्यान उपजता वह विग्यानी किस उद्‌योग याने(कर्म)के बलपे विग्यानी बनता। वह संसार का कोई भी उद्‌यम नही करता फिर भी उसे विग्यान उपजता। इसप्रकार सतविग्यान यह कर्म से प्रगट नही होता वह सतगुरु के मेहेर से प्राप्त होता ।।।६४।।

जोग तो आण तप कर सुख ले,आनंद ऊन केहे होई ।
ज्ञान आनंद पद सब सुँ न्यारो, गुरू किर्पा करे सोई ।।६५।।

जोगी तप कर जोग प्राप्त करता उसमें उसे जोग प्रगट करने का सुख आता । इस आनंद को भी कोई आनंदपद कहते है परंतु इस आनंद से विग्यान आनंद न्यारा है । वह विज्ञान आनंद पद सतगुरु किरपा करने के सिवा प्रगट नही होता ।।।६५।।

ज्ञान भेद आनंद सुख लीजे, ताकी एक उपाई ।

|| राम नाम लो, भाग जगाओ ||

गुरू आधीन ग्यान ही पढणे , ओर कछु नही भाई ||६६||

जगत में ग्यान का आनंद लेना है तो गुरुसे आधीन होकर ग्यान पढना यही एक उपाय है । इसके अलावा दुजा कोई उपाय नही है। इसीप्रकार सतविग्यान चाहिये हो तो सतस्वरुप गुरु के आधीन होकर विग्यान प्रगट कर लेना चाहिये इसके सिवा होणकाल में दुजा कोई उपाय नही है ।।।६६।।

ईऊँ सत स्वरूप आणंद पद चोथो,जिऊं बिज्ञान कहावे ।
तिजो आनंद जक्त सुख जेसो ,सो करमा कर पावे ||६७||

इसप्रकार सतस्वरुप आनंदपद यह चौथा पद है। वह विग्यान पद है। यह कर्म करने से प्रगट नही होता। जगत के ग्यानी,ध्यानी आनंदपद चौथा पद जीसे समजते है वह तीजा पद है। जैसे जगत के लोग मन और ५ ज्ञानेंद्रियों से गृहस्थी जीवन में से सुख लेते वैसा मन और ५ ज्ञानेंद्रियों से बैरागी बनकर वेद ज्ञान का सुख लेते ।।।६७।।

क्हे सुखराम सत्त ईऊँ सबही, नास्त तो कछु नाही ।
आनंद होय फेर दु:ख आवे, आ कसर वाँ मांही ||६८||

आदी सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है,ऐसा तो जगत में सभी सच्चा है,झुठा कुछ नही परंतु वह ग्यानी,ध्यानी जो आनंदपद कहते उसमें आनंद मिलता लेकिन फिर दु:ख आता। यह कसर ग्यानी-ध्यानी जीसे आनंदपद कहते उसमे है परंतु मैं जो आनंदपद प्रगट करता हुँ,उसमें सिर्फ सुख ही सुख रहता,दु:ख माँगनेपर भी नही मिलता ।।।६८।।

जिऊं जग आनंद पाय दु:ख पावे, राज धुरा धुर भाई ।
इंऊं जन मिल्या तिसरे पद मे, पडे संकट के मांही ||६९||

जैसे जगत में किसी मनुष्य को राजापद मिलने से सुख होता और कुछ दिनसे मिला हुवा राजापद जाता । फिर ऐसा राजापद जानेसे से मनुष्य पर दु:ख आता । इसीप्रकार संत को तिसरे पद में सुख मिलता । उसके सुकृत खतम् हुये की वह दु:ख में पड्ता ।।।६९।।

जिऊँ बिग्यान उपज्याँ निर्भे, बेरी सीर नही होई ||
इंऊं सत स्वरूप पद वो चोथो, धारे हे बिर्ळा कोई ||७०||

जगत में विग्यान किसीको उपजता है ऐसे विग्यानी का जगत में कोई भी बैरी नही रहता । वैसे ही चौथा सतस्वरुप विग्यानपद प्रगट करने पर त्रिगुणी माया तथा काल यह बैरी नही रहते । ऐसा विग्यान बिरला ही धारण करता है ।।।७०।।

चोथो पद मिलण की जगमे, सतगुरू एक उपाई ।
क्रणी सकळ पद तिजेकी, नाँ नाँ बिध कर भाई ||७१||

ऐसा महासुख का चौथा पद मिलने के लिये चौथे पद के जानकार सतगुरु की कृपा यही एक उपाय है परंतु तिजे पद को पहुँचने के लिये मायावी करणीयों के नाना प्रकारके उपाय

है । ||७१||

सतगुरू म्हेर सता घट जागे, से सतगुरू सत जाणो ।
क्रणी ग्यान बतावे आयर, जे गुरू कुळस पिछाणो ।।७२।।

जिस सतगुरु मेहेर से चौथे पद की सत्ता जागृत होती है,वह ही सतगुरु सच्चे मानो । जो गुरु माया की करणीयाँ,ज्ञान शिष्य को सिखाते है वे गुरु मायाके है,सतपद के नही है ऐसा मानो । माया मृतक है । गुरु मृतक देश की करणीयाँ करने लगाता तो समझो सतपद के पहुँचवाला गुरु नही है । वह काल बुद्धी का कलुषित गुरु है ऐसा समझो ।।।७२।।

क्हे सुखराम सतगुरू सोई, सत की भक्त बतावे ।
सत स्वरूप घट माहे प्रगटे,ऊलट अगम घर जावे ।।७३।।

आदी सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है,जो सत की भक्ती बताता है वही सतगुरु है । उसकी कृपा से शिष्य के घट में सतस्वरुप प्रगट होता है और शिष्य का हंस घट में बंकनाल के रास्ते से उलटकर अगम घर जाता है । शिष्य में यह रित नही बनती तो वह सतगुरु नही है,माया के गुरु है ऐसा समझो ।।।७३।।

सतगुरू सोई सेज में शिष कुं ,नाँव प्राप्त होई ।
नख चख माहे सत प्रकासे, निमष खंडे नही कोई ।।७४।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है की,सतगुरु वही है,जिसे शिष्य को सहज में सतनाम प्रगट होता है । वह सतनाम शिष्य के घट में नाखून से आँखो तक ध्वनी और सतप्रकाश प्रगट करा देते है । वह ध्वनी और प्रकाश निमिष मात्र के लिये भी खंडीत नही होता ।।।७४।।

ओर सकळ गुरू बचन स्वरूपी, जे जिऊं कुळ में ग्यानी
सबही बुझ काम कुं लागे, न्यात पाँत लग जानी ।।७५।।

जैसे कुल में और न्यातपात में ग्यानी रहते है । उन ग्यानी को कुल के और न्यातपात के लोग पुछ्ते,उसपद कुल के और न्यातपात के लोगों को ग्यानी ग्यान बताता । ऐसे बताये हुये वचनों के अनुसार कुल के और न्यातपात के लोग संसार के काम करते है,परंतु उन ज्ञानीयों के संसार के कामों के वचनों से कोई भी वैरागी नही बनते । ऐसेही माया के गुरु जगत में पाप, पुण्य ध्यान में रखके उपाय बताते । उनकें इन पाप-पुण्यके उपायोंसे किसी को भी सतस्वरुप वैराग्य प्रगट नही होता । ऐसे बाकी सभी गुरु सतगुरु नही होते । ।।७५।।

आप आपके सब बस मांही, समज वान कुं बूझे ।
जात पाँत कुळ चाल कसर सो, सब सेणे कुं सूझे ।।७६।।

समझवान को जात-पात कुल के चालों में जो कसर है वह समझती । वह कसर यह समझ से ज्ञानी मनुष्य कुल के तथा जात पात के लोगों को समझाता । इसकारण कुल

के तथा जात पात के लोग समझवान के वश में रहते ।।।७६।।

क्रणी आण बतावे कोई, सिंवरण लग जन कांई ।
से सब गुरू जात में सेणा, हद बेहद लग भाई ।।७७।।

जैसे कुल में तथा जातपात में कुल तथा जातपात के उंचे समझ का मनुष्य रहता,वैसे ही जो संत आकर करणी तथा स्मरण एक ही माया की विधीयाँ करना बताऐगा । वह गुरु माया ब्रम्ह के कुल का उंचे समझ का साधु है ऐसे समझना । इन संत से हद तथा बेहद तक की प्राप्ती होगी । हद बेहद के परे सतस्वरुप की प्राप्ती नही होगी ।।।७७।।

कुळ गिन्यान माहे सब समजे, राज रीत लग जाणे ।
इंऊँ अे गुरू सकळ कन फूंका, माया ब्रम्ह बखाणे ।।७८।।

जैसे समझवान कुल तथा राजतक के ग्यान को जानता परंतु वेद के ग्यान को नही जानता । वैसे ही जगतका गुरु माया ब्रम्ह का कुल तथा होनकाल पारब्रम्ह के राजतक बखानता परंतु सतस्वरुप के सतगुरु पदका वर्णन नही करता ऐसे जगत के गुरु को कनफुका गुरु कहते है । वे गुरु सतपद के सतगुरु नही है ।।।७८।।

अे सब गुरू सकळ सो न्यारा, जात पाँत जिऊं होई ।
कुळ मरजाद जिसी इण सब की, पाप पुन्न में दोई ।।७९।।

जगतमें अनेक जाती-पाती रहती तथा उस जाती-पातीके अनुसार हर जातकी कुल मर्यादा जानेनेवाले शाने समझदार ज्ञानी बडे लोग जातमें रहते। इसीप्रकार होनकालमें अनेक करणीयाँ,ज्ञान,ध्यान रहते। इस हर करणी ज्ञान,ध्यानके अनुसार हर करणी ज्ञानी, ध्यान के उंच कर्म और कर्म और निच कर्म याने पाप-पुण्य परिणाम जाननेवाले अनेक गुरु जगत के शाने समझदार ज्ञानी बडे लोगों के समान होनकाल में रहते। उन सभी गुरु की पहूँच पाप-पुण्य तक ही रहती । पाप-पुण्य के परे के विग्यान ज्ञान आनंदपद को नही रहती ।।।७९।।

इण कुं गुरू कहे सो भोळा, गुरू पद इनके नाही ।
आतो नकल क्हेण की शोभा, जिऊं दिपक जग माही ।।८०।।

ऐसे कुल में रखनेवाले ज्ञानी को भोले लोग सतगुरु कहते है। वह गुरुपद के गुरु नही है । यह माया के कनफुके गुरु है। ये गुरु की नकल है। जगत में बताने पुरते शोभा के काम के है। जगत में जैसे सुरज का प्रकाश और दिपक का प्रकाश है उसे प्रकाश ही कहते। दिपक के प्रकाश से सुरज के समान जगत नही सुझ सकता। घर के अंदर तक ही देख सकता। वैसे ही इन गुरु से होणकाल ही समझ सकता,सतस्वरुप नही समझ सकता। सतस्वरुप के समझ के लिये दिपक के सामने सुरज है,वैसा होणकाली गुरु के सामने जो सतस्वरुपी गुरु है वही धारण करना पड्ता ।।।८०।।

अे तो सकळ ऊजागर कुळका, ब्रम्ह भेद कुं जाणे ।।

सो पद सकळ सिष्ट कुं क्रता, तांकु ताण बखाणे ।।८१।।

जैसे कुलके समझवान मनुष्य होते हैं ऐसे यह मायाब्रम्ह कुल के ज्ञानी है। यह पितारुपी ब्रम्हके भेदको ही जानते है। पितारुपी ब्रम्ह यही सृष्टीका कर्ता है । ऐसा जगतको ताण–ताणकर बखाण करके बताते है। पितारुपी कर्ताके आगे का गुरुपद इनको मालूम नही रहता । ।।८०।।

से गुरू नहीं सुणो नर नारी, जे कुछ कारण राखे ।
नार पुर्ष न्यारा गुरू करणा, ऐसी दुर्मत भाखे ।।८२।।

सभी स्त्री–पुरुष सुणो। कुछ गुरु पती–पत्नीने एक गुरु करना नही ऐसा कहते। एक गुरु किया तो पती–पत्नी,पती–पत्नी नही रहते,भाई–बहन बन जाते ऐसे निचमती का कारण बोलते वह गुरु सतगुरु नही है ।।।८२।।

अे तो मधम गुरू जग मांही, माया का गुण लावे ।
ज्यूँ मर्जाद जक्त में बांध्या,कोई न छूटण पावे ।।८३।।

वे मध्यम गुरु है। वह सतस्वरुप पद को पहुँचे हुये गुरु नही है। इसकारण देह को देखकर कारण बताते है । वह जीव को देखकर कारण नही बोलते। जीव तो आदि से एक है,उस जीव में पती–पत्नी यह न्यारापन नही है । पती–पत्नी देह का न्यारापन है । इसलिये ऐसे यह देह के गुरु है,जीव के गुरु नही है । ऐसे मध्यम गुरुवोने जगत में झुठी मर्यादा बांधी परंतु जीवों को यह झुठा है यह समझता नही । इसलिये इन मर्यादा में सभी जगत रहता । इस मर्यादा को कोई भी त्यागना नही चाहता ।।।८३।।

मधम गुरू सबही जे जग में, जाँ म्रजादा बाँधी ।
एक ब्रम्ह बिचे कर दुबद्या, बेर दिष्ट कर सांधी ।।८४।।

जगत में सभी मध्यम गुरुवोंने यह मर्यादा बांधी और आदी से सभी जीव एक ब्रम्ह थे,उसमें देह की मर्यादा डालकर एक ही ब्रम्ह दो बताये । ऐसे जीवों में दुविधा खडी करके जीवों में बैर दृष्टी उत्पन्न की है ।।।८४।।

न्हाक्यो भ्रम झूट केबत को , ज्याँ बिच लेण न देणा ।
उलटा बेर बंधे हंस ऊर, जुग जुग दावा लेणा ।।८५।।

अमरलोक जाने के लिये जिसका कोई लेना–देना नही ऐसा इन गुरुवोंने जगत के लोगो में, जीवो में गुरु भाई,गुरु बहन का झुठा केबत डालकर भ्रम डाल दिया । इसकारण हंस का मैं भी ब्रम्ह हूँ और सभी जगत भी ब्रम्ह है यह देखना बंद हो गया । उससे हंस ने ब्रम्ह होकर भी जीवपना धारण कर लिया । जीवपना धारण करने से तेरी–मेरी में लग गये । जीव की आदी में आपस में तेरी–मेरी नही थी । सभी एक दुजे के मित्र थे । तेरी–मेरी के कारण सभी के दिल में एक दुजे के बैरी बन गये और बैरीयों के अनुसार आपस में कर्म करने लगे । ऐसे कर्म के दावे युग–युग तक जीव को भोगने पड रहे है । इन गुरुवों

के आसरे जीव अमरलोक तो नही गया परंतु इनके मध्यम ज्ञान से युग–युग तक काल के दु:ख भोग रहा है ।।।८५।।

मधम गुरू की अे सब बाँता, भ्रम द्रढावे आणी ।
गुण ओगण माया को देखे, ब्रम्ह न चिने प्राणी ।।८६।।

जीव में भ्रम दृढ करना यह मध्यम गुरु की बाते है । ये देहरुपी माया का गुण–अवगुण देखते । यह जीव अमर ब्रम्ह है,यह नही खोजते ।।।८६।।

देहे आकार कसब सो देखे, माया का गुण गावे ।
ब्रम्ह अखंड अपर बळ मांही, सो गुण सर्ब उठावे ।।८७।।

यह गुरु जीव के आकारी देह का किसब देखते । जीव को देह माया है,ऐसे माया के गुण का वर्णन करते। ब्रम्ह अखंड अमर है,अपरबल है उसके कारण माया का देह मिला है। यह हंस के ब्रम्ह का गुण उठा देते और माया का गुण थाप देते याने देह का गुण थाप देते। ।।८७।।

मधम गुरू की अे सब बाताँ, सुणज्यो सब नर नारी ।
ब्रम्ह छाड माया कुं पूजे, ब्हो सीर क्रिया धारी ।।८८।।

सभी स्त्री–पुरुष सुनो। यह मध्यम गुरु की बाता है। ये मध्यम गुरु सतस्वरुप ब्रम्ह को छोड्कर नश्वर माया को पुजते और इस नश्वर माया की सभी क्रियायें सिरपर धारण करते । ।।८८।।

इण की बुध अक्कल सो आई, आगे दोड न कोई ।
जिऊं बस नार कियो नर सेती, इऊं अे ग्यानी सोई ।। ८९।।

इनकी बुद्धी तथा अकल मायातक ही है । माया के परे सतस्वरुप ब्रम्ह की अकल नही है । जैसे कोई स्त्री–पुरुष को वश कर लेती । वह स्त्री के वश हुवावा पुरुष स्त्रीके अकल के आगे नही दौड सकता । इसीप्रकार ये मध्यम गुरु माया के सुख–दु:ख तक सिमीत हो गये। इसलिये उन्हें माया के परे का सतस्वरुप ब्रम्ह सुख समझता नही ।।।८९।।

ब्रम्ह रूप उजळ गुरू कहिये, से सब भ्रम उडावे ।
कारण मेर तोड म्रजाद ब्रम्ह देश पर लावे ।।९०।।

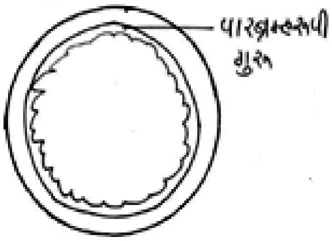

ब्रम्हज्ञान जाननेवाला गुरु उज्ज्वल गुरु है । वे गुरु पारब्रम्हरुपी है । वे गुरु ऐसे मध्यम गुरुने बांधी हुयी मायावी मेरमर्यादा तोड देते है और हंस को होणकाल ब्रम्ह देश के ज्ञानी की समझ देते और हंस की समझ बुद्धी होनकाल ब्रम्हदेश पर लाते ।।।९०।।

क्रणी सकळ भ्रम माया का, सो नहीं माने कोई ।
केबत सकळ झूठ कुळ करणी, से मरजाद बणाई ।।९१।।

सभी प्रकार की करणीयाँ सभी प्रकार के मायावी भ्रम जैसे पती–पत्नी ने एक गुरु करना

नही ऐसे सभी भ्रम,केबत तथा ब्रम्हा,विष्णू,महादेव,शक्तीकी करणीयाँ और ब्रम्हा,विष्णू, महादेव,शक्तीने बनाई हुयी मर्यादा मानते नही। यह सभी बाते माया समझते, झुठी समझते ।।।९१।।

अेकी ब्रम्ह सकळ में देखे, माया गुण नहीं माने ।
उत्तम गुरू सेही जग केहे, पाप न पुन्न न जाने ।।९२।।

ये उत्तम गुरु सभी में ब्रम्ह देखते। यह किसीका भी माया गुण नही देखते। इन्हें सब जगत उत्तम गुरु कहता। ऐसे उत्तम गुरु त्रिगुणी माया को नही मानते,इसलिये शुभ कर्म और अशुभ कर्म नही मानते। इसकारण पाप-पुण्य को नही मानते ।।।९२।।

बेटी नार बेहन सो चेली, ना मांको गुण जाणे ।
सबही त्याग भावे सो बरतो, सब में ब्रम्ह पिछाणे ।।९३।।

यह उत्तम गुरु बेटी,पत्नी,बहन तथा चेली और माँ इन सभी को देहसे नही देखते । मेरे सरीखे सभी ब्रम्ह है,ऐसा पहचानते। इसकारण बेटी,पत्नी,बहन,चेली तथा माँ के साथ ब्रम्ह को कर्म नही लगते। मैं भी ब्रम्ह हुँ और ये सभी ब्रम्ह है,इस भाव से इन सभी के साथ देह से बर्ताव करते ।।।९३।।

उत्तम गुरू तिके सुण कहिये, भ्रम उडावे सारा ।
पाँचु भोग आत्मा भाडो, ब्रम्ह नहीं डूबन हारा ।।९४।।

यह ब्रम्हज्ञानी मैं ब्रम्ह हुँ,मैं देह नही हुँ । समयवश मैं देह में आया हुँ,देह को पाँच आत्मा है । यह पाँच आत्मा देह से पाँच सुख चाहते है। मुझे इस देह में रहना है,तो देह जो चाहता वह पुराना चाहीये। जैसे कोई किसी के घर में रहने जाता,वह घर का उपयोग करता। घर उपयोग में लाता इसलिये रहनेवाले घर का भाडा देता । इसप्रकार देह यह मेरा घर है । उसको पाँच सुख चाहिये तो भाडे समान वह मैने देना चाहिये। मैं तो ब्रम्ह हूँ, मुझे कोई कर्म लगते ही नही । इसकारण मैंने पाँचो आत्मा के देह को सुख दिये तो भी मैं कर्मो के दु:खों में डुबुंगा यह कोई कारण नही ऐसा ब्रम्हज्ञानी समझते ।।।९४।।

ओतो आप भ्रम में भुलर, क्रमा के बस होवे ।
भ्रम ग्यान सुण गेहे करमां कुं, उलटो उन कुं रोवे ।।९५।।

ब्रम्हज्ञानी ऐसा समझते की जीव यह ब्रम्ह है,यह ब्रम्ह भ्रम में पड्कर मैं ब्रम्ह हुँ यह भुल गया और कर्मो के वश हो गया और ब्रम्हज्ञान भुलकर भ्रम ज्ञान धारण कर लिया और कर्म मुझे काल के दु:ख भोगवायेगा ऐसा चिंतीत हो गया ।।।९५।।

नहीं तो क्या क्रम कर सक्के, जे आपो ओ जाणे
ओ तो ब्रम्ह अग्न की झाळा , क्हा गेहे कचरो ताणे ।।९६।।

यह ब्रम्हज्ञानी समझते की यह जीव मैं ब्रम्ह हुँ,ऐसा समझता तो कर्म बिचारा इस ब्रम्ह का क्या कर सकता । यह ब्रम्ह तो अग्नीज्वाला के समान है । आग के आगे कचरा क्या कर

सकता । जीव ने भ्रम ज्ञान धारण किया और कर्मो के वश हो गया । ब्रम्ह अग्नी के समान है यह नही समझता । अगर ब्रम्ह अग्नी के समान है यह समझता था तो यह ब्रम्ह जीव बन के कर्मो के वश होता ही नही था ।।।९६।।

ओ तो बचन रूप सुण होई, क्हो कुण गहे बिच्चारो ।
सातुँ भाँत भोग कर निकसे, कंही नहीं अटकण हारो ।।९७।।

ब्रम्हज्ञानी समझते है की यह ब्रम्ह माया के समान स्थुल नही है,यह बचनस्वरुप है । जैसे बचन बोलने के बाद देह के समान बचन पकड नही सकते,इसीप्रकार ब्रम्ह को कर्म पकड नही सकते । यह ब्रम्ह भाँती-भाँती के सभी प्रकारके भोग लेकर निकल गया तो भी उसे उन कर्मो में से कोई भी कर्म अटका नही सकता ।।।९७।।

निजर दोड भिष्टा पर पडगी, फिर इम्रत पर जाई ।
तिल भर बोझ बास नही वाँ कुं , इंऊं ब्रम्ह हे क्रम माई ।। ९८।।

जैसे किसी मनुष्य की नजर विष्टा पर पड गई व नजर वहाँ निकलकर अमृत पर चली गई तो उस नजर पे तील भर भी बोजा नही होता,विष्टा की तील भर भी बास नही लगी । इसप्रकार ब्रम्ह को कर्म नही लगते ।।।९८।।

ईया कुं क्रम न लागे कोई, ज्यूं पर अंग न भिजे ।
ओतो उलट गहे क्रमा कुं, सोच करे कर छिजे ।।९९।।

जैसे आड पंछी पानीमें लगातर डुबकीयाँ लगाता परंतु उस आड पंछीका परसे लेकर तन भिगता नही,वैसे ही ब्रम्ह को कर्म लगते नही । यह जीव ब्रम्ह होकर भी भ्रम में पड्कर कर्मो को पकड्ता और कर्म के प्रती सोंचकर क्षीण होते रहता ।।।९९।।

क्रम बिचारा क्या कर सक्के, जे बस्तर सम होई ।
ज्युं धन माल हवेली घोडा, नर पकडया कँहु तोई ।।१००।।

जैसे मनुष्य शरीर पर वस्त्र पहनता वैसे कर्म ब्रम्ह पे रहते। शरीर पर कपडे पहने इसलिये वह शरीर पे दिखते। अगर हम नही पहनते थे तो वह शरीर पर नही दिखते थे। वह कपडे शरीर पर उनके बल से नही आते थे। जैसे मनुष्य के पास धन माल,हवेली,घोडे आदी है । यह धन माल,हवेली,घोडे आदी को मनुष्य ने पकडा इनको उस मनुष्य ने छोड दिया तो यह धन माल, हवेली,घोडे मनुष्य को पकडेंगे क्या?इसीप्रकार ब्रम्ह ने कर्म को पकडा है । ब्रम्ह अगर कर्म को त्याग देता है तो यह कर्म ब्रम्ह को पकड्ते नही ।।।१००।।

छाडर चलें डार नर इनकुं, जब कुण पकडे आई ।
यूं सब ध्रम क्रम सों माया, जे समझे ब्रम्ह भाई ।।१०१।।

जैसे धन,माल,हवेली,घोडे इसे कोई छोड्कर गया तो इनमें से छोड्नेवालेको कोई पकड्ता नही। इसीप्रकार सभी धर्म और कर्म माया इस ब्रम्हने पकड रखी है । अगर ब्रम्ह यह छोड देता तो यह कर्म,धर्म और माया ब्रम्ह को कभी पकड्गी नही ।।।१०१।।

क्हे सुखराम करम को काँई, जे अपणे बस सारा
सतगुरू बिना छूट नही सक्के, मुरख जीव बिचारा ||१०२||

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है की ब्रम्हज्ञानी समजते की जीव भ्रम के कारण मुरख हो गया है। सभी कर्म जीव के वश है,फिर भी जीव भ्रम के कारण कर्म के वश हो गया है। यह भ्रम पारब्रम्ह जाननेवाले सतगुरु के सिवा छुट नही सकते ।||१०२||

ज्युं आधीन भ्रम सुण कोई, पाखंड के बस हुवा ।
इऊं आधीन क्रम से हंसो, भेद न जाणे जुवा ||१०३||

यह जीव भ्रम के आधीन होने के कारण ऐसे पाखंडी समझ के वश हो गया। इस पाखंडी समझ के कारण कर्म हंस के वश है यह भेद नही जाणता ।||१०३||

सतगुरू मिले तबे सुध आवे, क्हा क्रम अटके मोई ।
जे सब चीज जीभ भछन खाणे कीं, चाय बराबर होई ||१०४||

ब्रम्ह समझनेवाले सतगुरु मिलने पर यह पाखंड समझ खत्म होगी और कर्म ब्रम्ह को पकड नही सकता। इसलिये मुझे कर्म क्या अटकायेंगे यह सच्ची समझ आयेगी । जैसे जीभ अनेक पदार्थ भक्षण करती परंतु भक्षण किया हुवा एक भी पदार्थ जीभ को चीपका हुवा नही रहता। इन सभी पदार्थो से जीभ निराली रहती। इसीप्रकार ब्रम्ह सभी कर्म करते परंतु जैसे खाये हुये पदार्थो से जीभ न्यारी रहती वैसा जीवब्रम्ह सभी कर्मो से न्यारा रहता। ऐसा ज्ञान सतगुरु से समझने पर ब्रम्ह को कर्म लगते यह झुठे भ्रम खतम हो जायेंगे । ||१०४||

पवन बास लेत सब सारी, कछु नही छोडे भाई ।
क्हो वां चीज कोण सी छोडर, गहे पवन कहुँ माई || १०५ ||

श्वास सभी सुंगधीयाँ और दुर्गंधीयाँ सहज लेता। एक भी सुगंध तथा दुर्गंध नही छोड्ता। अब तुम सोचो वह कौन सी सुगंध पकड्कर रखता तथा कौन सी दुर्गंध छोड देता। इसीप्रकार ब्रम्ह नीच और उंच कर्म करता परंतु इसके साथ एक भी कर्म नही रहता । ||१०५||

यूं सब क्रम हंस से न्यारा, जे सोझी सुध पावे ।
मन मांगे सोई करो जक्त मे, आडो कोई न आवे ||१०६||

इसीप्रकार हंस सभी कर्मोसे न्यारा है । यह ज्ञान पारब्रम्ह सतगुरु से मिलने पर ही साची समझ आती है । इसीप्रकार जीव को कोई कर्म लगते नही । इसकारण मन माँगे वह जगत के सभी निच कर्म रहो या उंच कर्म रहो ये सभी करो । इस ब्रम्ह को भुगवाने के लिये कोई भी कर्म आडा नही आता है ।||१०६||

अेसो भेद उत्तम गुरू पायाँ, मिले हंस के ताँही ।
पूर्ण ब्रम्ह लग सो पहुचे आगे की गम नाँई ||१०७||

ऐसी समझ उत्तम गुरु मिलने पर हंस को आती । ऐसे ज्ञान पानेवाले ब्रम्हज्ञानी पुर्णब्रम्ह तक पहुँचते है । उसके आगे सतस्वरुप सुख में कभी नही पहुँचते ।।।१०७।।

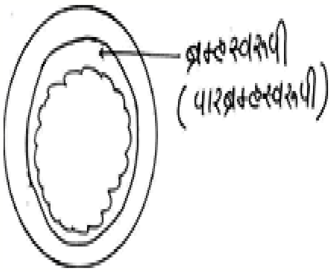

उत्तम गुरू जक्त मे अेसा,ब्रम्ह स्वरूपी जाणो ।
जिण प्रताप ब्रम्ह हुवे हंसा,ऊद बुद कळा पिछाणो ।।१०८।।

ऐसे उत्तम गुरु जो जगत में है,उन्हे पारब्रम्हस्वरुपी जानो । इनके प्रताप से हंस माया से निकलकर ब्रम्ह बनता । ऐसे गुरु के पास ब्रम्ह बनने की अद्‌भुत कला है,यह पहचानो ।।।१०८।।

म्हा प्रळे लग रहे पद माही, पिछे सब यहाँ आवे, ।
निर्भे मोख नही इण गुरू से, जे निर्गुण पद जावे ।।१०९।।

ऐसे ब्रम्हज्ञानी महाप्रलय तक निर्गुण ब्रम्हपद में रहते है । महाप्रलय के पश्चात फिर से सृष्टी की रचना होती तब यह हंस फिर से सृष्टी में आते और सृष्टी के सुख–दु:ख भोगते । वह काल के मुख से बाहर नही निकलते । इसकारण ऐसे उत्तम गुरु से निर्भय मोक्ष नही होता । सदा काल से छुटना नही होता तथा सदा के लिये महासुख में जाना नही होता ।।।१०९।।

के सुखराम सतगुरू सम्रथ, सता स्वरूपी होई ।
निर्भे मोख हंस सो पावे, से गुरू कहुं अब तोई ।।११०।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराजने अभी तक मध्यम तथा उत्तम गुरु का वर्णन बताया । अब सत्तास्वरुपी समर्थ सतगुरु कैसे रहते उनका वर्णन बता रहे है । जिस गुरु से हंस निर्भय मोक्ष पाता उस गुरु का वर्णन अब बता रहे है ।।।११०।।

ओर गुरू सब कहे उपायाँ, कर क्रणी जग मांही ।
सतगुरू म्हेर सता घट जागे, क्रणी कुछ भर नाही ।। १११।।

यह मध्यम गुरु शिष्यों को होणकाल के करणीयाँ के उपाय बताते । यह सतस्वरुपी सत्ता करणीयों से प्रगट होती नही । इसलिये सतगुरु सत्ता प्रगट होती नही । इसलिये सतगुरु सत्ता प्रगट करने के लिये सिर्फ सतगुरु की मेहेर चाहिये रहती,माया की एक भी करणी करने की जरुरत नही रहती ।।।१११।।

राव रंक क्रमी अर धर्मी, सरणे आयाँ सारा ।
सता सकळ घट जागे तनमे , उलटर चडे बिचारा ।।११२।।

राजा हो या रंक हो,उंच धर्म का रहो या निच धर्म का रहो,सतगुरु के शरण आने पर सभी घट में सत्ता जागृत होती और शिष्य का हंस घट में बंकनाल से उलटकर दसवेव्दार के गढपर चढता ।।।११२।।

सतगुरू दया सोई सब कर्णी , भजन भाव सब सारा ।
साझन जोग तपसो क्रिया, द्रसण हेत बिचारा ।।११३।।

सतगुरु की दया में माया की सभी करणीयाँ भजन और भाव सभी आ जाता । सभी साधन,सभी योग,सभी तपस्या तथा सभी क्रिया कर्म सतगुरु के दर्शन में तथा सतगुरु से प्रिती करने में आ जाता ।।।११३।।

हंसे बस नहीं कुछ काई, जोग रीत बिध होवे ।
उलटर पीठ फाड चले जे, दसवे द्वार जाय खोवे ।।११४।।

सतगुरुके सत्ता वश हुये हंससे योग,तप,क्रिया आदी मायावी विधीयाँ होती नही । यह सतगुरु की सत्ता हंस को मुख के आगे करती और पीठ मे बंकनाल के रास्ते से उलटकर पीठ के २१ मणी छेदन करती और दसवेद्वार खोलती ।।।११४।।

कर्म न धर्म न नही लागे कोई, सब हाजर हुवे आई ।
म्हा निच सुंई नीच क्रम हे, सेई सब उधरे भाई ।।११५।।

ऐसे संत को होणकाल के कोई भी कर्म,धर्म नही लगते । सभी कर्म–धर्म संत को सुख देने के लिये हाजीर रहते । संत के हाथसे कर्म होने पर संत ने किये हुये कर्मो का उद्धार होता । इसलिये महानीच से नीच कर्म और महानिच से निच धर्म संत के हाथ से होवे इस चाहणा में रहते ।।।११५।।

सत्त लोक आणंद पद पावे, निर्भे वे हँस होई ।
म्हा प्रळा उत्पत हुवो केती, उठेसों डिगे न कोई ।।११६।।

वह हंस सतलोक आनंदपद जाकर निर्भय बन जाते । महाप्रलय और उत्पत्ती कितने बार भी हुई तो भी वे हंस अमरलोक के सुख में स्थिर रहते । वह होणकाल में काल के दु:ख में आते नही ।।।११६।।

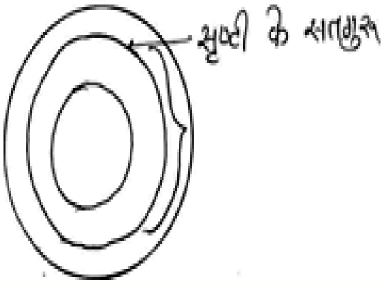

सतगुरू सकळ सिष्ट का गुरू हे, भेद बिना नहीं जाणे ।
इम्रत जडी सजीवन जग मे, खिण नर कोइन आणे।।११७।।

सत्तास्वरुपी सतगुरु ही सब सृष्टीके गुरु है । यह जगत को,ज्ञानी, ध्यानी को भेद मालूम न होने के कारण सतगुरु को जाणते नही । अमर करनेवाली संजीवन जडी जगत में रहती है परंतु उसे कसकर खोज के घर कोई नही लाता । इसीप्रकार अमर करा देनेवाले सतगुरु जगत में रहते परंतु कोई कसकर खोज के उसके शरणा नही जाता ।।।११७।।

घास काट सबही घर आणे ,अष्ट धात कूं खोदे ।
चिंत्रामण कुँ कोइन चिने, ना कस कर नर सोधे ।।११८।।

घास काटकर सभी घरपर लाते । यहाँ तक की अष्ट धातू को भी खोद के घर लाते परंतु संजीवनी जडी तथा चिंतामणी को कोई पहचानता नही । इसलिये कसकर खोजना भी नही । इसप्रकार सभी दु:खों की चिंता हरण करनेवालो और सभी सुख प्रदान करनेवाले सतगुरु होणकाल में रहते हुये भी ऐसे सतगुरु को पहचानता नही । इसकारण ऐसे सतगुरु

होणकालमें होकर भी खोजता नही ।।।११८।।

सोध्या ज्याँ रतन नही पावे, नर इण जग के मांही ।
जे कहुँ सेज मिले नर सेती, तो ओ माने नाही ।।११९।।

जैसे जगत के लोगों ने कुछ जगह रत्न खोजा परंतु वहाँ रत्न नही थे । इसलिये उन्हे रत्न मिले नही और जहाँ सहज में रत्न मिलते ऐसे जगत का विश्वास आता नही । इसलिये वहाँ रत्न होगे यह मानता नही । इसीप्रकार होणकाल के ज्ञानी,ध्यानी,योगी,तपस्वी में सतगुरु सत्ता खोजी परंतु वहाँ सतगुरु सत्ता नही थी,इसलिये खोजनेवाले को सत्तारुपी रत्न मिला नही । जहाँ सतगुरु सत्ता प्रगट है और उनके शरणे गये की वह सत्ता हंस के घट में सहज प्रगट हो जाती । ऐसे संतपर जगत को विश्वास बैठता नही । इसकारण सच्चे सत्ताधारी जगत में होकर भी ऐसे सतगुरु को मानते नही ।।।११९।।

किंऊं उण चीज सुणी येहे सोभा, लिदी कदे न कोई ।
केसे प्रख पले ओ बांधे, केण चीन गुण दोई ।।१२०।।

संजीवण जडी,चिंत्रामण,रत्न इन वस्तुं की पहले शोभा सुनी थी परंतु किसी ने भी उसे लिया या दिया ऐसा कभी देखा नही । इसकारण प्रत्यक्ष पारख समझ नही । प्रत्यक्ष परख के सिवा इन वस्तुओं को पहले सुने हुये शब्दों से परखना और उसके गुण देखना यह किसी को आता नही । इसकारण असली संजीवणी जडी,चिंतामण,रत्न मिले तो भी कोई पल्ले बांधता नही । इन वस्तु के गुण शब्दों में बतानेवाले से बराबर बताया जाता नही । फिर सुननेवाला बतानेवाले के बताएँ जैसा बराबर समझना नही । इसप्रकार बतानेवाले के गुण बताने में और सुननेवाले के सुनने में दोनों में बहुत अंतर पड जाता । इसलिये वह वस्तु पारख करके लेते आती नही । इसीप्रकार सत्ताधारी सतगुरु की संतो के मुख से शोभा सुनी परंतू असल में सतगुरु शिष्य में सत्ता प्रगट करा देते वक्त किसीने देखा नही । जिन संतो ने सतगुरु की शब्दों में पारख बताई उन्हें भी सतगुरु कैसे रहते यह पुरा मालूम नही रहता । इसकारण सतगुरु बतानेवाला सतगुरु के पारख के गुण बताने में फरक कर देता और पारख सिखनेवाला पारख कैसे करना यह गुण सही तरह से समज नही सकता । इसलिये सुननेवाला भी समझने में अंतर कर देता । इसकारण सत्ताधारी सतगुरु जगत में होते हुये भी जगत ऐसे सतगुरु की पारख नही कर सकता । ऐसे सतगुरु की पारख नही होती । इसलिये उनका शरणा धारण नही करता ।१२०।

बाताँ गल्ला सुणी जग माही, तामे भेळ अपारा ।
खंड बंड इधकी कहुँ ओछी, किऊँ कर गहे बिचारा ।।१२१।।

जगत में अपार मिश्रण के साथ सतगुरु के गुण की बाता,गप्पा साधुओं से सुणी । साधुवोंने इधर-उधर की जोड के सतगुरु के गुण को कम-जादा करके जगत को समझाया। जगत को सतगुरु के सही गुण नही समझे इससे जीव सतगुरु को धारण नही

कर पाया |||१२१||

मिलियां भ्रम खडो हुवे मांही, वो वाँ बातां कुं ले जोवे ।
जे कहुं सुणी मांहे कम इधकी, तो मन खुसी न होवे ||१२२||

शिष्य को अस्सल सतगुरु हकीकत में मिल जाते । शिष्यने साधुवों से सतगुरु के परिक्षा कि कुछ निराली ही बाता सुणी रहती । इसकारण यह सतगुरु अस्सल सत्ताधारी है या झुठे ही सत्ताधारी है ऐसा बता रहे है यह शिष्य में भ्रम खडा हो जाता । इसकारण ऐसे सत्ताधारी सतगुरुको धारण करनेमें मन खुष नही रहता । मनमें खुषी नही रहती । इसलिये सत्ताधारी सतगुरु मिलकर भी शिष्य धारण नही करता |||१२२||

चिज सकळ की सोभा जग मे, कम जाफा सुण होई ।
जाको सुणो अरथ ओ कहिये, भेद बताऊं तोई ||१२३||

शब्दों में सभी चिजों का वर्णन करते वक्त कम-जादा होते ही रहता । जिसका भेद घडे हुये बातोंसे समझता हुँ |||१२३||

मेहमा सुणर करे जे सोभा, घट बध व्हेत बावे ।
कोई चिज की सुण लो जग में, इऊँ सब पुराण कवावे ||१२४||

वस्तु की महिमा सुणकर जो शोभा करते उस वर्णन में वस्तु के गुण कम-जादा ही बताये जाते यह पुराण सरीखे वस्तु में भी हुवा है । पुराण असल में कहना चाहता तथा जगतके पंडित उसे क्या समझने है । यह पुराण के दाखले पर से समझ में आयेगा |||१२४||

चार सिलोक सांभळे ब्रम्हा, चारु बेद बणाया ।
सो मत सुणो ब्यास नारद सुँ, पुराण अठारूँई गाया ||१२५||

ब्रम्हा ने चार श्लोक सुने और उन चार श्लोकों के आधारपर चार बडे-बडे वेद बनाये । यह वेदों का ज्ञान नारद ने धारण किया और वेद व्यास को सुणाया । वेद व्यासने,नारद ने सुणाये हुये ज्ञान के आधार से जितना समझ में आया,उसका आधार पकड्कर बडे-बडे अठ्ठाराह पुराण बताये |||१२५||

साधु रिख बोलीया जग में, ब्यास बुध ले भाई ।
कथा किरतन डिंगळ पिंगळ, बक्या ब्होत जग माई ||१२६||

वेद व्यास से ज्ञान सुनकर साधु,ऋषीयोंने अपने व्यास के बुद्धी अनुसार जगत को समझाया। व्यास के बुद्धी की समझवाले साधु और ऋषी जाने के पश्चात अनेक साधुओने पुराणों में कथा किर्तन शुरु रखा। कुछ साधुओं ने पुराण के कथा किर्तन में इधर-उधर की डिंगल-पिंगल जोड्कर नाना भाँती से पुराण जगत को बताया |||१२६||

इतना कहो किणे ब्रम्ह देख्यो, सुण सुण सोभा किवी ।
जेसी मती बुध थी अेसी, सो सो खेंचर लिवी ||१२७||

अब मुझे इतना बताओ की जिन-जिन साधुवों ने पुराण को सुणसुण कर और अपने-

अपने समझ से पुराण को समझा। इन में से किसने(सतस्वरुप ब्रम्ह)देखा ?साधुवों की जैसे-जैसे मती और बुद्धी थी वैसे-वैसे सतस्वरुप को खींचकर समझा। असली सतस्वरुप की विधी समझ में आयी नही इसकारण इन साधुवों ने सतस्वरुप पाया नही ।।१२७।।

चार हरप जिण बोल्या पेली, सो ब्रम्ह रीत पिछाणो ।
पीछे सकळ सुण सुण गायो, जे कुछ भेद न जाणे ।।१२८।।

प्रथम चार श्लोक जिसने बोला उसी के पास ब्रम्ह याने सतस्वरुप पहचानने की असली रित थी। पिछे ब्रम्हा से लेकर नारद,वेदव्यास,साधु,ऋषी,झिंल-पिंगल कथा करनेवाले एक को भी सतस्वरुप ब्रम्ह की रित मिली नही कारण ब्रम्हा से लेकर नारद,वेदव्यास, साधु,ऋषीयों ने सभी ने ब्रम्ह याने सतस्वरुप को सुन-सुनकर गाया । असल में वह ब्रम्ह याने सतस्वरुप कैसे है इसका भेद इन में से किसी ने भी नही जाना ।।१२८।।

मुळ बस्त ज्याँ देखी जग मे, वे केबत ना माने ।
यूं ब्रम्ह जीकाँ देखियो संत, बेद सें झूट बखाणे ।।१२९।।

मुल ब्रम्ह याने सतस्वरुप वस्तू जिसने देखी वह सुणसुणकर कहे गये ऐसे चार वेद और पुराण नही मानते । इसकारण जिस संतने ब्रम्ह याने सतस्वरुप देखा है । वह वेद,पुराण, शास्त्र को झुठा बोलते कारण वेद,शास्त्र,पुराण सुनने से सतस्वरुप ब्रम्ह आयुष्यभर भी पच गये तो भी नही मिलेगा ।।१२९।।

भोळो सकळ क्हेण गेहे राखे, मूळ मिल्याई नही चावे ।
जीऊं लड़का गेवर कर खेले, देख्याँ सब भग जावे ।।१३०।।

भोले लोगों ने ऐसे ब्रम्हा,नारद,वेदव्यास,साधु,ऋषीयों ने कहे हुये ज्ञान को पकड रखा है । ये भोले लोग इस कहे हुये ज्ञान के मुल ब्रम्ह याने सतस्वरुप के ब्रम्हज्ञानी के मिलने पर भी उससे सतस्वरुप ब्रम्हज्ञान धारण करना नही चाहते । जैसे बालक मिट्‌टी,प्लॉस्टीक, लकडी से बनाये हुये हाथी के साथ खेलता है परंतु असली हाथी सामने आया तो वह उसे देखकर घर में भाग जाता है,देखने को बुलाने पर भी बाहर नही आते ।।१३०।।

अेसी मत सकळ पिंडताँ की, बाळक रूपी होई ।
केबत पकड़ करी याँ गाढ़ी, मुळ न चिने कोई ।।१३१।।

इसीप्रकार पंडीत सतस्वरुप ब्रम्ह को वेदों में पुराणों मे खोजता परंतु असली सतस्वरुपी ब्रम्हज्ञानी मिला तो उससे ब्रम्हज्ञान धारण नही करता। जैसे बालक असली हाथी को छोड देते वैसा यह पंडीत असली सतस्वरुप ब्रम्हज्ञानी को मिलने पर भी त्याग देता। इन पंडीतो ने ज्ञानी,ध्यानीयों ने ब्रम्हा,वेदव्यासके कथे हुये ज्ञान को अपने बुद्धी में गाढा पकड के रखा है। इसकारण जो मुल सतस्वरुप ब्रम्ह का ज्ञान है वह वे समझ नही सकते ।।१३१।।

मुळ बस्त जिण जन ने पाई,तिन ने अे नहीं माने ।

ज्यूं लड़का गेवर सुं भागे, यूं अे निंद्या ठाणे ।।१३२।।

मुल सतस्वरुप ब्रम्ह जिसने–जिसने पाया ऐसे संत को यह पंडीत,ज्ञानी,ध्यानी जगत मानता नही। जैसे बालक असली हाथी को देखकर भाग जाता वैसे असली सतस्वरुपी ब्रम्हज्ञानी संत न समझनेके कारण ऐसे संतो को त्याग देता और ऐसे संतो की महिमा करने के जगह झुठी निंदा करता ।।१३२।।

ब्रम्ह लग इनकी बुध नाही, जे मोकुँ क्या जाणे ।
पूर्ण ब्रम्ह आद ही तिल भर, मो कुँ नाहे पिछाणे ।।१३३।।

ऐसे पंडीत,ज्ञानी,ध्यानीयों की बुद्धी पारब्रम्ह को भी समझने की इनकी बुध्दी नही है तो वह मुझे क्या पहचानेंगे। पुर्ण ब्रम्ह याने पारब्रम्ह स्वयं यह भी मुझे तिलभर भी नही जानता तो यह माया के पंडीत,ज्ञानी,ध्यानी मुझे क्या जानेंगे?।।१३३।।

जे आ बात सुणे नर कोई, मान सके नहीं भाई ।
तो दिष्टांग बताऊँ जग में, प्रगट कहुं म्हे लाई ।।१३४।।

मेरी बात पंडीत,ज्ञानी,ध्यानी इन किसीने सुनी तो भी मान नही सकते । इसपर जगत का एक प्रगट दृष्टांत बताता हुँ ।।१३४।।

जिऊं माँ बाप जग मे दोई, सूत बित्त नार कहावे ।
ज्हाँ बेराग ऊपणो ताँ कुं, सोई कुळ तज बन जावे ।। १३५।।

जैसे संसार में किसी को माँ और बाप है तथा साथ में पत्नी,पुत्र तथा धन भरपुर है । किसीकारण उसे वैराग्य उत्पन्न होता तो वह कुल तथा कुल के माँ,बाप,पत्नी,पुत्र,धन सभी को छोड्कर बन में चले जाता है। इससे उस वैरागी की संसार में की उपत,खपत तथा गृहस्थीपन मीट जाता ।।।१३५।।

यूँ सत स्वरूप चीनिया माया , ब्रम्ह पणो सब जावे ।
ओपत खपत काहे कुं होती, जीव ब्रम्ह क्यूँ कवावे ।।१३६।।

इसीप्रकार जीवने सतस्वरुप वैराग्य प्राप्त करने से उसके जीव का जीव ब्रम्हपणा सभी जाता। जीव को सतस्वरुप ब्रम्ह के समान विज्ञान वैराग्य प्रकृती आती । जीव अपने माया–बम्ह,माता–पिता को त्याग देता। उसमें सतस्वरुप ब्रम्हपणा आने कारण उसकी होणकाल की उपत–खपत,जीवपणा यह सब खतम हो जाता। जैसे जगत में माँ–बाप,पुत्र के वैराग्य गुण को नही समझते। इसीप्रकार संतके गुण को माया माता तथा पिता ब्रम्ह नही समझते। अगर पुत्र के सतस्वरुप वैराग्य स्थिती को जानते थे,तो होणकाल के उत्पत,खपत होती ही नही थी और जीव तथा ब्रम्ह ऐसे अलग–अलग प्रकृती से हंस रहते नही थे । सतस्वरुपी वैरागी प्रकृती के महासुखी रहते थे । जैसे जगत के माता–पिता वेदी वैराग्य के सुख में संसार से जादा सुख समझते थे तो कोई माता–पिता अपने पुत्र को संसार के उपज खपत में नही लगाते थे। वैरागी का शिष्य बनाके वैरागी बनाते थे ।

इसीप्रकार होणकाल के माता–पिता माया ब्रम्ह को सतस्वरुप के वैराग्य विज्ञान के सुख होणकाल के कुल से बहोत जादा है। ऐसे समझता था। तो माया ब्रम्ह माता–पिता हंस को त्रिगुणी माया जीव या होणकाल पारब्रम्ह का ब्रम्ह होने ही नही देते थे। सिर्फ सतस्वरुपी विग्यानी वैरागी बनने देते थे। इसीप्रकार माया माता ब्रम्ह पिता ये मेरे सतस्वरुप विज्ञान वैराग्यको तीलमात्र भी नही जाणते । यह सभी जगत के लोग समझो। ऐसा आदी सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते ।।।१३६।।

अेक ओर दिष्टांग बताऊँ, ब्रम्ह घटो घट होई ।
बेद पाठ पढियाँ बिन राजा, रंक न बोले कोई ।।१३७।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज ग्यानी,ध्यानी,पंडीतो को एक दृष्टांग देकर कह रहे है की,ब्रम्ह तो हर घट में है । ब्रम्ह राजा के घट में है । ब्रम्ह रंक के घट मे है । ब्रम्हज्ञानी के घट में है । राजा को तथा रंक को संसार के सभी उद्यम करते आते परंतु वेद का ग्यान नही आता । वेद का ज्ञान ज्ञानी को ही आता ।।।१३७।।

अकल वान बळवान सुर्वो, बादस्या लग भाई ।
बेद पढयाँ बिन बोल न सके, इऊं कुद्रत हे कांई ।।१३८।।

अकलवान,बलवान,शुरवीर तथा सब खंड्का बादशाह भी रहा तो भी वेद सिखे बगेर उस बादशाह को वेद का ज्ञान नही आता। इसीप्रकार यह कुद्रतकला है। चतुर से चतुर ज्ञानी, ध्यानी,पंडीत,ब्रम्हा,नारद,वेदव्यास,ऋषी,मुनी,साधू सबमें ही ब्रम्ह है और वही ब्रम्ह सतगुरु में है। जैसे चतुर बादशाह को वेद ज्ञान प्राप्त नही होता वैसे ही इन चतुर ज्ञानी,ध्यानी, पंड्ति,ब्रम्हा,नारद,वेदव्यास को कुद्रत कला प्राप्त नही होती। उसके लिए सत्ताधारी सतगुरु से सतज्ञान धारन करना पड्ता ।।।१३८।।

अेक ओर दिष्टांग बताऊँ, पिंडत बेद सरावे ।
मूढ ने सुणत बिग्यान ऊपणो, वो वें घर छोड न जावे ।।१३९।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज जगत के विज्ञानी का दृष्टांत जगत के नर–नारीयो को बताते है। जैसे चतूर राईट बंधु को विमान का विज्ञान उपजता था। उसीप्रकार का विग्यान एखादे मूर्ख मनुष्य को उपजता। वह मनुष्य उसी विज्ञान की पहले भारी सराहना करता परंतू उपजनेपर नही समझता। उलटा उस विज्ञान को भ्रम समझ के छोड देता। इसीप्रकार पंडीत ज्ञानी सतस्वरुप को सराहते परंतू सतस्वरुप मिलने पर भ्रम समझ के त्याग देते । ।।१३९।।

इऊँ ब्रम्ह सुणो संत कऊ जाणे, धार सक्के नहीं कोई ।
ज्यूँ बिग्यान समझकर सत बिन, पच पच मुवा न होई ।।१४०।।

इसीप्रकार जगत के ज्ञानी,ध्यानी,पंडीत इनमे से एखादा संत सतस्वरुपी विज्ञानी को जानता परंतू विज्ञान की सही समझ न होने के कारण उस सतस्वरुपी विज्ञान को त्याग

देता और अन्य माया के करणीयों में ब्रम्हज्ञान में पच-पचकर मर जाता ।।।१४०।।

अेक ओर दिष्टांग सुणाऊं, सुणो सकळ अर--------

|| इति अगाध बोध ग्रंथ अपूर्ण ||